लोक कथाओं में शाप–2

संकलन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Cover Title : Lok Kathaon Mein Shaap-2 (Curse in Folktales-2)
Cover Page picture : Cursing
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail : hindifolktales@gmail.com
Website : www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

सीरीज़ की भूमिका 5

लोक कथाओं में शाप–**2** 7

1 सुन्दरी और जानवर 9

2 सफेद बिल्ली 31

3 रैवन 49

4 मेंढक राजकुमार–**1** 63

5 मेंढक राजकुमार–**2** 70

6 बेकर का आलसी बेटा 79

7 तीन सुनहरे सन्तरे 85

8 चुहिया राजकुमारी 103

9 जादुई सूअर 119

10 सूरज के पूर्व में और चाँद के पश्चिम में 146

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक 2500 से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से 550 से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब 95 प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

लोक कथाओं में शाप–2

वरदान देना या इच्छाऐं पूरी करना, शाप देना या जादू डालना लगभग सभी समाजों के जीवन का एक मुख्य अंग है। कहीं लोग किसी भी चीज़ से खुश हो जाते हैं तो उसको वर दे देते हैं या उसकी कोई इच्छा पूरी कर देते हैं और अगर नाराज़ हो जाते हैं तो उसको शाप दे देते है या फिर उसके ऊपर जादू डाल देते हैं।

इससे पहले हमने दो पुस्तकें प्रकाशित की थीं – "इच्छाऐं इच्छाऐं इच्छाऐं" और "वरदानों का कमाल"[1] जिनमें से पहली पुस्तक में कुछ ऐसी लोक कथाऐं थीं जिनमें लोगों की इच्छाऐं पूरी की गयी थीं। वह बात अलग है कि उन्होंने फिर अपनी उन इच्छाओं को किस तरह इस्तेमाल किया। दूसरी पुस्तक में हमने दुनियाँ के देशों की कुछ ऐसी लोक कथाऐं दी थीं जिसमें वरदानों का कमाल दिखाया गया था। ये दोनों पुस्तकें तुम लोगों ने बहुत पसन्द कीं।

अब तुम्हारे हाथों में है यह पुस्तक जिसमें शापों या जादू डालने वालों ने हलचल मचायी हुई है। क्योंकि शाप देना और जादू डालना दोनों करीब करीब एक सी ही बात है इसलिये इन शाप वाली लोक कथाओं में जादू डालने वाली लोक कथाओं को भी शामिल कर लिया गया है। उन सबको जिन पर यह शाप या जादू डाला गया उस शाप या जादू की वजह से उन्हें कितनी मुश्किलें उठानी पड़ीं और फिर वे सब उन शापों से कैसे आजाद हुए यही इस पुस्तक की लोक कथाओं का विषय है।

इस विषय की भी तीन पुस्तकें पुस्तकें प्रकाशित की जा रही हैं – "लोक कथाओं में शाप–1" "लोक कथाओं में शाप–2" और "लोक कथाओं में शाप–3"। इसकी पहली पुस्तक में यूरोप के इटली देश की शाप और जादू डालने वाली लोक कथाऐं हैं। इसकी दूसरी पुस्तक में यूरोप के दूसरे देशों की शाप और जादू डालने वाली लोक कथाऐं हैं। और इसकी तीसरी पुस्तक में दुनियाँ के दूसरे देशों की शाप और जादू डालने वाली लोक कथाऐं हैं।

इन सब पुस्तकों में हम दुनियाँ की कुछ ऐसी लोक कथाऐं की प्रकाशित कर रहे हैं जिनमें लोगों ने दूसरों को जानवर बन जाने के शाप दिये हैं या फिर उनके ऊपर जानवर बन जाने का जादू डाल दिया है या फिर किसी और प्रकार का शाप दिया है। फिर दूसरे लोगों ने उनको उन शापों या जादुओं से उनको कैसे आजाद कराया है।

इसी तरह की एक पुस्तक हमने और प्रकाशित की थी "सोती हुई सुन्दरी जैसी कहानियाँ"[2]। सामान्य रूप से वे सब कहानियाँ भी शाप या जादू डालने जैसी ही हैं पर वे सब कहानियाँ इस पुस्तक में शामिल नहीं की गयी हैं क्योंकि उन सबमें सामान्यतया सब लड़कियाँ ही हैं और शाप या जादू के असर से वे सब केवल सो जाती हैं उनका रूप नहीं बदला जाता। फिर कोई राजकुमार या कोई आदमी आता है और उनको उठाता है इसलिये वे सब एक साथ एक ही पुस्तक में दी गयी हैं। पर इन कथाओं में सामान्यतया सब आदमी ही हैं। और अगर कोई लड़की है भी तो वह शाप की वजह से सोयी नहीं है बल्कि उसका रूप ही बदल गया है।

आओ तो लो पढ़ो शाप और जादू की ये बहुत सारी लोक कथाऐं – कुछ सुनी कुछ अनसुनी कुछ कही और कुछ अनकही। आशा है कि हमारे लोक कथाओं के दूसरे सग्रंहों की तरह तुम्हें यह संग्रह भी पसन्द आयेगा।

---

[1] "Ichchhayen Ichchayen Ichchayen", by Sushma Gupta in Hindi language
"Varadanon Ka Kamal", by Sushma Gupta in Hindi language

[2] "Sotee Huee Sundaree Jaisee Kahaniyan", by Sushma Gupta in Hindi language

1 सुन्दरी और जानवर[3]

शाप की यह लोक कथा यूरोप के फ्रांस देश की लोक कथाओं से ली गयी है। यह वहाँ की एक बहुत ही लोकप्रिय लोक कथा हैं और वहाँ के बच्चे इसे अपने बचपन में ही सुन लेते हैं। हो सकता है कि तुम लोगों ने भी वहाँ की यह लोक कथा अपने बचपन में कहीं पढ़ी या सुनी होगी।

इस कथा में एक राजकुमार को एक जंगली जानवर बनने का शाप मिलता है और वह तभी अपने राजकुमार के रूप में आ सकता है जब कोई लड़की उसको उसी रूप में प्यार कर के उससे शादी करने के लिये तैयार हो जाये। तो लो पढ़ो फ्रांस की यह सबसे ज़्यादा लोकप्रिय लोक कथा अब हिन्दी में।

एक बार की बात है कि फ्रांस में एक सौदागर रहता था। उसके तीन बेटियाँ थीं। वे सब एक बहुत ही अच्छे शहर में और एक बहुत ही अच्छे मकान में रहते थे।

वे सोने और चाँदी की थालियों में खाना खाते थे और उनकी पोशाकें दुनियाँ के सबसे बढ़िया कपड़े की बनी होतीं थीं जिनमें जवाहरात लगे रहते थे।

[3] Beauty and the Beast – a folktale of France, Europe. By Jeanne-Marie LePrince de Beaumont, published in 1756. Adapted from the Web Site : http://www.childstoryhour.com/story23.htm

उनमें से दो बड़ी लड़कियों के नाम थे मैरीगोल्ड और ड्रैसैलिन्डा[4]। ऐसा कोई दिन खाली नहीं जाता था जिस दिन वे दोनों लड़कियॉ कहीं किसी दावत पर न जाती हों। पर तीसरी लड़की सुन्दरी घर पर ही अपने पिता के साथ रहना पसन्द करती थी।

अब एक दिन ऐसा हुआ कि उन लोगों के बुरे दिन आ गये। सौदागर के जहाज जिनमें बहुत सारा कीमती सामान भरा हुआ था समुद्र में खेते हुए टूट गये और वह शहर का सबसे ज़्यादा अमीर आदमी होने की बजाय शहर का एक सबसे गरीब आदमी बन कर रह गया।

पर इस सब नुकसान के बाद अभी भी उनके पास गॉव में एक मकान बच गया था। सो शहर में जब उनका सब कुछ बिक गया तो वह सौदागर अपनी तीनों बेटियों को साथ ले कर वहॉ से गॉव चला आया।

मैरीगोल्ड और ड्रैसैलिन्डा दोनों इस बात से बहुत दुखी थीं कि उनका सब कुछ खो गया था। वे पहले बहुत अमीर थीं और लोग उनके साथ घूमने की इच्छा करते थे पर अब जबकि वे एक छोटे से गॉव के छोटे से मकान में रहती थीं वे अकेली पड़ गयी थीं।

पर सौदागर की तीसरी सबसे छोटी बेटी सुन्दरी हमेशा अपने दुखी पिता को खुश रखने के बारे में ही सोचती रहती थी। जबकि

[4] Marigold and Dresselinda – names of the two elder dauhters of the merchant

उसकी दोनों बड़ी बहिनें लकड़ी की कुर्सियों पर बैठी रहतीं और रोती रहतीं।

क्योंकि अब सौदागर कोई नौकर नहीं रख सकता था इसलिये अब सुन्दरी ही सारे घर का काम करती थी। वही घर में आग जलाती और सारे घर के लिये खाना बनाती। फिर बर्तन साफ करती और घर भर को खुश रखने की अपनी पूरी कोशिश करती। उन सबकी ज़िन्दगी इसी तरह चलने लगी।

दोनों बड़ी बेटियाँ घर में कोई काम नहीं करतीं सिवाय इसके कि वे अपनी हालत पर रोती रहतीं या फिर अपना मुँह सुजाये पड़ी रहतीं।

दोनों बहिनें अपनी सबसे छोटी बहिन को बहुत तंग करतीं क्योंकि उसके बारे में उनकी शिकायतें ही खत्म नहीं होतीं। वे घर में काम भी नहीं करती थीं और साथ में उसके हर काम में गलतियाँ भी निकालती रहतीं पर सुन्दरी अपने पिता की वजह से उनकी हर बात शान्ति से सह लेती।

इस तरह से एक साल बीत गया और एक दिन उस सौदागर के लिये एक चिट्ठी आयी। चिट्ठी पढ़ कर सौदागर अपनी बेटियों को ढूँढ रहा था ताकि वह उस चिट्ठी में लिखी हुई अच्छी खबर उनको सुना सके।

जैसे ही वे उसको मिल गयीं वह बोला — “बेटियों, मुझको लगता है कि अब हमारे अच्छे दिन वापस आ गये। आज ही मुझे

यह चिट्ठी मिली है कि हमारा एक जहाज़ जिसको हम यह सोच चुके थे कि वह खो गया है वह मिल गया है और वापस भी आ गया है।

और अगर ऐसा है तो अब हमको गरीबी में नहीं रहना पड़ेगा। अब हम लोग पहले की तरह से तो अमीर नहीं होंगे पर कम से कम आराम से रह पायेंगे।

सुन्दरी, जा बेटी मेरा यात्रा वाला शाल[5] ले आ। मैं अभी अपने जहाज़ को लेने के लिये जाता हूँ। अब तुम लोग मुझे यह बताओ कि मैं वहाँ से तुम लोगों के लिये क्या ले कर आऊँ?"

मैरीगोल्ड बिना किसी हिचक के तुरन्त ही बोली — "मेरे लिये सौ पौंड लाना।"

ड्रैसैलिन्डा बोली — "पिता जी, मेरे लिये एक सिल्क की पोशाक लाना।"

सुन्दरी ने अपने पिता को उसका यात्रा वाला शाल ओढ़ाया तो पिता ने उससे पूछा — "और बेटी मैं तुम्हारे लिये क्या ले कर आऊँ?"

सुन्दरी बोली — "मेरे लिये पिता जी एक गुलाब का फूल लाइयेगा।"

[5] Translated for the word "Cloak". See the pictute above. It may be long as it is shown here, or short – up to the waist

उसके पिता ने उसे प्यार से चूमा और गुड बाई कर के अपने काम पर चला गया। पिता के जाते ही मैरीगोल्ड ने सुन्दरी से कहा — “ओ बेवकूफ लड़की, क्या तू पिता जी को यह दिखाना चाहती है कि तू हमसे ज़्यादा पिता का ख्याल रखती है? क्या तुझको वाकई गुलाब चाहिये?”

सुन्दरी बोली — “हॉ बहिन मुझे वाकई गुलाब चाहिये। पर उसको मॉगने की वजह यह नहीं थी जो तुम सोच रही हो। मुझे लगा कि पिता जी को अपने जहाज की सुरक्षा देखने में काफी काम रहेगा सो बिना बाजार जाये ही वह मेरे लिये यह ला सकते हैं मैंने इसी लिये उनसे वह मॅगवाया।”

पर उसकी बहिनें उसकी इस बात पर उससे बहुत नाराज थीं। वे वहॉ से अपने कमरे में चलीं गयीं और जा कर अपनी उन चीज़ों के बारे में बात करने लगीं जो उनके पिता उनके लिये लाने वाले थे।

इस बीच वह सौदागर बड़ी उम्मीद से अपने प्लान बनाता हुआ शहर गया कि वह अपने पैसे का क्या करेगा जो उसे उस जहाज़ से मिलेगा। पर जब वह बन्दरगाह पर पहॅुचा तो उसको पता चला कि वहॉ तो कोई जहाज़ ही नहीं आया।

उसने सोचा लगता है किसी ने उसके साथ चाल खेली है। सो वह फिर से अपनी उसी हालत में रह गया था। वह बेचारा सारा

दिन केवल यह पता करने के लिये इधर उधर घूमता रहा कि जो चिट्ठी उसको मिली थी उस चिट्ठी में कोई सच्चाई थी या नहीं।

जब उसे वहाँ अपना खोया हुआ जहाज़ नहीं दिखायी दिया तो शाम को बड़े दुखी मन से वह अपने घर की तरफ चल पड़ा। वह बहुत थका हुआ था और परेशान था। जबसे उसने घर छोड़ा था उसने खाना भी नहीं खाया था सो वह भूखा भी बहुत था।

घर आते आते उसको काफी अँधेरा हो गया और वह एक जंगल के पास आ निकला जिसको उसे घर पहुँचने से पहले पार करना होता था।

तभी उसको जंगल में एक रोशनी चमकती हुई दिखायी दी तो उसने उस रात अपने घर जाने का विचार छोड़ दिया और निश्चय किया कि वह वहीं जंगल में उसी रोशनी की तरफ जायेगा और वहीं खाना और रात को रुकने की जगह माँगेगा।

वह सोच रहा था कि शायद वहाँ किसी लकड़हारे की कोई झोंपड़ी होगी पर वह जैसे जैसे उस रोशनी के पास पहुँचा तो उसको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह रोशनी तो एक बड़े शानदार महल की एक खिड़की से आ रही थी।

उसने उस महल का दरवाजा खटखटाया पर किसी ने कोई जवाब नहीं दिया। उस समय उसको बहुत तेज़ भूख लग रही थी और बाहर बहुत ठंडा था सो वह हिम्मत कर के उस महल के अन्दर

चला गया और संगमरमर की सीढ़ियाँ चढ़ कर एक बड़े से कमरे में पहुँच गया।

रास्ते में भी उसको कोई नहीं मिला। उस बड़े कमरे में आग जल रही थी सो वह उसकी गर्मी लेने के लिये उस आग के पास बैठ गया। जब वह थोड़ा गर्म हो गया तो घर के मालिक को ढूँढने निकला।

पर उसको बहुत दूर नहीं जाना पड़ा। पहला दरवाजा खोलते ही उसको एक और कमरा मिला जिसमें मेज पर एक आदमी के लिये खाना लगा था। उस खाने को देखते ही उसकी भूख और बढ़ गयी।

क्योंकि घर का मालिक अभी भी उसको नहीं मिला था सो जितनी हिम्मत से वह घर में घुसा था उतनी ही हिम्मत से वह खाना खाने भी बैठ गया।

खाना खाने के बाद उसने फिर से घर के मालिक से मिलने का विचार किया तो उसने महल का दूसरा दरवाजा खोला। वहाँ उस कमरे में एक बहुत सुन्दर बिस्तर लगा हुआ था।

पेट भरने के बाद और थके होने की वजह से उसको बहुत ज़ोर की नींद आ रही थी। पलंग देख कर उसने सोचा "यह तो किसी परी का काम दिखायी देता है सो मुझे अब और आगे इस घर के मालिक को ढूँढने की जरूरत नहीं है। अभी तो मैं सो जाता हूँ कल सुबह देखूँगा।"

सो वह उस पलंग पर लेट गया और तुरन्त ही सो गया।

जब वह उठा तो सुबह हो चुकी थी। एकदम से वह अपने आपको इतने मुलायम बिस्तर में पा कर बहुत आश्चर्यचकित था पर फिर उसको सब याद आ गया कि कल रात क्या हुआ था।

उसने सोचा "अब मुझे चलना चाहिये पर अच्छा होता अगर मैं इस घर के मालिक को उसके इस अच्छे खाने और सोने की सुविधा देने के लिये धन्यवाद देता जाता।

पर जब वह बिस्तर से बाहर निकला तो उसको लगा कि इस घर के मालिक को उसको खाने और सोने की जगह देने के अलावा उसको किसी और चीज़ के लिये भी धन्यवाद देना था।

उसके पलंग के पास रखी एक कुर्सी पर एक नया सूट रखा था जिस पर उसका नाम लिखा हुआ था और उस सूट की हर जेब में दस दस सोने के सिक्के रखे हुए थे।

जब उसने वह नीला और सुनहरी सूट पहना जिसकी जेब में वे सोने के सिक्के खनखना रहे थे तो वह तो एक दूसरा ही आदमी लगने लगा।

कपड़े पहन कर जब वह नीचे गया तो उसी छोटे कमरे में जिसमें उसने पिछली रात खाना खाया था सुबह का नाश्ता उसका इन्तजार कर रहा था। उसने पेट भर कर नाश्ता किया और फिर सोचा कि उस महल के बागीचे में थोड़ा घूम लिया जाये।

वह संगमरमर की सीढ़ियाँ उतर कर नीचे गया और जब बागीचे में पहुँचा तो उसने देखा कि वह बागीचा तो गुलाब के फूलों से भरा पड़ा है – लाल और सफेद, गुलाबी और पीले, नारंगी और मैरून। उनको देख कर सौदागर को सुन्दरी की माँग का ध्यान आ गया।

उसने सोचा — “बेचारी मेरी प्यारी दोनों बड़ी बेटियाँ, वे कितनी नाउम्मीद होंगीं जब वे यह सुनेंगी कि मेरा जहाज़ ही नहीं आया। पर सुन्दरी को वह जरूर मिल जायेगा जो उसने माँगा था।”

और उसने हाथ बढ़ा कर अपने सबसे पास वाला एक गुलाब तोड़ लिया। जैसे ही गुलाब की डंडी उसके हाथ में टूटी वह डर कर पीछे हट गया क्योंकि तभी उसने गुस्से से भरी एक गुर्राहट सुनी।

दूसरे ही पल एक भयानक जानवर उसके ऊपर कूद पड़ा। वह दुनियाँ के किसी भी आदमी से ज़्यादा लम्बा था और किसी भी जानवर से ज़्यादा बदसूरत था। वह जानवर उस सौदागर को दुनियाँ की किसी भी चीज़ से कहीं ज़्यादा भयानक लग रहा था।

जानवर की आवाज में दहाड़ने के बाद वह उससे आदमी की आवाज में बोला — “ओ नीच, क्या मैंने तुमको खाना नहीं खिलाया? क्या मैंने तुमको रात को सोने के लिये जगह नहीं दी? क्या मैंने तुमको पहनने के लिये कपड़े नहीं दिये? क्या मैंने तुमको खर्चे के लिये पैसे नहीं दिये?

और तुम मेरे इन ऐहसानों का बदला मेरी उन चीज़ों को चुरा कर दे रहे हो जिनकी मैं इतनी परवाह करता हूँ?”

सौदागर बेचारा रुऑसा हो कर बोला — “दया करो, मुझ पर दया करो। इस गुलाब को चुराने का मेरा कोई मतलब नहीं था।”

वह जानवर बोला — “तो फिर क्या मतलब था तुम्हारा? नहीं नहीं, तुमको तो अब मरना ही है।”

बेचारा सौदागर घुटनों के बल बैठ गया और सोचने लगा कि वह क्या कह कर उस बेरहम जानवर का दिल पिघलाये।

आखिर वह बोला — “जनाब, मैंने यह फूल केवल इसलिये तोड़ा था क्योंकि मेरी सबसे छोटी बेटी ने मुझसे एक गुलाब का फूल लाने के लिये कहा था। मैं तो यह सोच भी नहीं सकता था कि इतना सब देने के बाद आप केवल एक गुलाब के फूल के ऊपर मेरे ऊपर इतना गुस्सा होंगे।”

जानवर ने पूछा — “अच्छा तो तुम अपनी इस बेटी के बारे में बताओ। क्या वह एक अच्छी लड़की है?”

सौदागर खुश हो कर बोला — “जनाब वह मेरी सबसे अच्छी और सबसे प्यारी बेटी है।”

और यह कह कर वह यह सोचते हुए रो पड़ा कि अब तो वह मर ही जायेगा। उसकी प्यारी बेटी सुन्दरी इस दुनियाँ में अकेली रह जायेगी। कौन उससे दया का बर्ताव करेगा।

वह रोते रोते बोला — "ओह, मेरे बाद मेरे बच्चे कैसे रहेंगे?"

वह जानवर फिर बोला — "पर यह तो तुमको मेरा गुलाब चुराने से पहले सोचना चाहिये था। हॉ अगर तुम्हारी कोई एक बेटी तुमको इतना प्यार करती हो जो तुम्हारे बिना रहने की बजाय तकलीफ सहना ज़्यादा पसन्द करे तो तुम्हारी जान बच सकती है।

तुम अपने घर वापस जाओ और अपनी सब बेटियों को जा कर बताओ कि तुम्हारे साथ क्या हुआ। पर तुम मुझसे वायदा करो कि आज से अगले तीन महीनों के अन्दर अन्दर तुम या तुम्हारी एक बेटी यहॉ मेरे महल के दरवाजे पर जरूर होगी।"

उस बेचारे आदमी के पास अब इसके अलावा और कोई चारा नहीं रह गया था कि वह इस बात का वायदा करे कि ऐसा ही होगा। उसने सोचा कि कम से कम उसकी ज़िन्दगी तीन महीने तो बढ़ी।

जानवर फिर बोला — "मैं तुमको इस तरह खाली हाथ नहीं जाने दूँगा।" कह कर वह अपने महल की तरफ चल दिया और वह आदमी उसके पीछे पीछे चल दिया।

वह जानवर उस आदमी को एक बड़े कमरे में ले गया। वहॉ उस कमरे के फर्श पर चॉदी की एक बहुत बड़ी आलमारी रखी थी। जानवर ने वह आलमारी खोल कर उसको दिखाते हुए कहा — "इसमें से जो चीज़ भी तुमको अच्छी लगे और जितना तुमको चाहिये तुम उतना खजाना ले लो।"

सौदागर से जितना लिया जा सका उसमें से उसने उतना खजाना ले लिया। जानवर ने उस आलमारी का दरवाजा बन्द करते हुए कहा — "अब तुम अपने घर जा सकते हो।"

सो वह सौदागर भारी दिल से अपने घर के लिये चला। जैसे ही वह महल के दरवाजे से बाहर निकला तो वह जानवर बोला — "पर तुम सुन्दरी का यह गुलाब तो भूल ही गये।"

और उसी समय उसने अपने बागीचे के सबसे सुन्दर गुलाब के फूलों का एक बहुत बड़ा गुच्छा सौदागर के हाथों में थमा दिया।

वह सौदागर जब घर पहुँचा तो सुन्दरी उससे मिलने के लिये बाहर दौड़ी आयी तो उसने सब कुछ सुन्दरी को पकड़ा दिया और बोला — "ले मेरी बच्ची और आनन्द कर क्योंकि यह सब तेरे गरीब पिता की ज़िन्दगी के बदले में हैं।"

यह कह कर वह बैठ गया और फिर अपनी सारी कहानी अपनी तीनों बेटियों को सुनायी। उसकी कहानी सुन कर दोनों बड़ी बेटियाँ रो पड़ी। वे सुन्दरी को ही इस सबके लिये जिम्मेदार ठहरा रही थीं।

वे सुन्दरी से बोलीं — "अगर तुम्हारी ऐसी माँग न होती तो हमारे पिता जी अपने नये कपड़ों में सोने के सिक्के ले कर महल से ऐसे ही चले आते। पर तुम्हारी गुलाब की माँग ने उनको गुलाब तोड़ने पर मजबूर किया और उसी वजह से यह सब हुआ। उसी ने उनकी जान खतरे में डाली।"

सुन्दरी बोली — "नहीं नहीं, पिता जी अपनी ज़िन्दगी नहीं देंगे। मैं ही अपनी ज़िन्दगी दूँगी क्योंकि यह सब मेरी ही वजह से हुआ है।

तीन महीने पूरे होने पर मैं उस जानवर के पास जाऊँगी और फिर अगर वह चाहे तो मुझे मारे या और कुछ करे पर मैं उसको अपने पिता जी को कोई नुकसान नहीं पहुँचाने दे सकती।"

सौदागर ने उसे बहुत समझाया कि वह उस जानवर के पास न जाये पर सुन्दरी ने तो यह सोच लिया था सो वह तीन महीने खत्म होने पर उस जानवर के महल की तरफ चल दी। उसका पिता उसको रास्ता दिखाने के लिये उसके साथ गया।

पहले की तरह ही उसने जंगल में रोशनी जलती हुई देखी, पहले ही की तरह बेकार ही उसने उस महल का दरवाजा खटखटाया, बड़े कमरे में जा कर अपने आपको थोड़ा गर्म किया और उसके बाद दूसरे छोटे कमरे में दो लोगों के लिये खाने की मेज लगी देखी।

यह सब देख कर सुन्दरी बोली — "पिता जी, आप बिल्कुल चिन्ता मत कीजिये। मुझे नहीं लगता कि वह जानवर मुझे मारना चाहता है। क्योंकि अगर ऐसा होता तो वह मुझे इतना अच्छा खाना न खिलाता।"

पर अगली सुबह जब वह जानवर कमरे में आया तो सुन्दरी तो उसको देख कर डर के मारे अपने पिता से जा कर चिपक गयी।

जानवर बहुत ही नम्र आवाज में बोला — “तुमको मुझसे डरने की जरूरत नहीं है। पर तुम मुझको इतना बता दो कि क्या तुम अपनी मर्जी से यहाँ आयी हो?”

काँपते हुए सुन्दरी बोली — “हाँ।”

जानवर बोला — “तुम बहुत अच्छी लड़की हो।”

फिर वह उसके पिता की तरफ घूम कर उससे बोला — “तुम अगर चाहो तो आज की रात यहाँ सो सकते हो। पर सुबह होते ही तुम अपने घर चले जाना और अपनी बेटी को यहाँ छोड़ जाना।”

अगली सुबह पिता बेचारा अपनी बेटी को छोड़ कर ज़ोर ज़ोर से रोता हुआ अपने घर चला गया। सुन्दरी भी अपने आपको सँभालती हुई न डरने की कोशिश करती रही।

वह महल में इधर उधर घूमती रही। उसने इतना अच्छा महल पहले कभी नहीं देखा था।

उस महल में जो सबसे अच्छे कमरे थे उनके दरवाजों के ऊपर लिखा था “सुन्दरी का कमरा”।

उन कमरों में से किसी में बहुत सारी किताबें रखी थीं तो किसी में संगीत के साज़ रखे थे, किसी में कैनेरी चिड़ियाँ थीं तो किसी में फारस की बिल्लियाँ थीं और वह सब कुछ वहाँ था जो किसी के लिये अच्छा समय गुजारने के लिये हो सकता था।

यह सब देख कर उसके मुँह से निकला — “ओह, काश यहाँ मैं अपने पिता को देख सकती तो मुझे कितना अच्छा लगता।”

जब वह यह बोल रही थी तो इत्तफाक से वह एक बहुत बड़े शीशे के सामने खड़ी थी। तुरन्त ही उस शीशे में उसने अपने पिता की परछाईं देखी जो घोड़े पर सवार उसी महल की तरफ चला आ रहा था।

उस रात जब सुन्दरी शाम को खाना खाने बैठी तो वह जानवर वहॉ आया और उससे पूछा — “क्या मैं तुम्हारे साथ खाना खा सकता हॅू?”

सुन्दरी बोली — “अगर तुमको अच्छा लगे तो।”

सो वह जानवर भी उसके साथ खाना खाने बैठ गया।

जब वह खाना खा चुका तो बोला — “सुन्दरी, मैं तो बहुत बदसूरत हॅू और बहुत बेवकूफ भी। पर मैं तुमको बहुत प्यार करता हॅू। क्या तुम मुझसे शादी करोगी?”

सुन्दरी बड़ी नर्मी से बोली — “नहीं जानवर।”

जानवर ने एक लम्बी सॉस भरी और वहॉ से उठ कर चला गया।

हर रात ऐसा ही होता रहा। जानवर सुन्दरी के साथ खाना खाता। खाना खा कर वह उससे पूछता कि क्या वह उससे शादी करेगी। वह हमेशा उसको नर्मी से मना कर देती “नहीं जानवर” और वह वहॉ से उठ कर चला जाता।

इस सारे समय में कोई छिपे छिपे उसके कामों के लिये खड़ा रहता जैसे वह कोई रानी हो। उसको कोई गवैया या बाजे बजाने

वाले तो दिखायी नहीं देते थे पर उसके कानों में संगीत की आवाज सुनायी पड़ती रहती।

पर इन सब चीज़ों में वह जादुई शीशा सबसे अच्छा था क्योंकि उसमें वह सब कुछ देख सकती थी जो वह चाहती थी।

जैसे जैसे दिन गुजरते गये उसने महसूस किया कि उसकी छोटी से छोटी इच्छा वहाँ उसके कहने से पहले ही पूरी हो जाती थी।

इस सबसे उसे ऐसा लगने लगा कि यह जानवर उसको बहुत चाहता है। और उसको इस बात का दुख होने लगा कि हर रात जब भी वह उससे अपनी शादी बात करता और वह ना कर देती तो वह कितना दुखी हो कर वहाँ से जाता था।

एक दिन उसने उस शीशे में देखा कि उसके पिता बीमार थे तो उस रात उसने उस जानवर से कहा — "ओ जानवर, तुम हमेशा से मेरे लिये बहुत अच्छे रहे हो। क्या तुम मुझे मेरे पिता को देखने जाने दोगे? वह बहुत बीमार हैं और यह सोचते हैं कि शायद मैं मर चुकी हूँ।

मेहरबानी कर के मुझे उनको देखने जाने दो। वह मुझको देख कर खुश हो जायेंगे। मैं तुमसे वायदा करती हूँ कि उनसे मिल कर मैं सचमुच में जल्दी ही वापस आ जाऊँगी।"

जानवर बड़ी नमी से बोला — "ठीक है। तुम जाओ पर देखो एक हफ्ते से ज़्यादा नहीं रहना क्योंकि अगर तुम इससे ज़्यादा रहीं

तो मैं तुम्हारे बिना दुख से मर जाऊँगा। क्योंकि मैं तुमको बहुत प्यार करता हूँ।"

सुन्दरी बोली — "पर मैं यहाँ से जाऊँ कैसे मुझको तो रास्ता ही नहीं मालूम।"

तब जानवर ने उसको एक अँगूठी दी और कहा कि जब वह सोने जाये तो उस अँगूठी को अपनी उँगली में पहन ले। उसमें लगा लाल वह अपनी हथेली की तरफ कर ले।

इससे अगली सुबह जब वह उठेगी तो अपने पिता के घर में ही उठेगी। जब वह वापस आना चाहेगी तो वह फिर उसी तरह करेगी तो वह यहाँ आ जायेगी। उसने ऐसा ही किया। अगले दिन सुबह वह अपने पिता के घर में थी।

अपनी बेटी को अपने पास देख कर उसका पिता बहुत खुश हुआ पर उसकी बहिनों को उसका आना अच्छा नहीं लगा।

और जब उन्होंने यह सुना कि वह जानवर उसके साथ कितनी अच्छी तरह से बर्ताव करता है तब तो उनको उसके अच्छे भाग्य से बहुत ही जलन ही होने लगी कि वह तो कितने अच्छे महल में रहती है जबकि वे एक छोटे से मकान में रहती हैं।

मैरीगोल्ड बोली — "काश हम वहाँ चले जाते तो हम भी ऐसे ही रहते। सुन्दरी को हमेशा ही सबसे अच्छी चीज़ मिल जाती है।"

ड्रैसैलिन्डा सुन्दरी से बोली — "अच्छा ज़रा अपने महल के बारे में भी तो कुछ बताओ। तुम वहाँ क्या करती हो? कैसे बिताती हो अपना समय?"

सो सुन्दरी ने यह सोचते हुए कि यह सब उनको सुनने में अच्छा लगेगा अपनी सब बातें उनको बतायीं। और वह सब सुन सुन कर हर दिन उनकी जलन बढ़ती ही गयी।

आखिर ड्रैसैलिन्डा ने मैरीगोल्ड से कहा — "सुन्दरी ने उसको एक हफ्ते में वापस आने के लिये कहा है अगर हम उसको यह बात किसी तरह भुला दें तो वह जानवर उससे नाराज हो जायेगा और उसको मार देगा। फिर हम लोगों को मौका मिल सकता है।"

सुन्दरी को अगले दिन जानवर के पास वापस जाना था। सो अगले दिन सुन्दरी के वापस जाने से पहले उन्होंने सुन्दरी के शराब के गिलास में पौपी[6] का रस मिला दिया जिसने उसको इतना सुलाया कि वह पूरे दो दिन और दो रात सोती रही।

अपनी नींद के आखिरी समय में उसने एक सपना देखा और उस सपने में उसने उस जानवर को उसके महल के बागीचे में गुलाबों के बीच में मरा पड़ा देखा। वह बहुत ज़ोर से रोते हुए उठ गयी।

हालाँकि उसको यह पता नहीं चला कि जानवर को छोड़े हुए उसको एक हफ्ते के ऊपर दो दिन और हो गये हैं फिर भी उसने

[6] Poppy is a kind of flower. See its picture above. Its seeds are opium seeds.

अपनी अँगूठी का लाल अपनी हथेली की तरफ किया और सो गयी।

अगली सुबह जब वह उठी तो जानवर के महल में अपने बिस्तर पर थी। अब उसको यह तो नहीं मालूम था कि उस महल में उस जानवर के कमरे कहाँ हैं पर वह शाम के खाने तक का इन्तजार नहीं कर सकती थी।

उसको लगा कि उसको जानवर को अभी अभी देखना चाहिये। सो वह महल में उसका नाम पुकारते हुए इधर से उधर भागने लगी।

वह सारा बागीचा छान आयी पर उसका कहीं पता नहीं था। वह बोली — "ओह, अब मैं क्या करूँ मुझे तो वह कहीं मिल ही नहीं रहा। अब मैं फिर कभी खुश नहीं रह पाऊँगी।"

फिर उसको अपना सपना याद आया तो वह गुलाब के बागीचे में भागी गयी। वहाँ बड़े फव्वारे के पास वह बड़ा जानवर मरा पड़ा था। सुन्दरी तुरन्त ही उसके पास घुटनों के बल बैठ गयी।

वह रोते रोते बोली — "ओह प्यारे जानवर, क्या तुम वाकई मर गये हो? अगर ऐसा है तो मैं भी मर जाऊँगी। मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकती।"

लो यह सुन कर वह जानवर तो तुरन्त ही उठ कर बैठा हो गया और एक लम्बी सी साँस भर कर बोला — "सुन्दरी, क्या तुम मुझसे शादी करोगी?"

उसको ज़िन्दा देख कर तो सुन्दरी बहुत ही खुश हो गयी। वह बिना सोचे समझे तुरन्त बोली — "हॉ हॉ जानवर, मैं तुमसे शादी करूँगी क्योंकि मैं तुमसे बहुत प्यार करती हूँ।"

बस जैसे ही सुन्दरी ने यह कहा तो उस जानवर के खुरदरे बाल नीचे गिर पड़े और वहॉ जानवर के बदले में एक बहुत सुन्दर राजकुमार खड़ा हुआ था। उसने सफेद और रुपहला सूट पहना हुआ था जैसा कि लोग शादी के समय पहनते हैं।

वह सुन्दरी के पैरों के पास बैठ गया और ताली बजायी और बोला — "प्रिय सुन्दरी, तुम्हारे प्यार के अलावा मेरे ऊपर का यह जादू और कोई नहीं तोड़ सकता था।"

तब राजकुमार ने सुन्दरी को अपनी कहानी सुनायी — "एक नीच परी ने मुझे जानवर में बदल दिया था। और मुझे तब तक इसी हालत में रहना था जब तक कि कोई कुँआरी लड़की मुझसे मेरी बदसूरती और बेवकूफी के बावजूद इतना प्यार न करने लगे कि वह मुझसे शादी करने के लिये तैयार हो जाये।

अब मेरा वह जादू टूट गया है। चलो प्रिये, अब हम अपने महल चलते हैं।

अब तुमको वहॉ मेरे सारे नौकर चाकर दिखायी देंगे। वे पहले इसलिये दिखायी नहीं देते थे क्योंकि उस परी ने उन सबके ऊपर भी जादू डाल दिया था। वे अब तक तुमको दिखायी दिये बिना ही तुम्हारी सेवा करते रहते थे। अब तुम उनको देख पाओगी।"

वे अपने महल में लौट आये। अब महल में खूब धूमधाम हो रही थी। वहाँ बहुत सारे राज दरबारी इधर उधर घूम रहे थे जो बड़ी बेसब्री से राजकुमार और राजकुमारी का हाथ चूमने का इन्तजार कर रहे थे।

वहाँ बहुत सारे नौकर भी इधर इधर घूम रहे थे। राजकुमार ने एक नौकर के कान में कुछ फुसफुसाया जिसे सुन कर वह बाहर चला गया और सुन्दरी के पिता और बहिनों को ले कर वापस आ गया।

सुन्दरी की बहिनों को मूर्तियाँ बना दिया गया और उनको महल के दरवाजे को दोनों तरफ खड़ा कर दिया गय जब तक कि उनके दिल नर्म न हो जायें और वे अपनी बहिन के साथ किये गये बुरे बर्ताव पर पछताने न लगें।

सुन्दरी की राजकुमार के साथ शादी तो हो गयी पर सुन्दरी छिपे छिपे अपनी बहिनों की मूर्तियों को पास रोज जाती थी और रोती थी।

उसके आँसुओं ने उन पत्थर दिल मूर्तियों के दिलों को भी नर्म कर दिया और वे फिर से ज़िन्दा हो गयीं और फिर ज़िन्दगी भर हर एक के लिये नर्म दिल और दयावान रहीं।

सुन्दरी भी अपने जानवर के साथ जो अब जानवर नहीं था बल्कि एक सुन्दर राजकुमार था हँसी खुशी रही। मेरे ख्याल से वे

अभी भी उस देश में खुशी खुशी रह रहे होंगे जहॉ सपने सच हो जाते हैं।

2 सफेद बिल्ली[7]

शाप की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के फ्रांस देश की लोक कथाओं से ली है। यह वहाँ की एक बड़ी मशहूर और बहुत ही लोकप्रिय लोक कथा है।

इस कथा में एक जादूगरनी अपने शाप से एक राजकुमारी को बिल्ली बना देती है और वह बिल्ली फिर से राजकुमारी के रूप में तभी आ सकती है जब उसका प्रेमी या उससे शादी करने वाला उसका सिर और पूँछ काट कर आग में फेंक दे।

एक बार की बात है कि एक राजा था जिसके तीन बेटे थे। उसके तीनों बेटे बहुत सुन्दर और बहुत बहादुर थे।

एक बार उसने उड़ती उड़ती यह खबर सुनी कि वे तीनों उसके जीते जी उसका राज्य हथियाने की सोच रहे थे। वे उसके मरने का इन्तजार भी नहीं करना चाहते थे।

सो उसने यह निश्चय किया कि वह उनके दिमाग को किसी और तरफ लगा देगा और इस तरह से वे उसके राज्य लेने का विचार अपने मन से निकाल देंगे। वह इनसे ऐसे वायदे करेगा जिनको वह हमेशा ही पूरा नहीं कर पायेंगे।

---

[7] The White Cat – a popular children's story from France, Europe – Adapted from the Web Site : http://www.popularchildrenstories.com/stories/Kids-Story-The-White-Cat-0567.htm .
It is available at http://www.sacred-texts.com/neu/lfb/bl/blfb17.htm written by Andrew Lang in his "The Blue Fairy Book". Andrew Lang's many books are at http://www.sacred-texts.com/neu/lfb/index.htm]

यह सोच कर उसने अपने बेटों को बुलाया और उनसे कहा — "मेरे प्यारे बेटों, तुम लोगों मेरी बात सुनो। अब इस बड़ी उमर में मैं अब अपने राज्य की देखभाल उस तरह से नहीं कर सकता जैसे मैं पहले किया करता था। इसलिये मैं अब अपने काम से छुट्टी लेना चाहता हूं।

मैं चाहता हूं कि कोई होशियार और वफादार कुत्ता मैं अपने साथ के लिये रख लूं। मैं वायदा करता हूं कि तुम लोगों में से जो कोई भी मुझे सबसे ज़्यादा सुन्दर कुत्ता ला कर देगा वही मेरे राज्य का वारिस बनेगा।"

तीनों बेटे पिता की यह अजीब सी इच्छा सुन कर आश्चर्यचकित रह गये पर उनकी बात मान कर उनके लिये एक सुन्दर होशियार और वफादार कुत्ता ढूंढने चल दिये।

राजा ने उनको कुछ पैसे दिये, कुछ जवाहरात दिये और कहा कि वह उन सबको एक साल के बाद उसी समय उसी जगह उसी दिन उनके लाये हुए कुत्तों के साथ ही मिलेगा। बेटों ने पिता को विदा कहा और चले गये।

उन तीनों बेटों ने महल से थोड़ी ही दूर पहुंच कर अपना डेरा डाला और वे भी एक साल बाद उसी जगह मिलने का वायदा कर के अलग अलग राह पकड़ कर अपने अपने रास्ते चल दिये।

दो बड़े वाले भाइयों को तो रास्ते में काफी कठिनाइयां उठानी पड़ीं पर सबसे छोटा भाई बहुत ही दयालु, खुशमिजाज और चतुर

था। वह काफी लम्बा और सुन्दर भी था जैसा कि एक राजकुमार को होना चाहिये इसलिये उसको ज़्यादा परेशानी नहीं हुई।

शायद ही कोई दिन गया होगा जब उसने कोई कुत्ता नहीं खरीदा होगा – छोटा कुत्ता, बड़ा कुत्ता, खेल वाला कुत्ता, शिकारी कुत्ता आदि आदि।

पर राजकुमार क्योंकि इस सफर पर अकेला ही निकला था तो वह सैकड़ों कुत्तों की तो अकेले देखभाल नहीं कर सकता था इसलिये जब भी उसको कोई कुत्ता अच्छा लगता तो वह उसको खरीद तो लेता पर अगले दिन जब उसको कोई उससे भी अच्छा कुत्ता मिल जाता तो वह पहले वाले कुत्ते को जाने देता और उस दूसरे कुत्ते को अपने साथ रख लेता।

वह अपनी उसी सड़क पर चलता रहा चलता रहा कि एक रात बहुत ज़ोर का तूफान आ गया और बहुत ज़ोर की बारिश होने लगी।

वह रास्ते से भटक गया और चलते चलते एक किले के पास आ पहुँचा। उस किले में उसको कोई दिखायी नहीं दे रहा था सिवाय बारह हाथों के जिनमें मशाल लगी हुई थी।

दूसरे कुछ हाथों ने उसको पीछे से धक्का दिया और उसको उस किले के अन्दर ले चले।

वह एक कमरे में से दूसरे कमरे में चलता जा रहा था और सारे कमरे बहुत ही कीमती पत्थरों और तस्वीरों से सजे हुए थे। उसको

तो ऐसा लग रहा था जैसे कि वह किसी जादू के महल में आ गया हो।

साठ कमरों में से गुजरने के बाद उन हाथों ने उसे रोक दिया। वहाँ उसके गीले कपड़े उतार लिये गये और उसको बहुत कीमती और बढ़िया कपड़े पहना दिये गये।

फिर वे हाथ उसको खाने के कमरे में ले गये। वहाँ कोई काले कपड़ों से ढका करीब दो फुट लम्बा कोई आया जिसके चेहरे पर काले क्रेप का परदा पड़ा हुआ था। उसके पीछे पीछे बहुत सारे बिल्ले थे।

राजकुमार तो यह सब देख कर इतना चकित हो गया कि हिल भी न सका। इतने में वह दो फुट की छोटी शक्ल आगे बढ़ी और उसने अपने चेहरे से परदा हटाया।

राजकुमार ने देखा कि वह तो दुनियाँ की सबसे सुन्दर सफेद बिल्ली थी। उतनी सुन्दर बिल्ली तो उसने पहले कभी कहीं नहीं देखी थी।

वह बिल्ली राजकुमार से बोली — “ओ राजकुमार, तुम्हारा यहाँ स्वागत है। मैरी फैलीन[8] तुमको यहाँ देख कर आज बहुत खुश है।”

राजकुमार बोला — “मैडम बिल्ली, यह तो बहुत अच्छी बात है कि तुमने मेरा यहाँ इस तरह से स्वागत किया। बहुत बहुत

[8] Mary Feline – was the name of that cat

धन्यवाद। पर क्योंकि तुम बोल सकती हो और तुम्हारे पास इतना बड़ा किला है इसलिये तुम मुझको कोई मामूली बिल्ली तो लगती नहीं। बताओ तुम कौन हो।"

फिर वे दोनों कुछ देर तक बात करते रहे। उसके बाद खाना परोसा गया। खाने के बीच में राजकुमार उस बिल्ली को दुनियाँ भर की खबरें सुना सुना कर उसका दिल बहलाता रहा।

इस सब में उसको पता चल गया कि उस बिल्ली को दुनियाँ के बारे में काफी कुछ पता था कि दुनियाँ में क्या हो रहा था।

जब खाना खत्म हो गया तो बहुत सारे बिल्ले फैन्सी पोशाक पहन कर आये और उन्होंने एक बैले नाच[9] किया। नाच के बाद उस सफेद बिल्ली ने अपने मेहमान को विदा कहा और चली गयी।

जिन हाथों ने राजकुमार को यहाँ तक आने में सहायता की थी वे ही हाथ उसको उसके सोने वाले कमरे तक ले गये। अगली सुबह उन्हीं हाथों ने उसको उठाया और शिकारियों वाले बहुत सुन्दर कपड़े पहना कर बाहर आँगन में ले गये।

वहाँ जा कर राजकुमार ने देखा कि वह सुन्दर बिल्ली एक बन्दर पर बैठी हुई है और करीब पाँच सौ बिल्ले उसके आस पास खड़े हैं। वे सब शिकार का पीछा करने के लिये बिल्कुल तैयार हैं।

राजकुमार को यह देख कर बहुत अच्छा लगा। ऐसा आनन्द तो उसने पहले कभी महसूस नहीं किया था। वे सब शिकार के लिये

[9] Ballet dance – a kind of dance

चले गये। उसके सवार होने के लिये एक लकड़ी का घोड़ा था पर वह लकड़ी का घोड़ा भी बहुत तेज़ी से भाग रहा था।

दिन पर दिन ऐसे ही आनन्द में बीतते जा रहे थे और इस आनन्द के समय में वह राजकुमार अपना देश तो भूल ही गया था।

उसने सफेद बिल्ली से बार बार कहा — "जब भी मैं तुमको छोड़ कर जाऊँगा तब मैं कितना दुखी होऊँगा। मैं तुम्हें कितना प्यार करता हूँ इसलिये या तो तुम लड़की में बदल जाओ या फिर मुझे बिल्ला बना लो।"

जब आदमी को कोई तकलीफ या परेशानी नहीं होती तो एक साल बीतने में कितनी देर लगती है। राजकुमार का भी एक साल बहुत जल्दी ही पूरा होने को आया और उसको पता ही नहीं चला।

राजकुमार तो यह भी भूल गया था कि उसको वहाँ से कब जाना है पर उस बिल्ली को मालूम था कि राजकुमार को वहाँ से कब जाना है।

एक दिन बिल्ली ने राजकुमार से कहा — "राजकुमार, क्या तुमको मालूम है कि अपने पिता के लिये कुत्ता ढूँढने के लिये तुम्हारे पास अब केवल तीन दिन रह गये हैं? और तुम्हारे भाइयों को तो बहुत सुन्दर कुत्ते मिल भी गये होंगे।"

जब बिल्ली ने उसको इस बात की याद दिलायी तो उसको याद आया कि उसको तो कुत्ता ले कर अपने पिता के पास जाना है। यह सोच कर वह तो रो ही पड़ा।

रोते रोते वह बोला — "तुमने मेरे ऊपर कौन सा जादू डाला कि मैं इतना मुख्य काम भूल गया? अब मैं अपने पिता के लिये एक कुत्ते को और एक तेज़ दौड़ने वाले घोड़े को जो मुझे मेरे देश ले जा सके कहाँ ढूँढू?" और यह सब कह कर वह बहुत दुखी हो गया।

सफेद बिल्ली ने उसको दिलासा दी कि अपने देश जाने के लिये वह उसका लकड़ी का घोड़ा ले जा सकता है। वह उसको काफी जल्दी उसके देश ले जायेगा और एक कुत्ता वह खुद उसको दे देगी।

फिर उसने उसको एक ऐकौर्न[10] दे कर कहा — "तुम अपना कान इसके ऊपर रख कर सुनने की कोशिश करो तो तुम उस कुत्ते का भौंकना सुन पाओगे।"

राजकुमार ने उससे वह ऐकौर्न लिया और उस पर अपना कान लगा कर सुनने की कोशिश की तो उसमें तो उसको कुत्ते का भौंकना साफ सुनायी दे रहा था।

राजकुमारी बोली — "इस ऐकौर्न के अन्दर दुनियाँ का सबसे सुन्दर कुत्ता बन्द है पर ख्याल रखना कि तुम इसको तब तक नहीं तोड़ना जब तक तुम राजा के सामने न पहुँच जाओ।"

फिर उसने उसको एक बहुत ही बदसूरत सा कुत्ता दिया और राजा के पास जाने के लिये कहा।

[10] Acorn is a kind of fruit – of Oak tree. See its picture above.

राजकुमार ने वह ऐकौर्न लिया, वह बदसूरत कुत्ता लिया और उस लकड़ी के घोड़े पर सवार हो कर नियत समय पर अपने भाइयों के पास आ गया।

भाइयों ने जब अपने सबसे छोटे भाई के पास वह लकड़ी का घोड़ा और बदसूरत कुत्ता देखा तो उसकी बहुत हॅसी उड़ायी। वे सोचने लगे कि क्या उनका भाई उन चीज़ों से पिता का इनाम जीत पायेगा?

वहॉ से वे सब अपने पिता के पास आ गये। राजा ने देखा कि उसके दोनों बड़े बेटों के पास तो इतने सुन्दर, छोटे और कोमल कुत्ते थे कि उनको छूने में भी डर लगता था पर उसके छोटे बेटे के पास तो बहुत ही बदसूरत कुत्ता था जिसकी तरफ देखा भी नहीं जा रहा था।

राजा यह निश्चय ही नहीं कर पा रहा था कि राज्य किसको दिया जाये।

फिर उसके सबसे छोटे बेटे ने अपनी जेब से एक ऐकौर्न निकाला जो उसको बिल्ली ने दिया था। उसने उसे तोड़ा तो उसमें से तो एक इतना छोटा सा कुत्ता निकला जो एक ॲगूठी के अन्दर से उसके किनारों को बिना छुए ही निकल सकता था।

इसके अलावा वह कान्स्टानैट्स[11] भी बजा सकता था। उसके कान जमीन को छू रहे थे और वह एक सफेद साटिन की गद्दी पर बैठा था।

राजा तो उस कुत्ते को देख कर यही सोचने लगा कि वह उस कुत्ते में क्या कमी निकाले क्योंकि उस छोटे से जीव में कोई भी कमी निकालना बहुत मुश्किल था। उसको लगा कि दुनियाँ में उससे सुन्दर कुत्ता और कोई था ही नहीं।

खैर वह अपना राज्य तो अभी किसी को देना नहीं चाहता था सो उसने उन तीनों से कहा कि वे तीनों अपनी खोज में इतने ज़्यादा सफल रहे कि अब वह उनको धरती और समुद्र कहीं से भी एक ऐसे कपड़े की खोज में भेजना चाहता था जो एक बहुत ही छोटी सुई के छेद में से निकल सके।

इस काम के लिये उसने फिर से उन तीनों को एक साल का समय दिया और कहा कि वह उन सबको उसी समय उसी जगह उसी दिन एक साल के बाद उनके लाये हुए कपड़ों के साथ ही मिलेगा। बेटों ने पिता को विदा कहा और चले गये।

तीनों राजकुमार एक बार फिर से अपने सफर के लिये निकले। तीनों राजकुमार अपनी पुरानी जगह से फिर से उसी वायदे के साथ अपने अपने रास्तों पर चल दिये कि एक साल बाद वे तीनों वहीं आ कर मिलेंगे।

---

[11] Constanets is a kind of musical instrument. See its picture above

सबसे छोटे राजकुमार ने अपना लकड़ी का घोड़ा उठाया और सीधा सफेद बिल्ली के पास पहुँचा। सफेद बिल्ली तो उसको देख कर बहुत खुश हो गयी।

जब राजकुमार ने उसको बताया कि इस बार उसके पिता को क्या चाहिये था तो सफेद बिल्ली बोली कि वह बिल्कुल चिन्ता न करे और आराम से रहे। उसने कहा कि उसके महल में बहुत ही बढ़िया सूत कातने वाले मौजूद थे वे उसके लिये ऐसा कपड़ा जरूर बुन देंगे।

अब तक राजकुमार को यह विश्वास हो गया था कि यह सफेद बिल्ली कोई साधारण बिल्ली नहीं थी पर जब भी राजकुमार ने उससे अपनी कहानी सुनाने के लिये कहा तब तब उसने उसको टाल दिया। इस तरह से राजकुमार का दूसरा साल भी वहाँ आनन्द मनाते गुजर गया।

और फिर वह दिन भी आया जब उन तीनों राजकुमारों को अपने पिता को उनका मँगाया हुआ कपड़ा देना था।

जाने से एक दिन पहले राजकुमारी ने उसको एक अखरोट दिया और कहा — "देखो, इसमें दुनियाँ की सबसे बढ़िया मलमल बन्द है पर ध्यान रहे इसको भी तुम राजा के सामने ही तोड़ना।" और उसको विदा कहा।

इस बार दोनों बड़े राजकुमारों ने अपने तीसरे भाई का इन्तजार नहीं किया और राजा के सामने अपना कपड़ा ले कर आ गये।

उन दोनों भाइयों का लाया हुआ कपड़ा बहुत ही सुन्दर बारीक और हल्का था। हालाँकि वे कपड़े राजा की बड़ी सुई के छेद में से तो बड़े आराम से निकल रहे थे पर उसके पास जो छोटी सुई थी उसके छेद में से हो कर वे नहीं जा पा रहे थे।

इस बारे में अभी काफी कानाफूसी हो ही रही थी कि उन सबको मीठे संगीत की आवाज सुनायी पड़ी। सबसे छोटा राजकुमार रथ पर बैठा हुआ बहुत सारे नौकरों के साथ चला आ रहा था। यह सब उसको सफेद बिल्ली ने दिया था।

आ कर उसने पिता को प्रणाम किया, भाइयों से गले मिला और एक रत्नों से जड़ा बक्सा निकाला। उसमें से उसने एक अखरोट निकाला और उसको राजा के सामने ही तोड़ दिया।

उस अखरोट में से चैरी फल की एक गुठली निकली। गुठली को तोड़ने पर उसमें से एक और दाना निकला और उस दाने को छीलने पर उसमें से एक मक्का का दाना निकला।

राजकुमार को अबकी बार सफेद बिल्ली पर कुछ शक सा होने लगा था। पर फिर भी उसने उस मक्का के दाने को तोड़ा तो उसमें से बाजरे का एक दाना निकला और उस बाजरे के दाने में से

निकला इतना बढ़िया कपड़ा जो राजा के पास जो छोटी वाली सुई थी उसके छेद में से भी उसकी छह परतें निकल सकती थीं।

वह कपड़ा कम से कम चार सौ ऐल[12] लम्बा था। वह कपड़ा केवल इतना बारीक ही नहीं था बल्कि उस पर अनगिनत आदमियों और जगहों की पेन्टिंग भी बनी हुई थीं।

राजा ने एक लम्बी साँस भरी और अपने बच्चों से बोला — "इस बुढ़ापे में मुझे कुछ अच्छा नहीं लगता। तुम लोगों ने मेरी इच्छाओं को पूरा तो किया है पर मैं चाहता हूँ कि तुम लोग एक बार अपने आपको और साबित करो।

एक बार और एक साल तक सफर करो और साल के आखीर में मुझे जो कोई भी मुझे सबसे सुन्दर लड़की ला कर देगा वही उससे शादी करेगा और उसी को मैं अपना राज्य दे दूँगा।

मैं तुम लोगों से वायदा करता हूँ कि इस बार मैं इस इनाम को और आगे नहीं बढ़ाऊँगा।"

तीसरे राजकुमार को राजा की यह बात अच्छी नहीं लगी। उसका कुत्ता और उसका कपड़ा दोनों एक ही नहीं बल्कि दस दस राज्यों से भी ज़्यादा कीमती थे पर वह इस तरीके से बड़ा हुआ था कि वह अपने पिता की इच्छाओं के खिलाफ नहीं जा सकता था।

सो वह अपने रथ पर सवार हुआ, अपने नौकरों को साथ लिया और एक बार फिर से उस सफेद बिल्ली के किले में आ पहुँचा।

---

[12] 400 ells mean 400 X 45" = 18,000" = 500 yards. One ell is of 45".

सफेद बिल्ली ने आश्चर्य से उससे पूछा — "अरे, तुम फिर से बिना ताज पहने ही आ पहुँचे?"

राजकुमार बोला — "मैडम, तुम्हारी सब भेंटों ने मुझे वह ताज दे दिया होता पर मुझे लगता है कि राजा को उसे छोड़ते हुए कुछ ज़रा ज़्यादा ही तकलीफ हो रही है बजाय मेरी उस खुशी के जो मुझे उसे पहन कर होती। अब मेरे पिता जी को सबसे सुन्दर बहू चाहिये।"

बिल्ली बोली — "तुम चिन्ता न करो। तुमको ऐसे किसी भी काम को नहीं छोड़ना चाहिये जिससे तुमको वह ताज मिल सके। तुमको एक सुन्दर लड़की ले कर अपने पिता के पास जाना ही चाहिये।

कोई बात नहीं मैं तुम्हारे लिये एक ऐसी लड़की ढूँढूँगी जिससे तुमको वह ताज मिल सके। मैं तुम्हारे लिये दुनियाँ की सबसे सुन्दर लड़की ढूँढूँगी। तब तक तुम यहाँ आनन्द से रहो।"

इस बार भी अगर बिल्ली ने उसके जाने के समय का ध्यान न रखा होता तो राजकुमार अपने जाने का समय ही भूल गया होता।

जाने के दिन के पहले दिन की शाम को बिल्ली ने कहा मैं तुम्हारे लिये दुनियाँ की सबसे सुन्दर लड़की ले कर आऊँगी। अब वह समय आ गया है जब उस नीच परी का काम खत्म होगा।

उसने राजकुमार से कहा कि इस काम को पूरा करने के लिये उसको अपने मन को सख्त कर के उसका यानी बिल्ली का सिर और पूँछ काट कर आग में फेंकना पड़ेगा।

राजकुमार यह सुन कर रो पड़ा और बोला — "क्या? यह तुम क्या कह रही हो? क्या तुम सोचती हो कि मैं इतना बेरहम हो सकता हूँ कि मैं जिसको प्यार करता हूँ उसी को मारूँ?

क्या तुम यह चाहती हो कि मैं तुमको यह साबित कर के बताऊँ कि तुमने जो कुछ भी मेरे ऊपर मेहरबानियाँ की हैं वे मैं सब भूल गया हूँ?"

बिल्ली उसको समझाते हुए बोली — "नहीं ऐसी बात नहीं है राजकुमार। तुम कृतघ्न बिल्कुल भी नहीं हो। तुम इस काम को इसलिये करोगे ताकि हम और तुम सुख से रह सकें। एक बिल्ली का विश्वास करो मैं अभी भी तुम्हारी दोस्त हूँ।"

फिर भी राजकुमार का मन नहीं माना। यह सोच कर ही राजकुमार की आँखों से आँसू बहने लगे कि वह बिल्ली को मार डालेगा।

उसने इस सबको न करने के लिये बिल्ली से बहुत कुछ कहा पर फिर बिल्ली के बार बार कहने पर उसने अपनी तलवार उठायी और काँपते हाथों से उस बिल्ली का गला और पूँछ दोनों काट डाले।

उसी पल एक बड़ी आश्चर्यजनक घटना घटी – उस सफेद बिल्ली का शरीर बढ़ने लगा और फिर वह एक बहुत ही सुन्दर लड़की में बदल गया। ऐसा कैसे हुआ यह तो कोई नहीं कह सकता था पर बस उसको वह बदलते देख सका।

उस लड़की का शरीर इतना सुन्दर था जिसको शब्दों में नहीं कहा जा सकता था। तभी वहॉ लौर्ड और लेडीज़ अपनी अपनी बिल्लियों की खालें अपने कन्धों पर डाले हुए आये और उस राजकुमारी के पैरों पर आ कर गिर गये।

वे सब भी उस राजकुमारी को उसके असली रूप में देख कर बहुत खुश थे। उसने सबका प्रेम से स्वागत किया जिससे ऐसा लगता था कि वह दिल की कितनी अच्छी थी।

फिर उसने राजकुमार को अपनी कहानी सुनायी कि किस तरह से वह एक नीच जादूगरनी के जादू से बिल्ली के रूप में बदल गयी थी। राजकुमार को तो उसको देखते ही उससे प्रेम हो गया।

कहानी सुना कर उसने कहा — "मगर राजकुमार तुमने मुझे इस हालत से आजाद किया मैं तुम्हारी बहुत कृतज्ञ हूॅ। असल में जब मैंने तुमको पहली बार देखा था तभी मुझे लगा था कि तुम ही मेरी सहायता करोगे।"

फिर वे दोनों एक शानदार गाड़ी मे चढ़े और उधर चल दिये जहॉ राजकुमार के दोनों भाई उसका इन्तजार कर रहे थे।

जैसे ही वे उस जगह पहुँचे तो वह राजकुमारी एक क्रिस्टल पत्थर में घुस गयी जो रत्नों से जड़ा हुआ था। इस पत्थर को कुछ बहुत ही बढ़िया कपड़े पहने आदमी उठा कर ले जा रहे थे।

राजकुमार अभी भी अपनी गाड़ी में बैठा हुआ था। उसने देखा कि उसके दोनों भाई अपनी अपनी लायी हुई लड़कियों के साथ उसी की तरफ आ रहे थे।

जब उन्होंने उससे उसकी लायी हुई लड़की के बारे में पूछा तो उसने उनको बताया कि वह तो केवल एक बिल्ली ही ले कर आया था।

इस बात पर उनको खूब हँसी आयी। फिर वे अपने घर की तरफ चल दिये। सबसे छोटा भाई उन दोनों के पीछे था और उसके पीछे था वह रत्नजटित पत्थर।

महल आने पर दोनों बड़े राजकुमारों ने अपनी अपनी लायी हुई लड़कियों को गाड़ी से उतारा और महल में अन्दर ले गये। राजा ने उनका ज़ोरदार स्वागत किया पर वह यह निश्चय नहीं कर सका कि वह उनमें से किसको इनाम दे।

फिर उसने अपने सबसे छोटे बेटे की तरफ देखा और पूछा — "तो इस बार तुम अकेले ही आये हो?"

राजकुमार ने उस रत्नजटित पत्थर को दिखाते हुए जवाब दिया — "नहीं जनाब, मैं अकेला नहीं आया बल्कि यह पत्थर साथ लाया

हूँ। इस पत्थर में आप एक छोटी से सफेद बिल्ली देखेंगे जो बहुत मीठी मीठी म्याऊँ करती है और जिसके मखमली मुलायम पंजे हैं।”

यह सुन कर राजा मुस्कुराया और खुद उस पत्थर को खोलने के लिये उठा। जैसे ही वह उस पत्थर के पास आया और उसे छुआ वह पत्थर टूट कर बिखर गया और उसमें से एक बहुत सुन्दर लड़की ऐसे निकल आयी जैसे बादलों में से सूरज निकलता है।

उसके सुन्दर बाल उसके कन्धों पर बिखर कर लहराते हुए उसके पैरों तक पहुँच रहे थे और उसने सफेद और गुलाबी रंग की पोशाक पहनी हुई थी। उसने राजा को काफी नीचे तक झुक कर नमस्ते की।

राजा उसको देख कर उसकी तारीफ में यह कहे बिना न रह सका — “यही है वह जिसका कोई जवाब नहीं। यही मेरे ताज की अधिकारी है।”

वह लड़की बोली — “पिता जी, मैं यहाँ आपकी राजगद्दी लेने नहीं आयी हूँ। वह तो आपकी शान है उस पर तो आप ही बैठे अच्छे लगते हैं। मैं तो खुद ही छह राज्यों की वारिस हूँ। उसमें से एक राज्य मैं आपको देती हूँ और एक एक राज्य आपके सब बेटों को देती हूँ।

इसके बदले में मैं बस इतना चाहती हूँ कि मैं आपके सबसे छोटे बेटे से शादी कर सकूँ। हमारे पास फिर भी तीन राज्य रहेंगे।” यह सुन कर राजा और उनके दरबारी सब खुशी से चिल्ला पड़े।

सबसे छोटे राजकुमार और उस राजकुमारी की तुरन्त ही शादी हो गयी। दूसरे दोनों बड़े राजकुमारों की भी उनकी लायी हुई लड़कियों से शादी कर दी गयी। इस तरह से उस राज्य में बहुत दिनों तक खुशियाँ मनायीं गयीं।

बाद में फिर सब राजकुमारों को उनके राज्यों में भेज दिया गया ताकि वे अपना अपना राज्य सँभाल सकें। सफेद बिल्ली अपनी सुन्दरता, दया और मीठे स्वभाव के लिये हमेशा याद की गयी।

3 रैवन[13]

शाप की एक लोक कथा और जिसमें एक मॉ अपनी नन्हीं सी बेटी को शाप दे कर उसे रैवन बना देती है। लेकिन फिर वह उस शाप से आजाद कैसे होती है यह देखने की बात है। यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के जर्मनी देश की लोक कथाओं से ली है।

एक बार की बात है कि एक रानी थी। उसके एक बहुत छोटी सी बेटी थी। उसने अभी तक चलना भी शुरू नहीं किया था।

एक दिन वह बेटी उसको बहुत दुखी कर रही थी। रानी उसको तरह तरह की बातें कह कर उसका मन बहलाने की कोशिश कर रही थी पर वह थी कि चुप ही नहीं हो रही थी। रानी यह देख कर बहुत परेशान हो गयी।

उसने इधर उधर देखा तो उसको कुछ रैवन अपने महल के ऊपर उड़ते दिखायी दे गये। उसने अपने महल की खिड़की खोली और बोली — "काश तू रैवन बन जाती और इस खिड़की से उड़ जाती ताकि मुझे कुछ आराम तो मिल जाता।"

---

[13] The Raven – a fairy tale by Brothers Grimm. Collected by Brothers Grimm. Raven is an American Indian bird which is mentioned in their folktales. To read its many folktales please read "Raven Ki Lok Kathayen", "Raven Lok Kathayen-1" available in market.

बस इत्तफाक की बात जैसे ही उसने ये शब्द कहे कि उसकी यह इच्छा तुरन्त ही पूरी हो गयी। उसकी बेटी तुरन्त ही उसकी बाँहों में से निकल कर रैवन बन कर उस खिड़की से निकल कर जंगल में उड़ गयी।

वह एक घने अँधेरे जंगल में चली गयी और वहाँ बहुत दिनों तक रहती रही। माता पिता को भी उसके बारे में फिर बहुत दिनों तक कुछ पता नहीं चला।

एक दिन एक आदमी उस जंगल में से गुजर रहा था कि उसने एक रैवन को रोते सुना। उसने उस आवाज का पीछा किया तो वह रैवन के पास आ पहुँचा।

उस आदमी को देख कर रैवन बोली — "मैं एक राजा की बेटी हूँ पर मेरे ऊपर जादू डाल दिया गया है। तुम मुझको इस जादू से आजाद कर सकते हो।"

आदमी ने पूछा "वह कैसे?"

रैवन बोली — "तुम इसी जंगल में और आगे तक चलते चले जाओ वहाँ तुमको एक मकान मिलेगा। उस मकान में एक बुढ़िया रहती है वह तुमको खाने के लिये माँस और पीने के लिये शराब देगी पर तुम उसका खाना पीना कुछ भी मत खाना।

क्योंकि अगर तुमने वहाँ उसका कुछ भी खाया पिया तो तुमको नींद आ जायेगी और फिर तुम मुझको इस ज़िन्दगी से आजाद नहीं करा पाओगे।

हर तीसरे पहर तीन दिनों तक मैं दिन के दो बजे एक गाड़ी में आऊँगी। पहले दिन मेरी गाड़ी मे चार सफेद घोड़े जुते होंगे, दूसरे दिन उसमें कत्थई रंग के घोड़े जुते होंगे और तीसरे दिन काले रंग के घोड़े जुते होंगे।

इस तरह मैं वहाँ तीन दिन तक रोज आऊँगी और अगर उस समय में तुम जागते नहीं रहे तो तुम मुझे आजाद नहीं करा पाओगे।"

उस आदमी ने वायदा किया कि उसको आजाद कराने के लिये वह वही करेगा जो उसने उससे कहा है।

रैवन फिर बोली — "पर अफसोस मुझे मालूम है कि तुम मुझे इस ज़िन्दगी से आजाद नहीं करा पाओगे क्योंकि तुम उस बुढ़िया का खाना पीना खा लोगे।"

यह सुन कर उस आदमी ने फिर से उससे वायदा किया कि वह उस बुढ़िया से कोई खाने पीने की चीज़ नहीं लेगा।

पर जब वह आदमी उस घर में गया तो उस बुढ़िया ने उसको कुछ खाना पीना देते हुए कहा — "अरे देखो न तुम तो बेहोश से हो रहे हो। आओ कुछ खा पी कर ताजादम हो लो।"

वह आदमी बोला — "नहीं मैं कुछ नहीं खाऊँगा पियूँगा।"

पर वह बुढ़िया तो उसको शान्ति से बैठने नहीं देती सो वह बोली — "कुछ तो खा लो। अच्छा अगर तुम कुछ खाते नहीं तो

लो इस बोतल में से ही कुछ पी ही लो। एक घूँट में तो कोई खास बात नहीं है।"

वह आदमी उसकी बातों में आ गया और उस बोतल में से उसने एक घूँट पी लिया। फिर वह दो बजे से कुछ पहले बागीचे में गया और वहाँ जा कर उस रैवन का इन्तजार किया।

पर जैसे ही उसके आने का समय हुआ तो उसे इतनी थकान महसूस हुई कि वह जाग ही नहीं पाया और उस थकान से लड़ते लड़ते वहीं बैठ गया, फिर लेट गया और सो गया। वह इतनी गहरी नींद सोया कि उस समय उसको कोई नहीं उठा सकता था।

दो बजे वह रैवन बनी लड़की वहाँ से गुजरी तो बहुत दुखी हुई क्योंकि उसको मालूम था कि वह आदमी उसको सोता हुआ ही मिलेगा।

और वाकई जब वह पहले दिन उस बागीचे में आयी तो उसको वह आदमी सोता हुआ ही मिला। वह गाड़ी में से उतरी, उसने उसको पुकारा भी पर वह जागा ही नहीं।

अगले दिन दोपहर के समय वह बुढ़िया उसके लिये फिर खाना और पानी ले कर आयी पर उस आदमी ने कुछ भी खाने पीने से मना कर दिया।

पर वह बुढ़िया तो फिर से उसको शान्ति से बैठने नहीं देगी सो वह बोली — "कुछ तो खा लो। अच्छा अगर तुम कुछ खाते नहीं

तो इस बोतल में से ही कुछ पी लो। एक घूँट में तो कोई खास बात नहीं है।"

वह आदमी उसकी बातों में आ जाता और वह उस बोतल में से एक घूँट शराब पी लेता। फिर वह दो बजे से कुछ पहले बागीचे में जाता और वहाँ जा कर उस रैवन का इन्तजार करता।

पर जैसे ही रैवन के आने का समय होता वह इतनी थकान महसूस करता कि वह जाग ही नहीं पाता और अपनी उस नींद से लड़ते लड़ते बैठ जाता, फिर लेट जाता और सो जाता। वह इतनी गहरी नींद सोता कि उस समय उसको कोई नहीं उठा सकता था।

उस दिन भी दो बजे वह रैवन बनी लड़की जब अपनी कत्थई घोड़ों से जुती हुई गाड़ी में बैठ कर वहाँ से गुजरी तो बहुत दुखी थी क्योंकि उसको मालूम था कि आज भी वह आदमी उसको सोता हुआ ही मिलेगा।

और वाकई जब वह उस बागीचे में आयी तो उसको वह उसको फिर से सोता हुआ ही मिला। वह गाड़ी में से उतरी, उसने उसको पुकारा भी पर वह जागा ही नहीं।

तीसरे दिन वह बुढ़िया फिर उस आदमी के पास आयी और उससे पूछा — "तुम न कुछ खा रहे हो न पी रहे हो इसका क्या मतलब है। क्या तुम मरना चाहते हो?"

आदमी बोला — "नहीं ऐसी बात नहीं है पर मुझे कुछ भी खाने पीने की इजाज़त नहीं है। और मैं कुछ खाऊँगा पियूँगा भी नहीं।"

पर वह बुढ़िया उस आदमी के लिये एक बोतल शराब, एक पूरी डबल रोटी और एक मॉस का टुकड़ा छोड़ गयी। इन तीनों की खुशबू उसकी नाक में इतनी ज़ोर से पहुँची कि वह अपने आपको रोक नहीं सका और शराब की बोतल में से एक बड़ा सा घूँट पी लिया।

फिर जब रैवन के आने का समय आया तो वह फिर बागीचे में जा कर उसका इन्तजार करने लगा। पर उस दिन उसको पहले दो दिनों से भी ज़्यादा थकान लगी और वह फिर बहुत ज़ोर से सो गया।

दो बजे वह रैवन वहॉ अपने काले घोड़ों से जुती गाड़ी में आयी। उसका गाड़ीवान और बाकी सब चीज़ें भी काली थीं। वह जब वहॉ आयी तो बहुत दुखी थी — "मुझे मालूम था कि यह आदमी मुझे आजाद नहीं करा सकता।"

उसने वहॉ आ कर फिर उसको हिला कर जगाने की बहुत कोशिश की पर वह तो इतनी ज़ोर से सो रहा था कि वह तो हिला भी नहीं।

इस बार उसने उसके पास एक पूरी डबल रोटी, एक बोतल शराब ओर एक मॉस का टुकड़ा छोड़ा ताकि वह उनमें से जितना खाना पीना चाहे खा पी सके खा ले और फिर भी वे खत्म न हों। क्योंकि वे सब चीज़ें कभी न खत्म होने वाली थीं।

साथ में वह उसने अपना नाम खुदी एक अँगूठी उसकी उँगली में पहना दी। उसने एक चिट्ठी भी उसके नाम छोड़ी जिसमें लिखा था कि —

"मैं देख रही हूँ कि तुम इस तरीके से मुझे बिल्कुल भी आजाद नहीं करा सकते। पर अगर तुम मुझको अभी भी आजाद कराने के लिये तैयार हो तो तुम इन सब चीज़ों को साथ ले कर स्ट्रौमबर्ग के सोने के किले[14] में आ जाओ। तुम वहाँ आ सकते हो यह मैं जानती हूँ।"

उसके बाद वह अपनी गाड़ी में बैठी और स्ट्रौमबर्ग के सोने के किले की तरफ चली गयी।

जब वह आदमी जागा तो यह सोच कर वह बहुत दुखी हुआ कि वह राजकुमारी तो जरूर ही वहाँ आयी होगी पर क्योंकि वह सो गया था इसलिये वह उसको आजाद नहीं करा सका।

तभी उसकी निगाह राजकुमारी की छोड़ी हुई चीज़ों पर पड़ी। उसने उसकी चिट्ठी पढ़ी जिसमें वह सब कुछ लिखा था कि उसको कैसे क्या करना था।

वह आदमी उठा और स्ट्रौमबर्ग के सोने के किले को ढूँढने चल दिया पर यह तो उसको पता ही नहीं था कि वह किला था कहाँ। काफी देर तक चलने के बाद वह एक अँधेरे जंगल में आ गया और उसमें चौदह दिन तक चलता रहा।

[14] Golden castle of Stromberg, Germany

फिर एक शाम को वह इतना थक गया कि वह एक झाड़ी के पास बैठ गया और सो गया। अगले दिन शाम को वह फिर एक घनी झाड़ी के पास आया कि वहाँ उसने इतनी गुर्राने की आवाजें सुनी कि वह वहाँ सो ही नहीं सका।

रात को उसने कहीं एक रोशनी जलती देखी तो वह उधर ही की तरफ चल दिया। वहाँ पहुँचा तो उसने देखा कि वहाँ एक छोटा सा मकान है। वह मकान उसको इसलिये छोटा लग रहा था क्योंकि उसके सामने एक बड़े साइज़ का आदमी[15] खड़ा था।

उसने सोचा कि अगर मैं इस समय इस घर में गया तो यह बड़े साइज़ का आदमी मुझे देख लेगा और मार डालेगा।

आखिर उसने हिम्मत की और उस घर के अन्दर घुसा। बड़े साइज़ के आदमी ने उसे देख लिया और बोला — "अच्छा हुआ तुम यहाँ आ गये। मैंने बहुत दिनों से खाना नहीं खाया है। आज मैं तुमको अपने रात के खाने में खाऊँगा।"

आदमी बोला — "अच्छा हो तुम मुझे छोड़ दो। तुम मुझे खाओ यह मुझे अच्छा नहीं लगेगा पर हाँ अगर तुमने बहुत दिनों से वाकई कुछ नहीं खाया है और तुम खाना ही खाना चाहते हो तो मेरे पास तुम्हारी भूख शान्त करने के लिये काफी खाना है।"

बड़े साइज़ का आदमी बोला — "अगर यह सच है कि तुम्हारे पास मेरे लिये काफी खाना है तब तो यह तुम्हारे लिये बहुत अच्छी

[15] Translated for the word "Giant"

बात है क्योंकि मैं तो तुमको केवल इसलिये खाने वाला था क्योंकि मैंने कई दिनों से खाना नहीं खाया था।"

सो वे दोनों खाने की मेज पर जा बैठे और आदमी ने अपना कभी न खत्म होने वाला खाना, डबल रोटी शराब और माँस, निकाल लिया।

दोनों ने पेट भर कर खाना खाया। बड़े साइज़ के आदमी को वह खाना बहुत अच्छा लगा और उसने भी खूब पेट भर कर खाना खाया।

खाना खाने के बाद आदमी ने उससे पूछा कि क्या वह जानता था कि स्ट्रौमबर्ग का सोने का किला कहाँ है। इस पर बड़े साइज का आदमी अपना नक्शा निकाल लाया जिसमें वहाँ के बहुत सारे शहर, गाँव और घर दिखाये गये थे पर उसमें कहीं कोई किला नहीं था।

उसने आदमी से कहा कि वह चिन्ता न करे उसके पास उससे भी बड़े नक्शे थे जिनमें और भी बहुत कुछ दिखाया गया था।

वे सब नक्शे ऊपर रखे थे। वह उनको भी ऊपर से ले आया पर सब बेकार क्योंकि उसको उन नक्शों में भी कहीं कोई किला दिखायी नहीं दिया।

अब वह आदमी वहाँ से जाना चाहता था पर उस बड़े साइज़ के आदमी ने उसको यह कह कर रोक लिया कि उसका भाई घर के लिये खाने का सामान लेने बाजार गया है उसके वापस आने तक वह उसका इन्तजार करे शायद तब कुछ पता चल सके।

आखिर जब उसका भाई आया तो उन्होंने उससे पूछा कि क्या वह स्ट्रौमबर्ग के सोने के किले को जानता था।

वह कई पुराने नक्शे निकाल लाया और उनमें से एक पुराने नक्शे में वह किला ढूँढने में सफल हो गया। पर वह किला तो कई हजार मील दूर था।

आदमी बोला — "तो मैं वहाँ जाऊँगाा कैसे?"

उस बड़े साइज़ के आदमी ने कहा — "मेरे पास दो घंटे का समय है उसमें मैं तुमको उस किले के पास तक छोड़ आऊँगा। पर उसके बाद मुझे घर वापस आना पड़ेगा क्योंकि मुझे उस बच्चे को दूध भी पिलाना है जो हमारे घर में है।"

सो वह उस आदमी को उस किले के सौ लीग[16] के दायरे के अन्दर अन्दर ले गया और उससे बोला — "बाकी की दूरी तुम अपने आपसे तय कर सकते हो।"

कह कर वह बड़े साइज़ का आदमी तो वापस लौट गया और यह आदमी आगे चल दिया। चलते चलते वह स्ट्रौमबर्ग के सोने के किले तक आ पहुँचा।

पर उसने देखा कि वह किला तो एक शीशे की पहाड़ी पर था। वहाँ उसको वह रैवन बनी लड़की उस किले के चारों तरफ गाड़ी

[16] A league is a unit of length. It was long common in Europe and Latin America, but it is no longer an official unit in any nation. The word originally meant the distance a person could walk in an hour. Now a days on land normally it is 3 miles but most countries have their own measurement.

चलाती दिखायी दी और फिर उस किले के अन्दर जाती दिखायी दे गयी।

वह उसको वहाँ पा कर बहुत खुश हुआ और उसके पास पहुँचने की कोशिश करने लगा। पर जब भी वह उस शीशे के किले के ऊपर चढ़ने की कोशिश करता था तो वह उस पर से बार बार फिसल जाता था।

जब उसने देखा कि वह तो उसके ऊपर चढ़ ही नहीं पा रहा है तो वह बहुत परेशान हुआ। उसने सोचा कि "मैं उसका यहीं नीचे इन्तजार करता हूँ।"

सो उसने वहीं एक झोंपड़ी बना ली और वहीं रहने लगा। वहाँ रहते रहते उसको एक साल हो गया। रोज वह उस रैवन को अपने ऊपर उड़ते देखता पर वहाँ तक किसी तरह भी पहुँच नहीं पाता।

एक दिन उसने अपनी झोंपड़ी के पास तीन डाकू देखे जो एक दूसरे को पीट रहे थे। वह उन पर चिल्लाया — "भगवान तुम्हारा भला करे तुम लोग आपस में क्यों लड़ रहे हो?"

उन डाकुओं को आवाज तो सुनायी दी पर दिखायी कोई नहीं दिया तो वे फिर एक दूसरे को पीटने लगे। अबकी बार वे एक दूसरे को और ज़ोर ज़ोर से पीट रहे थे।

तो वह आदमी फिर चिल्लाया — "भगवान तुम्हारा भला करे तुम लोग आपस में क्यों लड़ रहे हो?"

वे फिर रुक गये पर किसी को वहॉ न देख कर वे फिर से एक दूसरे को पीटने लगे। सो वह आदमी तीसरी बार चिल्लाया — "भगवान तुम्हारा भला करे तुम लोग आपस में क्यों लड़ रहे हो?"

फिर यह सोच कर कि उसको खुद ही जा कर वहॉ देखना चाहिये कि वे ऐसा क्यों कर रहे हैं वह वहॉ गया और उनसे पूछा कि वे तीनों क्यों लड़ रहे थे।

उनमें से एक बोला कि उसको एक जादू की डंडी मिल गयी थी जो दरवाजे खोल सकती थी।

दूसरा बोला कि उसके पास एक शाल[17] था जिसको ओढ़ कर वह आदमी दूसरों को दिखायी नहीं देता था।

तीसरा बोला कि उसके पास एक घोड़ा था जिस पर चढ़ कर कोई भी आदमी कहीं भी जा सकता था – यहॉ तक कि उस पर बैठ कर वह शीशे के पहाड़ पर भी चढ़ सकता था।

अब वे इस बात पर झगड़ रहे थे कि उनको यह पता नहीं था कि उनको ये तीनों चीज़ें बॉट लेनी चाहिये या फिर उनको आपस में मिल कर इस्तेमाल करनी चाहिये।

वह आदमी बोला कि वह उन तीनों चीज़ों के बदले में उनको तीन बहुत ही बढ़िया चीज़ देगा। उसके पास उनके बदले में देने के

---

[17] Translated for the word "Mantle"

लिये पैसा तो नहीं था पर उसके पास उन चीज़ों के बदले में देने के लिये तीन बहुत ही कीमती चीज़ें थीं।

पर उन कीमती चीज़ों को देने से पहले वह उनकी चीज़ों की जॉच कर के देखेगा कि वे उस तरीके से काम भी कर रही हैं या नहीं जिस तरीके से उन्होंने उसको बतायी थीं।।

वे डाकू राजी हो गये। उन्होंने उस आदमी को सबसे पहले घोड़े पर बिठाया फिर उसके हाथ में जादुई डंडी दी और फिर उसको शाल ओढ़ा दिया।

अब शाल ओढ़ते ही वह सबकी नजरों से छिप गया। अब वे उसको देख नहीं सकते थे सो उस आदमी ने उनको धक्का देते हुए कहा — "तुमको वह मिल गया जिसके तुम अधिकारी थे। अब तो तुम खुश हो।" और यह कह कर उसने अपने घोड़े को एड़ लगायी और उस शीशे के पहाड़ पर चढ़ गया।

पर जब वह किले के सामने पहुँचा तो उसने देखा कि उसका तो दरवाजा ही बन्द था। उसने अपनी डंडी निकाली और उसको उस दरवाजे पर मारी तो वह दरवाजा खुल गया और वह उस किले के अन्दर चला गया।

वहाँ जा कर वह किले की सीढ़ियाँ चढ़ कर उस कमरे तक पहुँच गया जहाँ वह रैवन एक सोने के गिलास में शराब लिये हुए उसका इन्तजार कर रही थी। वह तो उसको देख नहीं सकी क्योंकि उसने जादुई शाल ओढ़ा हुआ था।

जब वह आदमी उसके पास तक आ गया तो उसने अपनी उँगली से वह अँगूठी निकाली जो रैवन ने उसको दी थी और उसको रैवन के शराब के गिलास में डाल दिया। उस गिलास में गिरते ही वह खन्न से बज उठी।

उस अँगूठी को देखते ही वह चिल्लायी — "अरे यह तो मेरी अँगूठी है। इसका मतलब है कि उस आदमी ने मुझे आजाद करा दिया। वह आदमी भी यहीं कहीं होना चाहिये।"

उसके लोगों ने उस आदमी को किले भर में ढूँढ लिया पर वह उनको कहीं नहीं दिखायी दिया।

वह आदमी वहाँ से बाहर चला गया और अपने घोड़े पर बैठ गया। वहाँ जा कर उसने अपना शाल उतार कर फेंक दिया। सो जब वे किले के दरवाजे पर आये तभी वे उसको देख सके। वे खुशी से चिल्ला पड़े।

उस आदमी को वहाँ देखते ही वह रैवन लड़की में बदल गयी। उसको राजकुमारी में बदलते देख कर वह आदमी भी अपने घोड़े से नीचे उतर आया और राजकुमारी को अपनी बाँहों में ले लिया।

उस राजकुमारी ने भी उसको चूम लिया और बोली — "क्योंकि तुमने मुझे इस रैवन की ज़िन्दगी से आजाद किया है तो कल हम लोग शादी कर लेंगे।" सो अगले दिन उन दोनों की शादी हो गयी और फिर दोनों खुशी खुशी रहे।

4 मेंढक राजकुमार–1[18]

यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के जर्मनी देश की बहुत ही लोकप्रिय लोक कथाओं से ली गयी है। यह कथा वहाँ के बच्चे अपने बचपन में ही सुन लेते हैं। हमें पूरी उम्मीद है कि तुमने भी यह कथा जरूर ही कहीं किसी रूप में पढ़ी या सुनी होगी। तो लो अब पढ़ो यह कथा हिन्दी में।

एक बार की बात है कि एक शाम को एक राजकुमारी ने अपनी टोपी पहनी और जूते पहने और अकेली ही घूमने चल दी। चलते चलते वह एक जंगल में पहुँच गयी।

वहाँ उसने एक ठंडे पानी का सोता देखा जिसके बीच में एक गुलाब खिला हुआ था। वह वहीं सुस्ताने के लिये उस सोते के पास बैठ गयी। उसके हाथ में एक सुनहरी गेंद थी जो उसको बहुत अच्छी लगती थी।

वह वहाँ बैठी बैठी उस गेंद को उछाल उछाल कर खेल रही थी। एक बार वह इतनी ऊँची उछली कि वह उसके हाथ नहीं आयी और जमीन पर लुढ़कती चली गयी।

---

[18] The Frog Prince – a folktale of Germany, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.eastoftheweb.com/short-stories/UBooks/FrogPrin.shtml
This folktale was written by Brothers Grimm.

राजकुमारी उसके पीछे दौड़ी भी पर उसे पकड़ न सकी और वह पानी में चली गयी। राजकुमारी ने पानी में झॉका परन्तु पानी गहरा होने की वजह से वह पानी में जाने का साहस न कर सकी।

राजकुमारी बहुत दुखी हुई और कहने लगी — "काश, मेरी गेंद वापस मिल जाये तो मैं अपने सब वेशकीमती कपड़े और जवाहरात और जो कुछ भी मेरे पास है मैं उसे वह सब दे दूँ।"

यह सुनते ही एक मेंढक ने अपना मुँह पानी से बाहर निकाला और बोला — "राजकुमारी, तुम इतनी ज़ोर से क्यों रोती हो?"

राजकुमारी बोली — "ओ गन्दे मेंढक, तुम मेरी क्या सहायता कर सकते हो? मेरी सुनहरी गेंद पानी में गिर गयी है। अगर तुम उसे निकाल दो तो मैं अपने सब वेशकीमती कपड़े और जवाहरात और जो कुछ भी मेरे पास है मैं वह सब तुमको दे दूँगी।"

मेंढक बोला — "मुझे तुम्हारे वेशकीमती कपड़े और जवाहरात आदि नहीं चाहिये, मगर अगर तुम मुझे प्यार करो, अपने साथ रखो, अपने साथ सोने की थाली में खाना खिलाओ, अपने छोटे से बिछौने पर सोने दो तो मैं तुम्हारी गेंद ला सकता हूँ।"

राजकुमारी सोचने लगी कि यह मेंढक क्या बेकार की बातें कर रहा है। यह तो पानी से बाहर ही नहीं आ सकता। पर हो सकता है कि वह मेरी गेंद निकाल दे इसलिये मैं इसकी बात माने लेती हूँ।

यही सोच कर वह बोली — "अगर तुम मेरी गेंद निकाल दो तो जो कुछ तुम चाहते हो वह मैं तुम्हारे लिये करने को तैयार हूँ।"

मेंढक ने एक डुबकी लगायी और कुछ ही पल में गेंद मुँह में दबाये ऊपर आ गया और उस गेंद को उसने जमीन पर फेंक दिया। जैसे ही राजकुमारी ने अपनी गेंद देखी तो वह बहुत खुश हुई और उसे उठाने को दौड़ी।

वह अपनी गेंद पा कर इतनी ज़्यादा खुश थी कि उसने मेंढक की तरफ मुड़ कर भी नहीं देखा और अपनी गेंद उठा कर तुरन्त ही घर की ओर दौड़ी चली गयी।

मेंढक ने उसे पुकारा भी — "रुको, राजकुमारी रुको, अपने वायदे के अनुसार मुझे भी अपने साथ ले लो।" परन्तु राजकुमारी तो यह जा और वह जा।

अगले दिन राजकुमारी जब खाना खाने बैठी तो उसने कुछ अजीब सी आवाज सुनी। उसे लगा जैसे कोई संगमरमर की सीढ़ियों से ऊपर आ रहा है और फिर तुरन्त बाद ही किसी के धीरे से दरवाजा खटखटाने की आवाज सुनायी दी...

दरवाजा खोलो प्यारी राजकुमारी दरवाजा खोलो तुम्हारा प्यार खड़ा है
याद करो हमने तुमसे क्या कहा था उस फव्वारे के साये में जो जंगल में है।

तब राजकुमारी दौड़ कर गयी और उसने दरवाजा खोला। उसके सामने एक मेंढक खड़ा था जिसको वह बिल्कुल ही भूल गयी थी। वह डर गयी और डर के मारे तुरन्त ही दरवाजा बन्द कर के अपनी जगह पर आ बैठी।

उसके पिता राजा ने उसको डरा हुआ देख कर उससे पूछा — "क्या बात है बेटी? तुम इतना डरी हुई क्यों हो?"

वह बोली — "पिता जी वहाँ एक गन्दा सा मेंढक है जिसने आज सुबह पानी में से मेरी गेंद बाहर निकाली थी।

मैंने उसे यह सोच कर अपने साथ रहने के लिये कह दिया था कि मैंने सोचा कि वह तो कभी पानी से बाहर आ ही नहीं सकता मगर वह तो यहाँ खड़ा है और अन्दर आना चाहता है।"

इसी समय मेंढक ने फिर खटखटाया और अपनी पहले वाली लाइनें दोहरायीं —

दरवाजा खोलो प्यारी राजकुमारी दरवाजा खोलो तुम्हारा प्यार खड़ा है
याद करो हमने तुमसे क्या कहा था उस फव्वारे के साये में जो जंगल में है

राजा बोला — "बेटी, जब तुमने उससे ऐसा कहा है तो तुम्हें अपना वायदा निभाना चाहिये और उसे अन्दर बुला लेना चाहिये।"

राजकुमारी ने दरवाजा खोल दिया और वह गन्दा मेंढक फुदकता हुआ अन्दर आ गया।

वह राजकुमारी से बोला — "मुझे अपनी पास वाली कुर्सी पर बिठाने में मेरी मदद करो न।" न चाहते हुए भी राजकुमारी ने उसे अपने पास वाली कुर्सी पर बिठाया।

जैसे ही राजकुमारी ने उसे अपने पास वाली कुर्सी पर बिठाया□ वह बोला — "अब तुम अपनी थाली मेरे पास लाओ ताकि मैं भी उसमें से खा सकूँ।"

राजकुमारी को बड़ी घृणा सी हुई कि वह कैसे एक मेंढक को अपने साथ अपनी थाली में खाना खिलाये पर अपने वायदे को ध्यान में रखते हुए उसने चुपचाप अपनी सोने की थाली मेंढक के पास खिसका दी।

जब मेंढक पेट भर खाना खा चुका तो बोला — "अब मैं बहुत थक गया हूँ, तुम मुझे अपने पलंग पर ले चलो, मैं सोऊँगा।"

न इच्छा होते हुए भी राजकुमारी उसे अपने हाथों में उठा कर ऊपर ले गयी और अपने बिछौने में अपने तकिये के ऊपर उसे लिटा दिया जहाँ वह सारी रात सोता रहा। सुबह होते ही वह कूदा और घर से बाहर चला गया।

राजकुमारी ने सोचा कि शायद अब वह चला गया और अब फिर नहीं आयेगा मगर यह उसकी भूल थी क्योंकि अगले दिन शाम को वह फिर आ गया और फिर वैसा ही हुआ जैसा कि पहली शाम को हुआ था।

वह आ कर बोला —

दरवाजा खोलो प्यारी राजकुमारी दरवाजा खोलो तुम्हारा प्यार खड़ा है
याद करो हमने तुमसे क्या कहा था उस फव्वारे के साये में जो जंगल में है

राजकुमारी ने फिर से दरवाजा खोला तो देखा कि वही मेंढक फिर दरवाजे पर खड़ा था। वह फिर अन्दर आ गया और पहली रात की तरह से राजकुमारी के बिस्तर पर सो गया और सुबह तक सोता रहा।

और फिर तीसरी शाम को भी ऐसा ही हुआ। परन्तु अगले दिन सुबह उसे बड़ा आश्चर्य हुआ जब उसने अपने बिछौने के पास मेंढक की बजाय एक सुन्दर राजकुमार को खड़े देखा।

तब उस राजकुमार ने उसे बताया कि एक बुरी परी ने उसको शाप दे दिया था जिससे वह मेंढक में बदल गया था और उसे इस रूप में तब तक वहाँ रहना था जब तक कोई राजकुमारी आ कर उसे निकाले नहीं और अपने साथ सुलाये नहीं।

आज तुमने मेरे ऊपर पड़ा यह जादू दूर कर दिया। अब मेरी कोई इच्छा नहीं है सिवाय इसके कि तुम मेरे साथ मेरे पिता के राज्य में चलो जहाँ मैं तुमसे शादी कर सकूँ। मैं तुमसे वायदा करता हूँ कि मैं तुमको जीवन भर प्यार करता रहूँगा।”

राजकुमारी तुरन्त तैयार हो गयी। आठ घोड़ों की शाही सवारी में बैठ कर वे राजकुमार के राज्य चल दिये। वहाँ जा कर उनकी

शादी हो गयी। सारे राज्य में खूब खुशियाँ मनायी गयीं और वे सारी ज़िन्दगी सुख से रहे।

5 मेंढक राजकुमार–2[19]

यह लोक कथा भी इससे पहले वाली कहानी का दूसरा रूप है। यह भी यूरोप महाद्वीप के जर्मनी देश में कही सुनी जाती है।

एक बार की बात है कि एक राज्य में बहुत ही सुन्दर राजकुमारी रहती थी। वह एक बहुत बड़े महल में रहती थी जिसमें बहुत सारे फव्वारे और बागीचे थे।

राजकुमारी को बागीचों में घूमना बहुत अच्छा लगता था। वह वहॉ बैठी बहुत देर तक पेड़ पौधों को देखती रहती। जब वह फव्वारे के पास बैठती तो उसमें वह अपनी परछाईं देखती रहती।

वह हमेशा से ही अच्छी नहीं थी इसी लिये उसके साथ खेलने के लिये उसका कोई दोस्त नहीं था। जब वह बाहर खेलती तो बस वह अपनी एक सुनहरी गेंद से ही खेलती। वह उसको हवा में उछाल उछाल कर खेलती रहती।

एक बार जब वह राजकुमारी अपनी गेंद को उछाल उछाल कर खेल रही थी तो उसकी गेंद एक तालाब में गिर गयी। उसने जब तालाब में झॉक कर देखा तो उसे केवल अपनी परछाईं ही दिखायी दी गेंद नहीं दिखायी दी।

[19] The Frog Prince – a folktale from Germany, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=66
He adapted from the "Brother's Grimm".

ऐसा पहली बार हुआ था जब उसको अपनी परछाईं देखना अच्छा नहीं लगा। उसने रोना शुरू कर दिया।

एक कोमल आवाज ने पूछा — "राजकुमारी, तुम क्यों रो रही हो?"

राजकुमारी ने अपने चारों तरफ देखा पर उसे अपने पास तो कोई भी दिखायी नहीं दिया।

उसने पूछा — "यह कौन बोला मुझसे?"

फिर उसने नीचे देखा तो देखा कि एक मेंढक उसके पैरों के पास बैठा था। उसके मुँह से निकला — "उँह, एक गन्दा बूढ़ा मेंढक।'

मेंढक तुरन्त बोला — "पहली बात तो यह कि मुझे नहीं लगता कि मैं गन्दा हूँ, दूसरी बात यह कि मैं बूढ़ा भी नहीं हूँ। और तीसरी बात यह कि मैंने पूछा कि तुम क्यों रो रही हो?"

राजकुमारी बोली — "मेरी गेंद इस तालाब में गिर गयी है। अगर तुम इस तालाब में से मेरी गेंद निकाल दोगे तो मैं तुमको अपने मोती और जवाहरात दे दूँगी।"

मेंढक बोला — "मैं तुम्हारी गेंद निकाल तो सकता हूँ पर मुझे तुम्हारे मोती और जवाहरात नहीं चाहिये। मैं तुम्हारे घर में आना चाहता हूँ, मैं तुम्हारी मेज पर बैठ कर तुम्हारे साथ खाना खाना

चाहता हूँ तुम्हारी सुन्दर सोने की थाली में से। और फिर मैं तुम्हारे बिस्तर पर सोना चाहता हूँ।"

राजकुमारी ने कुछ बुरा सा मुँह बनाया तो मेंढक फिर बोला — "हाँ और मैं यह भी चाहता हूँ कि तुम मेरा चुम्बन लो। वायदा करो कि तुम यह सब करोगी तभी मैं तुम्हारी सुनहरी गेंद निकाल कर तुमको दूँगा।

राजकुमारी बोली — "ठीक है मैं वायदा करती हूँ।"

उसने यह सोच कर यह वायदा कर दिया कि एक बार अगर वह मेंढक उस तालाब में कूद गया तो वह उसमें से कभी भी नहीं निकल पायेगा और मुझे अपना वायदा पूरा करने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी। पर हो सकता है कि वह मेरी गेंद निकाल दे।

मेंढक तुरन्त ही उस तालाब में कूद गया और कुछ ही मिनटों में अपने मुँह में गेंद ले कर ऊपर आ गया और उसको कुँए के बाहर राजकुमारी के पास सूखी जमीन पर उछाल कर फेंक दी।

राजकुमारी अपनी गेंद को पा कर इतनी खुश थी कि वह उसको उठा कर अपने महल में भाग गयी।

मेंढक पीछे से चिल्लाया — "ओ राजकुमारी, अपना वायदा याद रखना।"

पर राजकुमारी ने तो जैसे सुना ही नहीं। उसको मेंढक से किये गये वायदे को याद रखने की जरूरत भी क्या थी।

अगले दिन जब राजकुमारी खाना खाने बैठी तो किसी ने महल का दरवाजा खटखटाया। पहले तो किसी ने बहुत धीरे से दरवाजा खटखटाया जिसे केवल राजकुमारी ही सुन सकी।

फिर उसके नौकरों ने भी सुना और फिर जल्दी ही वह खटखटाने की आवाज इतनी बढ़ गयी कि उसको राजा ने भी सुना —

राजकुमारी, राजकुमारी, सुनो सुनो
राजकुमारी, राजकुमारी, अपना वायदा निभाओ
खेलते समय तुम्हारी गेंद खो गयी थी
फिर वह गेंद तुमको वापस दी गयी
ऐसा मत समझो कि मैं तुमको परेशान कर रहा हूँ
वायदा तो वायदा है अपने पिता से पूछ लो

वह मेंढक महल के बाहर दरवाजे पर खड़ा था।

राजा ने अपनी बेटी से पूछा — "यह वायदे के बारे में क्या बात है बेटी? हमको हमेशा अपने वायदे निभाने चाहिये। क्या तुमने इस मेंढक से कोई वायदा किया था?"

राजकुमारी बोली — "पिता जी, खेलते हुए मेरी गेंद तालाब में गिर गयी थी। मैंने उससे केवल वह गेंद निकाल कर देने के लिये ही वायदा किया था। वह एक बहुत ही गन्दा बूढ़ा मेंढक है। किसी मेंढक से किये गये वायदे का क्या निभाना।"

मेंढक बाहर से ही बोला — “पहली बात यह कि मैं गन्दा नहीं हूँ। दूसरी बात यह कि मैं तुमको फिर याद दिला दूँ कि मैं बूढ़ा भी नहीं हूँ। और तीसरी बात यह कि वायदा तो वायदा है चाहे वह किसी से भी किया जाये।”

राजा ने अपनी बेटी से कहा — “बेटी यह मेंढक ठीक कहता है। वायदा तो वायदा है चाहे वह किसी से भी किया जाये। इस मेंढक को महल के अन्दर बुलाओ और अपना वायदा पूरा करो।”

राजकुमारी ने फिर वैसा ही किया जैसा कि उसके पिता ने उससे कहा। उसने महल का दरवाजा खोला और मेंढक कूद कर अन्दर आगया

वह राजकुमारी से बोला — “बहुत बहुत धन्यवाद। यह पहला वायदा है जो तुमने पूरा किया। तुमने कहा था कि मैं अन्दर आ सकता हूँ और मैं अब यहाँ हूँ।”

मेंढक फिर कूदता हुआ खाने के कमरे में चला गया और बोला — “अब मुझे मेज पर बिठाओ।”

राजकुमारी उसको ना कहने ही वाली थी कि उसने देखा कि उसके पिता उसको देख रहे हैं सो उसने उसको उठा कर अपने पास वाली कुर्सी पर बिठा लिया।

मेंढक बोला — “यह तुमने दूसरा वायदा पूरा किया। अब तुम अपनी सोने की थाली मेरी तरफ खिसकाओ ताकि मैं उसमें से खाना खा सकूँ।”

"उफ़।" राजकुमारी बोली और उसने वह थाली मेंढक की तरफ खिसका दी। मेंढक ने उसमें से पेट भर कर खाया और बोला — "अब तुम मुझे अपने कमरे में ले चलो ताकि मैं वहॉ तुम्हारे बिस्तर पर सो सकूॅ।"

राजकुमारी बोली — "मेरे बिस्तर में?"

वह बहस नहीं करना चाहती थी पर वह जानती थी कि वह क्या कह रही है क्योंकि उसने वायदा किया था। वह एक राजा की बेटी थी और हालॉकि काफी बिगड़ी हुई थी फिर भी उसको मालूम था कि उसको अपना वायदा तो निभाना ही था।

जैसे ही उसने मेंढक को उठाया तो उसने अपनी नाक दूसरी तरफ कर ली। उसको ले जा कर उसने अपने लाल मखमल के तकिये पर रख दिया। फिर वह उस तकिये को ऊपर ले गयी और उसको ले जा कर अपने बिस्तर पर रख दिया।

खुद वह जा कर एक कुर्सी पर बैठ गयी और मेंढक की तरफ देखती रही कि वह मेंढक आगे क्या करता है। मेंढक ने अपनी ऑखें बन्द की और सो गया। एक मेंढक उसके अपने बिस्तर में? उफ। वह सारी रात उसने वहीं कुर्सी पर सोते हुए गुजार दी।

जब सुबह की रोशनी की पहली किरन खिड़की के रास्ते उसके कमरे में आयी तो मेंढक जाग गया और बिस्तर पर से कूद पड़ा। वह कमरे से बाहर आया, सीढ़ियों से नीचे उतरा और महल के बाहर चला गया।

उसके बाहर जाते ही राजकुमारी की जान में जान आयी कि अब मुझे उसे चूमना नहीं पड़ेगा। पर अगली रात मेंढक फिर महल वापस आया और बोला —

राजकुमारी, राजकुमारी, सुनो सुनो
राजकुमारी, राजकुमारी, अपना वायदा निभाओ
खेलते समय तुम्हारी गेंद खो गयी थी
फिर वह गेंद तुमको वापस दी गयी
ऐसा मत समझो कि मैं तुमको परेशान कर रहा हूँ
वायदा तो वायदा है अपने पिता से पूछ लो

मेंढक ने जैसा पहली रात किया वैसे ही दूसरी रात भी किया, और फिर तीसरी रात भी।

इस तरह तीन रात राजकुमारी ने मेंढक को महल में आने दिया, अपने साथ खाने की मेज पर बैठने दिया, अपनी सोने की थाली में से खाना खाने दिया और अपने बिस्तर में सोने दिया। और तीनों रात वह खुद कुर्सी पर सोती रही।

पर वह खुश थी कि अपना वायदा रखने के लिये उसे मेंढक को कम से कम चूमना नहीं पड़ा।

लेकिन तीसरी रात राजकुमारी ने एक अजीब सा सपना देखा। उसने देखा कि मेंढक उससे बातें कर रहा है। सपने में उसने मेंढक को यह कहते हुए सुना कि वह सचमुच में एक राजकुमार था और एक बुरी परी के शाप ने उसको मेंढक में बदल दिया था।

परी ने मेंढक से कहा कि जब वह किसी राजकुमारी के बिस्तर पर तीन रात सोयेगा और वह राजकुमारी उसको चूमेगी तब वह फिर से राजकुमार में बदल जायेगा।

यह सपना देख कर राजकुमारी की ऑख खुल गयी तब उसको लगा कि वह तो सपना देख रही थी। उसने इधर उधर देखा पर वह ठंडा मेंढक अभी भी उसके बिस्तर पर बेखबर पड़ा सो रहा था।

फिर वह अपने सपने के बारे में सोचने लगी। उसने अपने वायदे के बारे में भी सोचा। उसे याद आया कि उसने मेंढक से उसे चूमने का भी वायदा किया है।

वह अपनी कुर्सी से उठी और अपने बिस्तर के ऊपर सोते हुए मेंढक के पास गयी। उसने अपनी ऑखें बन्द कीं और उस मेंढक के माथे पर उसको चूम लिया।

जैसे ही उसके होठों ने मेंढक को छुआ वह मेंढक तो सचमुच में ही राजकुमार बन गया। उसने अपनी ऑखें समय से खोल ली थीं जिससे वह मेंढक को राजकुमार के रूप में बदलते देख सकी।

उसके बाद राजकुमार ने ऑखें खोलीं तो उसने देखा कि राजकुमारी उसके ऊपर झुकी खड़ी है। वह बोला — “तुमने अपना वह तीसरा वायदा भी निभाया हालॉकि वह वायदा तुमने एक मेंढक से किया था।”

राजकुमार सुन्दर था। राजकुमारी को अपनी परछाईं की तरफ देखने की बजाय राजकुमार की तरफ देखना ज़्यादा अच्छा लग रहा था।

राजकुमार ने राजकुमारी से पूछा — "क्या मैं तुम्हारे पिता से शादी के लिये तुम्हारा हाथ माँग सकता हूँ? अगर वह तुमको मुझसे शादी करने की इजाज़त दे देंगे तो मैं तुमको अपने पिता के राज्य ले जाऊँगा जहाँ मैं तुमसे शादी कर लूँगा और तुम्हें तब तक प्यार करूँगा जब तक हम ज़िन्दा रहेंगे।

यह सुन कर राजकुमारी मुस्कुरा दी और तुरन्त ही उसका जवाब दे दिया। उसने भी उससे शादी करने और उसको ज़िन्दगी भर प्यार करने का वायदा किया।

उसने यह भी याद रखा कि वायदा वायदा होता है, उसको अवश्य ही निभाना चाहिये चाहे वह किसी से भी किया गया हो।

6 बेकर का आलसी बेटा[20]

यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के पुर्तगाल देश में कही सुनी जाती है। यह वहाँ की एक बहुत ही लोकप्रिय लोक कथा है।

इस लोक कथा में एक राजकुमार मछली बन जाने के लिये शापित है कि जब तक उसके किसी से यह जाने बिना ही एक बेटा नहीं हो जाता कि उसका पिता कौन है और उसके बागीचे से कोई उसका सन्तरा नहीं चुरा लेता वह मछली ही बना रहेगा।

तो लो पढ़ो यह लोक कथा अब हिन्दी में और देखो कि यह सब कैसे मुमकिन होता है कि वह राजकुमार फिर कैसे मछली से राजकुमार बनता है।

एक बार की बात है कि पुर्तगाल में एक स्त्री बेकर[21] थी। उसके एक बहुत ही आलसी बेटा था।

जब सारे बच्चे आग जलाने के लिये लकड़ी इकट्ठा करने के लिये जाते थे तो उसको भी लकड़ी लाने के लिये कहा तो जाता था पर वह वहाँ कभी जाता ही नहीं था।

---

[20] Baker's Idle Son – a folktale from Portugal, Europe. Adapted from the book "Portugese Folk-Tales" This tale is available at : https://surlalunefairytales.com/a-g/fisherman-wife/stories/bakersidleson.html also.

[21] Baker is the man or woman who bakes bread, biscuits, cookies cakes etc… Baking is a process of cooking food. See her picture above.

अपने ऐसे आलसी बेटे को देख कर उस स्त्री को बहुत दुख होता था पर उसकी समझ में नहीं आता था कि वह उसके बारे में करे तो करे क्या।

सो एक दिन उसने उस बेटे को जबरदस्ती उन बच्चों के साथ लकड़ियॉ लाने के लिये भेज दिया तो वह भी दूसरे बच्चों के साथ चला गया।

पर जैसे ही वह जंगल पहुॅचा तो दूसरे बच्चे तो लकड़ियॉ और पेड़ों की छोटी छोटी शाखें इकट्ठा करने में लग गये पर वह एक नदी के किनारे अपना खाना खाने बैठ गया जो वह अपने घर से लाया था।

जब वह खाना खा रहा था तो एक मछली वहॉ आयी और उसका गिरा हुआ खाना खाने लगी। आखिर उसने उसको पकड़ लिया। मछली ने उससे प्रार्थना की कि अगर वह उसको मारे नहीं और छोड़ दे तो वह उसकी हर इच्छा पूरी करेगी।

पर उस आलसी लड़के को उस मछली पर विश्वास नहीं हुआ तो वह उससे बोला — "मेरे भगवान और मेरी मछली के नाम पर मैं यह इच्छा करता हूॅ कि लकड़ी का एक बहुत बड़ा ढेर जो मेरे साथ वाले सब बच्चों के लकड़ी के ढेरों से भी बड़ा हो मेरे सामने आ जाये। और वह मेरे बिना छुए ही यहॉ से मेरे घर तक चलता जाये।"

तुरन्त ही लकड़ी का बॅधा हुआ एक बहुत बड़ा ढेर उसके सामने आ गया। जब उसने लकड़ी के उस ढेर को ठीक से देख लिया तभी उसने उस मछली को समुद्र में जाने दिया।

अब वह घर वापस चला। घर जाते समय वह बीच में महल के सामने से गुजर रहा था तो महल की खिड़की पर राजकुमारी बैठी हुई थी।

राजकुमारी के साथ साथ राजा भी बैठा था। उसको उस लकड़ी के ढेर को अपने आप चलते देख कर बहुत आनन्द आया। राजकुमारी को भी वह देखने में इतना अच्छा लगा कि वह हॅस पड़ी।

उसको हॅसते देख कर आलसी लड़का बोला — "मेरे भगवान और मेरी मछली के नाम पर मैं यह इच्छा करता हूॅ कि राजकुमारी के एक बेटा हो और उसको यह पता न चले कि उसका पिता कौन है।"

राजकुमारी को उसी समय से लगने लगा कि उसको बच्चे की आशा हो आयी है। जब राजा को यह पता चला तो वह यह जान कर उससे बहुत नाराज हुआ। उसने उसको उसकी प्रिय दासियों के साथ एक महल में कैद कर दिया। समय आने पर राजकुमारी ने एक बेटे को जन्म दिया।

वह आलसी लड़का फिर जंगल लौटा तो वह मछली फिर आयी और उसने लड़के को बताया कि उस राजकुमारी के बेटा हुआ है।

मछली के कहे अनुसार उसने राजा के महल के सामने एक महल बनवाया जो राजा के महल से भी ज़्यादा शानदार था। इसके महल के बागीचे में हर रंग के फूल थे और उनमें एक फलों के पेड़ों का बागीचा भी था। इस फल के बागीचे में एक सन्तरे का पेड़ था जिस पर बारह सुन्हरी सन्तरे लगे थे।

पर यह सब तो उसे उस मछली और परियों का दिया हुआ था। वह खुद तो बहुत आलसी था। महल बन जाने के बाद वह आलसी लड़का उस महल में गया और एक राजकुमार बन कर रहने लगा। दूसरे लोग उसको केवल राजकुमार की तरह से ही जानते थे किसी और तरह जानते ही नहीं थे।

एक दिन राजा ने उस लड़के के पास यह सन्देश भेजा कि वह उसका महल देखना चाहता है। उस आलसी लड़के ने कहा कि वह खुशी से अपना महल उसको दिखायेगा। उसने राजा और उसके सारे दरबारियों को सुबह के नाश्ते के लिये बुला लिया।

राजा और उसके दरबारी उसका महल देख कर बहुत खुश हुए कि उसमें कितने आराम के साधन थे। महल देखने के बाद वे उसका बागीचा देखने गये।

बागीचे में इतने सारे फूल देख कर वे आश्चर्यचकित रह गये पर सबसे ज़्यादा आश्चर्य तो उन सबको सन्तरे का पेड़ देख कर

हुआ जो उसके फलों के बागीचे में लगा हुआ था और जिस पर सुनहरी सन्तरे लगे हुए थे।

उस आलसी लड़के ने राजा और उसके दरबारियों से कहा कि वे वहाँ से कुछ भी ले जा सकते था सिवाय सुनहरी सन्तरों के।

सब कुछ देख कर वे सब नाश्ते के लिये महल लौटे और नाश्ते के लिये बैठे। जब नाश्ता खत्म हो गया तो राजा और दरबारी लोग अपने महल जाने के लिये लौटे।

जाते समय उस लड़के ने राजा से कहा कि वह उन सबको अपने महल में बुला कर बहुत खुश था और उसने उनका बहुत अच्छे से स्वागत किया पर वह इस बात से बहुत दुखी था कि इतने अच्छे स्वागत के बावजूद उसका एक सन्तरा गायब था।

दरबारियों ने तो साफ मना कर दिया कि उनमें से किसी ने उसका कोई सन्तरा नहीं लिया। उन्होंने उस लड़के को अपने कोट उतार कर भी दिखाये ताकि वह सन्तुष्ट हो सके कि सन्तरा उन्होंने नहीं लिया। राजा को यह देख सुन कर बहुत शर्म आयी क्योंकि अब केवल वही एक देखने से रह गया था।

उसने अपना कोट उतारा पर जाँच करने पर उसकी जेबों से कुछ नहीं मिला। सो वह जब अपने कोट को दोबारा पहनने लगा तो उस लड़के ने उससे एक बार फिर से अपनी जेबें देखने के लिये कहा क्योंकि जब वह सन्तरा उसके दरबारियों ने नहीं लिया तो जरूर उसी ने लिया होगा।

सो राजा ने फिर से अपनी जेब में हाथ डाला तो उसको अबकी बार अपनी जेब में एक सन्तरा मिल गया। उसने वह सन्तरा अपनी जेब से निकाल लिया।

पर राजा यह देख कर बहुत परेशान हो गया कि यह सन्तरा उसकी जेब में आया कहाँ से? क्योंकि उसने तो सन्तरा छुआ भी नहीं था। उसको बहुत शर्म आयी।

आलसी लड़के ने कहा कि आप चिन्ता न करें क्योंकि यही राजकुमारी के साथ भी हुआ जिसने यह जाने बिना एक बेटे को जन्म दिया कि उसका पिता कौन था।

इस तरह उस मछली के ऊपर पड़ा हुआ जादू टूट गया और अब वह एक सुन्दर राजकुमार बन गयी और उसने राजकुमारी से शादी कर ली।

और वह आलसी लड़का एक बहुत ही अमीर आदमी बन कर अपने घर लौट गया।

7 तीन सुनहरे सन्तरे[22]

शाप की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के स्पेन देश की लोक कथाओं से ली गयी है। इस लोक कथा में एक जादूगर तीन लड़कियों को और उनकी मॉ को सन्तरों में बदल देता है।

वे तीनों लड़कियॉ जब तक अपनी शक्ल में नहीं आ सकतीं जब तक वे बिना नीचे गिराये न तोड़ी जायें या फिर उन सन्तरों को तोड़ते ही जब वे उनमें से निकलें तो उनको रोटी या पानी न मिले। और यह तो बहुत ही मुश्किल काम था।

तो फिर वे उस जादूगर के जादू से कैसे छूटीं। आओ देखते हैं।

डूबते हुआ सूरज का सुनहरा साया एक सादे से कलई किये गये मकान पर पड़ रहा था। उसी समय तीन भाई सैनटियागो, टोमस और मैटियास[23] खेतों से अपने घर की तरफ लौट रहे थे।

[22] The Three Golden Oranges – a folktale from Spain, Europe. Adapted from the book :
"The Three Golden Oranges", by Almaflor Ada. NY, Atheneum Books for Young Readers. 1999. unnumbered 30 pages. A 1-story picture book.
its author writes – "As it has been said in Spanish "Colorin coloradoeste cuento se ha acabado" – this story entered by a silver path and exited through a golden road". His story of popular Blancaflor, the youngest of the three sisters, who is bewitched and held prisoner inside an orange, has taken many forms over the time. In some versions Blancaflor is held by her own father for defying him, but her transformation into a dove and the presence of a straight pin in her hand. That is the key to disenchant. Matias removes it.

[23] Santiago, Tomas and Matias – names of the three brothers

दोनों बड़े भाई आगे आगे जल्दी जल्दी चल रहे थे क्योंकि उनके पास ले जाने के लिये कोई बोझा नहीं था और उनका छोटा भाई उनके पीछे धीरे धीरे चल रहा था क्योंकि उसके कन्धे पर गेंहू की बालियाँ रखी हुई थीं।

जब वे तीनों घर पहुँचे तो उनकी माँ सैरा ने कहा — "बैठ जाओ बेटे और थोड़ा आराम कर लो। मैं तुम तीनों से कुछ बात करना चाहती हूँ।"

जब वे थोड़ी देर आराम कर चुके तो वह बोली — "मैं अब दादी बनना चाहती हूँ। इसलिये मैंने तय कर लिया है कि अब समय आ गया है जबकि तुम्हारे लिये लड़कियाँ ढूँढी जायें ताकि तुम लोग अपना परिवार शुरू कर सको। इसलिये तुम लोग अपने लिये तुरन्त ही लड़कियाँ ढूँढना शुरू कर दो।"

तीनों भाइयों ने कुछ सोचते हुए एक दूसरे की तरफ देखा। वे जानते थे कि सारी घाटी में जो पहाड़ों से ले कर समुद्र तक फैली हुई थी एक भी लड़की ऐसी नहीं थी जिसकी शादी न हुई हो।

जब वे अगले दिन खेतों पर गये तब भी यह मामला उनके दिमाग में घूम रहा था। मैटियास बोला — "क्यों न हम चल कर उस बुढ़िया से पूछें जो समुद्र के किनारे वाली पहाड़ी पर रहती है।"

मैटियास के आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसके भाई उसकी कही बात पर राजी हो गये क्योंकि वे तो कभी उसकी बात सुनते भी नहीं थे।

तीनों भाई उस पहाड़ी पर जाने वाले तंग रास्ते पर चढ़ते चले गये जहाँ से समुद्र दिखायी देता था। वह बुढ़िया अपनी गुफा के सामने जहाँ वह रहती थी बैठी बैठी ऊन कात रही थी।

उसने अपना काम जारी रखते हुए उन भाइयों से पूछा — "कैसे आये हो?"

मैटियास ने सादे और नम्र तरीके से उसको बताया — "हम शादी करना चाहते हैं और इस बारे में हम आपसे सलाह लेने आये हैं।"

बुढ़िया ने पूछा — "और तुमको कैसी पत्नियाँ चाहिये?"

सैनटियागो तुरन्त बोला — "मुझको बहुत सुन्दर लड़की चाहिये।"

टोमस भी तुरन्त बोला — "मुझे ऐसी लड़की चाहिये जो अमीर हो और सुन्दर हो।"

बुढ़िया ने देखा कि मैटियास कुछ नहीं बोला तो उसने उसकी तरफ मुँह कर के पूछा — "और तुम्हें?"

मैटियास बोला — "मुझे तो एक ऐसी जवान लड़की चाहिये जो दयालु हो, खुशमिजाज हो और ऐसी हो जिसको मैं बहुत प्यार कर सकूँ।"

बुढ़िया जवाब में बोली — "तुममें से हर एक को तुम्हारी पसन्द की लड़की मिल जायेगी पर तुम लोगों को इसके लिये एक साथ काम करना पड़ेगा।"

फिर वह एक नंगी ढालू जमीन जिसकी चोटी बादलों में छिपी हुई थी की तरफ इशारा करते हुए बोली — "तीन दिन तक तुम लोग उस पहाड़ी की तरफ जाओगे। उस पहाड़ी के दूसरी तरफ एक किला है जो सन्तरे के बाग से घिरा हुआ है।

उसमें सारे सन्तरे अभी हरे होंगे पर उनमें से एक पेड़ पर केवल एक शाख पर तुमको तीन सुनहरे सन्तरे लटके दिखायी देंगे।

वे तीनों सन्तरे तुम शाख को बिना कोई नुकसान पहुँचाये तोड़ लेना और तोड़ कर उनको मेरे पास ले आना तो तुमको अपनी अपनी पसन्द की पत्नियाँ मिल जायेंगी। पर याद रखना अगर तुमने मेरी बात नहीं मानी तो पछताओगे।"

तीनों भाई अगले दिन के सफर की तैयारी करने के लिये जल्दी ही घर लौट आये। अगले दिन उन सबने अपनी अपनी जेबें गिरियों, खजूरों और डबल रोटियों[24] से भरीं और अपने सफर पर चल दिये।

वे सारे दिन चले। जब रात हुई तो रात काटने के लिये वे एक अनाज रखने वाली जगह में रुक गये। वहाँ वे एक भूसे का बिस्तर बना कर सो गये।

[24] Nuts (see their picture above), dates and bread

पर थोड़ी ही देर में सैनटियागो चाँद की एक किरन के अन्दर आने से जाग गया। वह किरन उस अनाजघर के दरवाजे से हो कर अनाजघर में आ रही थी।

उसने अपने आपसे पूछा — "मैं यहाँ अपने भाइयों के साथ अपना समय क्यों बर्बाद कर रहा हूँ? जब हमको सन्तरे मिलेंगे तो शायद हम लोग उनमें से सबसे अच्छा सन्तरा लेने के लिये लड़ें।

अगर मैं वहाँ सबसे पहले पहुँच जाता हूँ तो मैं उनमें से जो भी मुझे सबसे अच्छा सन्तरा लगेगा मैं वह सन्तरा ले लूँगा। फिर मेरे भाई लोग उन दो सन्तरों के ऊपर लड़ते रहें।"

यह सोच कर सैनटियागो उठा और सारी रात चलता रहा। तीसरे दिन सुबह सवेरे ही वह किले पर आ गया। तब तक सूरज की किरनें भी उस सन्तरे को बाग पर नहीं पड़ी थीं।

सन्तरे के सफेद फूल सुबह की रोशनी में चमक रहे थे। और जैसा उस बूढी स्त्री ने कहा था सारे सन्तरे अभी भी हरे थे।

सैनटियागो उन सुनहरे सन्तरों की खोज में लग गया। तभी एक पेड़ की सुनहरी चमक ने उसका ध्यान खींचा जो किले के दरवाजे के पास ही लगा था।

वे तीनों सन्तरे पेड़ की सबसे ऊँची शाख पर असली सोने के सन्तरों की तरह चमक रहे थे। यह शाख बहुत ऊँची थी वह उस शाख तक नहीं पहुँच सकता था पर वह उनको छोड़ने वाला भी नहीं था।

उसने पेड़ को पकड़ा और यह देखने की कोशिश की कि वह उसको हिला कर वे सन्तरे तोड़ सकता था कि नहीं। पर उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसने देखा कि उसका तो हाथ ही उस पेड़ के तने से चिपक गया। वह तो वहाँ फँस गया था।

उसी समय किले में से निकल कर एक बूढ़ा बहुत सारे चौकीदारों के साथ वहाँ आया। उसने अपनी जादू की छड़ी उस पेड़ से धीरे से छुआई और सैनटियागो को पेड़ से छुड़ा दिया। पर फिर तुरन्त ही उसको उन चौकीदारों ने पकड़ लिया और एक तहखाने में डाल दिया।

उस तहखाने से सैनटियागो ने सुना कि वह बूढ़ा अपने आपसे रो रो कर कह रहा था — "ओ मेरी प्यारी पत्नी, मेरी कीमती बेटियाँ। तुम कब तक इस तरह से कैद रहोगी?"

उधर अगले दिन टोमस और मैटियास सो कर उठे तो उन्होंने देखा कि सैनटियागो तो उनको धोखा दे कर भाग गया था। वे उठ कर अपने सफर पर चल दिये। उस दिन शाम को रात को ठहरने के लिये उनको पहाड़ी के एक तरफ एक गुफा मिली सो वे लोग वहीं ठहर गये।

जब मैटियास सो गया तो टोमस दबे पाँव उठा और यह सोच कर वहाँ से चल दिया — "सैनटियागो तो पहले ही चला गया है पर मैं उसको पकड़ लूँगा। मैं इस बेवकूफ मैटियास को यहीं छोड़ जाऊँगा फिर यह जो चाहे करे।"

तीसरे दिन दोपहर को टोमस किले पर पहुँच गया पर उसको सैनटियागो वहाँ कहीं नहीं दिखायी दिया। टोमस को वहाँ की सन्तरों की खुशबू बहुत ही अच्छी लगी।

उसने भी देखा कि जैसा कि उस बुढ़िया ने कहा था अभी सारे सन्तरे कच्चे थे। तभी उसकी निगाह किले के दरवाजे के पास लगे एक पेड़ पर पड़ी जिससे रोशनी निकल कर आ रही थी। वह उधर ही खिंचा चला गया।

वहाँ जा कर उसने देखा कि वह रोशनी तो उस पेड़ पर लगे तीन सुनहरी सन्तरों में से आ रही थी। उन सुनहरे सन्तरों को देख कर तो वह पागल सा हो गया और पेड़ की तरफ लपका। जैसे ही वह पेड़ पर चढ़ने के लिये पेड़ से लिपटा उसका सारा शरीर पेड़ से चिपक गया और वह तो हिल भी नहीं सका।

कुछ पल बाद ही वह पहले वाला बूढ़ा फिर वहाँ अपने चौकीदारों के साथ आया और अपनी जादू की छड़ी टोमस के शरीर से छुआ कर उसको पेड़ पर से छुड़ा लिया।

उसके चौकीदारों ने उसको भी ले जा कर उसी तहखाने में डाल दिया जहाँ उसका बड़ा भाई सैनटियागो पड़ा हुआ था।

इस बार दोनों ने उस बूढ़े को रोते हुए सुना — "ओ मेरी पत्नी, ओ मेरी कीमती बेटियों। एक भयानक जादूगर ने तुमको इस तरह कैद कर रखा है। कब आजाद होगी तुम?"

उधर अगले दिन जब मैटियास सो कर उठा तो उसने देखा कि टोमस भी उसको छोड़ कर भाग गया है। उसने सोचा कि अब उसको जल्दी करनी चाहिये क्योंकि उस समुद्र के किनारे वाली बुढ़िया ने कहा था कि सबको साथ साथ रहना।

फिर भी किले पर पहुँचते पहुँचते उसको तीसरे दिन का तीसरा पहर हो गया। उसको भी सन्तरों के फूलों की खुशबू आयी तो उनका पीछा करते करते वह भी उन सुनहरे सन्तरों के पेड़ के सामने आ पहुँचा।

उसने सोचा कि उसको वे सन्तरे जल्दी से तोड़ लेने चाहिये और फिर उसको अपने भाइयों को ढूँढना चाहिये। वह सन्तरे तोड़ने के लिये उछला और उछल कर वह शाख पकड़ ली जिस पर सन्तरे लगे हुए थे।

उसके पकड़ने से वह शाख टूट गयी और पेड़ चिल्ला उठा। उस पेड़ के चिल्लाते ही वह बूढ़ा आदमी अपने कई चौकीदारों के साथ एक बार फिर से बाहर आ गया।

वह बूढ़ा आदमी बोला — "तुमने तो सन्तरे पहले ही तोड़ लिये इसलिये अब मैं तुमको गिरफ्तार नहीं कर सकता।"

मैटियास ने पूछा — "मेरे भाई कहाँ हैं?"

बूढ़ा आदमी बोला — "ये सन्तरे तुम्हारे लिये इस महल के सारे दरवाजे अपने आप खोल देंगे। तुम केवल डबल रोटी और पानी ले लो और कुछ नहीं। और हाँ देखो इन सन्तरों को कोई नुकसान नहीं

पहुँचाना नहीं तो वे सारे दरवाजे अपने आप ही बन्द भी हो जायेंगे।"

मैटियास किले की तरफ दौड़ा तो उस बूढ़े के कहे अनुसार किले के लोहे के भारी दरवाजे उसके आगे आगे अपने आप खुलते चलते गये।

किले के अन्दर किले की ऊँची ऊँची दीवारें बढ़िया परदों से ढकी हुई थीं। मैटियास का ध्यान एक खास परदे की तरफ गया जिसमें एक नौजवान लड़की एक घाटी में एक सन्तरे के बागीचे में खड़ी थी।

हालाँकि उसका मन वहाँ से हटने के लिये नहीं कर रहा था पर फिर भी वह अपने भाइयों की खोज जारी रखने के लिये वहाँ से आगे बढ़ा। आखिर उसने उनको पा ही लिया। उस तहखाने का दरवाजा जिसमें उसके भाई कैद थे अपने आप ही खुल गया था।

सैनटियागो और टोमस दोनों उसके सामने गिड़गिड़ाये — "तुमको अकेला छोड़ने के लिये हमें माफ कर दो।"

मैटियास बोला — "अब इन सब बातों का कोई मतलब नहीं है। अब तो बस हमें इन सन्तरों को समुद्र के पास रहने वाली उस बुढ़िया के पास ले कर जल्दी ही पहुँचना चाहिये।"

सो सैनटियागे और टोमस उस किले की शान से प्रभावित होते हुए बेमन से मैटियास के पीछे पीछे हो लिये।

मैटियास बोला — “हमको किसी चीज़ को छूना नहीं है। सफर के लिये केवल डबल रोटी और पानी ले लो।”

पर जब वे मैटियास के पीछे किले के बाहर जा रहे थे तो उन्होंने अपनी जेबें जो भी सोने और चाँदी की चीज़ें उनके हाथ लगीं उनसे भर लीं।

मैटियास जल्दी जल्दी बिना खाने और पीने के लिये रुके चला जा रहा था। हालाँकि सूरज बहुत गर्म था पर सन्तरे ताजा ही रहे।

पर इससे पहले कि वे किले से बहुत दूर पहुँचें मैटियास के दोनों भाइयों ने अपनी डबल रोटी पहले ही खा ली थी और अपना सारा पानी भी खत्म कर लिया था। उन्होंने यह भी नहीं सोचा कि सफर के अभी दो दिन और बचे हैं।

वह रात तीनों भाइयों ने एक चरवाहे की झोंपड़ी में बिताने का निश्चय किया पर सैनटियागो को रात भर नींद नहीं आयी।

वह इस बात से बहुत दुखी था कि उसका सबसे छोटा भाई वे सन्तरे ले कर जा रहा था और वह इस काम को नहीं कर सका जबकि वह सबसे बड़ा था।

सो आधी रात को वह उठा और अपने छोटे भाई के हाथ में लगी सन्तरों की शाख में से सबसे बड़ा सन्तरा तोड़ा और अपने सफर पर चल दिया।

सैनटियागो सारी रात चला और फिर अगली सारी सुबह चला। जल्दी ही सूरज ज़ोर से चमकने लगा और सैनटियागे को प्यास लग आयी। उसको लगा कि वह तो प्यास के मारे मर ही जायेगा।

जब वह प्यास और नहीं सह सका तो उसने वह रसीला सन्तरा खाने का निश्चय किया। पर जब उसने सन्तरे को बीच में से फाड़ा तो उसमें से एक बहुत ही सुन्दर जवान लड़की निकल पड़ी।

सन्तरे में से निकलते ही उसने उससे डबल रोटी मॉगी।

सैनटियागो केवल यही कह सका — "डबल रोटी तो मेरे पास नहीं है वह तो मैंने सारी खा ली।" फिर उसने उससे थोड़ा सा पानी मॉगा।

वह फिर बोला — "मैंने तो पानी भी सारा पी लिया।"

"तो मैं अपने सन्तरे में वापस जाती हूँ और फिर अपने पेड़ में।"

यह कह कर वह लड़की उसी सन्तरे में गायब हो गयी और फिर सन्तरा भी उसके हाथ से निकल कर गायब हो गया।

उसके जाने के बाद बाद वह धूल के एक तेज़ तूफान में फॅस गया। अचानक उसके चारों तरफ किले की दीवारें खड़ी हो गयीं।

उसकी कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि यह सब क्या हो रहा था। इतने में ही वे चौकीदार फिर से आ गये और उन्होंने उसको फिर से पकड़ कर उसी तहखाने में डाल दिया।

इस बीच टोमस सुबह उठा। जब उसने देखा कि सैनटियागो एक सन्तरा ले कर वहाँ से गायब है तो उसने भी अपने बड़े भाई की देखा देखी वही करने की सोची।

उसने भी बचे हुए दो सन्तरों में से बड़ा वाला सन्तरा शाख पर से तोड़ा और वहाँ से चल दिया। मैटियास आराम से सोता रहा।

टोमस को भी पथरीला रास्ता और खूब गर्म सूरज मिला। जब उससे भी वह गर्मी नहीं सही गयी तो उसने भी मरने की बजाय सन्तरा खाना ज़्यादा अच्छा समझा।

जब उसने सन्तरा छीलना शुरू किया वह भी आश्चर्यचकित रह गया जब अचानक ही उसके सामने एक बहुत ही सुन्दर लड़की उसमें से निकल कर खड़ी हो गयी।

इतनी सुन्दर लड़की तो उसने पहले कभी देखी नहीं थी। उसके कीमती जवाहरातों और कपड़ों से लग रहा था कि वह बहुत अमीर थी।

निकलते ही उस लड़की ने उससे कहा — "मेहरबानी कर के मुझे थोड़ी डबल रोटी दो।"

टोमस तो बस इतना ही बोल सका — "मेरे पास तो कोई डबल रोटी नहीं है। मैंने तो अपनी सारी डबल रोटी खा ली।"

वह लड़की फिर बोली — "तो फिर थोड़ा सा पानी ही दे दो।"

वह दुखी हो कर बोला — "मेरे पास तो वह भी नहीं है। मैंने तो वह भी सारा पी लिया।"

वह लड़की बोली — "तब मैं पहले अपने सन्तरे में और फिर अपने पेड़ में वापस जाती हूँ।" कह कर वह भी उस सन्तरे में गायब हो गयी और सन्तरा वापस पेड़ पर चला गया।

उसके गायब हो जाने के बाद टोमस ने भी अपने आपको धूल के तूफान में घिरा पाया। उसके चारों तरफ भी किले की दीवार खड़ी हो गयीं और वे चौकीदार उसको भी पकड़ कर उसी तहखाने में डाल आये जहाँ सैनटियागो पड़ा हुआ था।

जब मैटियास सुबह जागा तो उसने देखा कि उसकी शाख पर अब केवल एक ही सन्तरा रह गया है। वह अपने भाइयों के लिये बहुत दुखी हुआ। उसने सोचा कितने जल्दबाज हैं वे लोग।

डबल रोटी और पानी जो उसने बचा कर रखा था उसके सहारे मैटियास वह गर्म सूखी घाटी पार कर गया। शाम तक वह समुद्र के पास और फिर उस बूढ़ी स्त्री की गुफा तक पहुँच गया।

वह बूढ़ी स्त्री बोली — "मैं देख रही हूँ कि तुम तो पूरी शाख की शाख ही तोड़ लाये हो और तुमने तीनों सन्तरों को अलग अलग कर दिया है।

क्योंकि तुमने मेरा कहा नहीं माना इसलिये इससे जो आफत आने वाली है उससे मैं तुममें से किसी को नहीं बचा पाऊँगी।"

मैटियास ने पूछा — "पर मेरी पत्नी का क्या होगा? और मेरे भाई?"

वह बूढ़ी स्त्री बोली — "अभी सब कुछ खत्म नहीं हुआ है। तुम अपने घर वापस जाओ और अपने खेतों पर जाओ। इन्तजार करो और हमेशा अपने दिल की सुनो।" इतना कह कर वह अपनी गुफा में चली गयी।

मैटियास दुखी हो कर अपने घर लौट आया और अपनी माँ को आ कर उसने अपने सफर का हाल और अपनी मुसीबतों के बारे में बताया।

हालाँकि सैरा अपने बड़े बेटों के गायब हो जाने के बारे में सुन कर बहुत दुखी हुई पर वह मैटियास को वापस आया देख कर खुश भी थी।

हर सुबह जब मैटियास खेतों पर चला जाता तो एक सफेद फाख्ता आ कर सैरा के कन्धे पर बैठ जाती जैसे वह उसको तसल्ली दे रही हो। जब सैरा अपने घर का काम करती रहती तो वह फाख्ता उसके साथ सारा दिन रहती। इससे सैरा को ऐसा लगता कि सब कुछ ठीक हो जायेगा।

एक सुबह जब गर्मियाँ खत्म हो रही थीं तो मैटियास खेत छोड़ कर जल्दी ही घर आ गया और माँ से बोला — "माँ मैं एक बार फिर से उस किले पर जाना चाहता हूँ जहाँ में पहले गया था। मैं जा कर देखता हूँ कि मैं अपने बड़े भाइयों को वहाँ फिर से पा सकता हूँ या नहीं।"

फिर उसकी निगाह उस फाख्ता पर जा कर ठहर गयी जो उसकी माँ के कन्धे पर बैठी हुई थी।

उसने माँ से पूछा — "माँ यह फाख्ता कहाँ से आयी?"

माँ बोली — "यह तो मेरे पास रोज आती है और जब तुम खेतों पर होते हो तो यह सारा दिन मेरे साथ ही रहती है। मैं इसको ब्लैनक्विटा[25] कह कर पुकारती हूँ।"

मैटियास ने अपना हाथ बढ़ाया तो वह फाख्ता उसके हाथ पर आ कर बैठ गयी। वह उसके ऊपर प्यार से हाथ फेरने लगा तो उसने उसकी गर्दन में एक काँटा सा चुभा हुआ महसूस किया।

उसने वह काँटा बड़ी सावधानी से खींच कर निकाल दिया तो वह फाख्ता तो एक लड़की बन गयी।

वह लड़की बोली — "मेरा नाम ब्लैन्काफ्लोर[26] है" हम लोगों को यहाँ से तुरन्त ही चलना चाहिये। हमारे पास समय नहीं है। मैं खुद तुम्हारे साथ उस किले तक चलूँगी।"

सो वे दोनों किले की तरफ चल दिये। इस बार वहाँ तक का सफर मैटियास को बहुत छोटा लगा।

जब वे दोनों किले की तरफ जा रहे थे तो ब्लैन्काफ्लोर ने मैटियास को बताया कि कैसे उसकी दो बहिनें और माँ और वह खुद भी एक नीच जादूगर के शाप में जकड़ी हुई थीं क्योंकि उसके पिता

---

[25] Blanquita – name of the dove

[26] Blancaflor – name of the princess

ने अपनी किसी भी लड़की की शादी उससे करने से मना कर दिया था।

वह लड़की आगे बोली — "यह तो स्त्री का अधिकार है न कि वह किसी से भी शादी करे जिससे उसका मन करे। क्या तुम ऐसा नहीं सोचते?"

मैटियास की समझ में नहीं आया कि वह उसको उसकी इस बात का क्या जवाब दे जो वह उसको चुन ले सो वह चुप रह गया।

जब वे उस सन्तरे के बाग में पहुँच गये तो उन्होंने देखा कि बाग के सारे सन्तरे पक गये हैं पर ब्लैन्काफ्लोर मैटियास को सीधे उसी पेड़ के पास ले गयी जिस पेड़ की शाखा वह पहले तोड़ कर लाया था। वहाँ अब दो सन्तरे लटके हुए थे।

मैटियास ने ब्लैन्काफ्लोर को ऊपर उठाया ताकि वह उस शाख तक पहुँच सके। ब्लैन्काफ्लोर ने सावधानी से वे दोनों सन्तरे तोड़ लिये और उनको घास पर रख दिया।

जैसे ही उसने उनको घास पर रखा वे दोनों दो लड़कियों में बदल गये। ये दोनों लड़कियाँ ब्लैन्काफ्लोर की बहिनें थीं। उसी समय वह बूढ़ा भी किले में से बाहर आ गया और अपनी तीनों बेटियों को देख कर बहुत खुश हुआ।

इतने में वह पेड़ भी हिला और सबकी आँखों के सामने देखते देखते वह एक स्त्री बन गया। तीनों बहिनें चिल्लायीं "माँ"।

उस बूढ़े आदमी ने भी अपनी पत्नी को गले से लगाया और अपनी बेटियों को उनके दोनों गालों पर चूमा।

ब्लैन्काफ्लोर बोली — "मेरे माता पिता से मिलो और मेरी बहिनों से – ज़ैनाइडा और ज़ोराइडा[27]।"

मैटियास बोला — "अब मुझे अपने भाइयों को ढूँढना है।"

बूढ़े ने किले के दरवाजे की तरफ इशारा करते हुए कहा — "अब किले के सारे दरवाजे खुले हैं तुम अन्दर जा सकते हो।"

मैटियास ने देखा कि उसके भाई सैनटियागो और टोमस दोनों उस किले के दरवाजे में से बाहर चले आ रहे हैं।

मैटियास और ब्लैन्काफ्लोर दोनों ने दोनों भाइयों को नमस्ते की पर जब सैनटियागो ने ज़ैनाइडा से पूछा कि क्या वह उससे शादी करेगी तो उसने जवाब दिया — "एक बेवकूफ बेकार के आदमी से शादी करने की बजाय तो मैं अकेला रहना ज़्यादा पसन्द करूँगी।"

और जब टोमस ने ज़ोराइडा से पूछा कि क्या वह उससे शादी करेगी तो उसने भी यही कहा — "मैं किसी बेवकूफ लालची आदमी से शादी करने की बजाय अकेला रहना ज़्यादा पसन्द करूँगी।" इसलिये महल में केवल एक ही शादी हुई।

[27] Zenaida and Zoraida – names of the two elder sisters out of the three daughters of the King

शादी के बाद मैटियास और ब्लैन्काफ्लोर दोनों अपने उस सफेद घर को लौट आये जो समुद्र के पास था जहाँ की खिड़कियों के पत्थरों पर उन्होंने जिरेनियम के फूलों से भरे गमले रखे और सैरा का दिल खुशियों से भर दिया।

किसी को नहीं पता कि सैनटियागो और टोमस का क्या हुआ पर अगर हमें उनके बारे में कुछ भी पता चला तो हम तुम लोगों को उनके बारे में जरूर बतायेंगे।

8 चुहिया राजकुमारी[28]

यह लोक कथा यूरोप के फ़िनलैंड देश की एक बहुत ही लोकप्रिय कथा है। फ़िनलैंड यूरोप के नौर्स देशों के पाँच देशों[29] में से एक है। इस लोक कथा में एक राजकुमारी को जादू से चुहिया बना दिया जाता है। उसका यह जादू तभी टूटता जब उससे कोई शादी करता।

पर देखने वाली बात यह है कि एक चुहिया से शादी कौन करेगा? चलो देखते हैं कि इस चुहिया से शादी कौन करता है और कौन इसको उसके जादू से आजाद कर के राजकुमारी के रूप में लाता है।

एक बार बहुत दूर उत्तर की जमीन पर फ़िनलैंड देश में एक किसान रहता था। उसके तीन बेटे थे।

जब वे बड़े हो गये तो उसने अपने तीनों बेटों से कहा — "बेटा अब तुम लोग बड़े हो गये हो सो अब तुम लोगों को शादी कर लेनी चाहिये। तुम लोग जाओ और अपने अपने लिये पत्नी ढूँढो।

---

[28] The Mouse Princess – A folktale from Finland, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=245
Adapted by Mike Lockett

[29] Norse, Nordic or Scandinavian coutries are five. They are locted in the far North of Europe continent. These five countries are – Denmark, Finland, Iceland, Norway and Sweden and

मैं तुम तीनों को बहुत प्यार करता हूँ और मैं चाहता हूँ कि तुम लोगों को अच्छी अच्छी पत्नियाँ मिलें।

इसलिये जो भी लड़कियाँ तुम लोग अपने लिये चुनोगे पहले मैं उनका इम्तिहान लूँगा कि वे तुम्हारे लिये अच्छी पत्नियाँ बनेंगी या नहीं। उसके बाद ही तुमको अपनी चुनी हुई लड़की से शादी की इजाज़त मिलेगी।"

उसके बेटों ने पूछा — "पर वे हमें मिलेंगी कहाँ पिता जी।"

पिता बोला — "मैं चाहता हूँ कि तुम तीनों एक एक पेड़ काटो और फिर जिस दिशा में तुम्हारा पेड़ कट कर गिरे तुम उसी दिशा में अपनी पत्नी को ढूँढने जाओ।

अगर तुमको उस दिशा में बहुत दूर भी जाना पड़े तो मुझे यकीन है कि तुमको अपनी पत्नी मिल जायेगी।"

सबसे बड़े बेटे ने जो पेड़ काटा तो वह पेड़ पूर्व की तरफ गिरा। वह बोला — "यह तो बहुत अच्छा है। मुझे मालूम है कि पूर्व में एक बहुत प्यारी सी देहाती लड़की रहती है। मैं उसके घर जाऊँगा उसको अपने साथ शादी के लिये पटाऊँगा और फिर उससे शादी कर लूँगा।"

बीच वाले बेटे का काटा हुआ पेड़ पश्चिम की तरफ गिरा तो वह भी बोला — "यह तो बहुत अच्छा है। मुझे मालूम है कि पश्चिम में एक बहुत प्यारी सी देहाती लड़की रहती है। मैं उसके घर

जाऊँगा उसको अपने साथ शादी के लिये पटाऊँगा और फिर उससे शादी कर लूँगा।"

जब तीसरे सबसे छोटे बेटे ने अपना पेड़ काटा तो वह उत्तर की तरफ गिरा। यह देख कर उसके दोनों बड़े भाई हँस दिये। क्योंकि वे जानते थे कि उत्तर की तरफ तो कोई लड़की ही नहीं है। उधर की तरफ तो केवल जंगल और बर्फ थी।

वे बोले — "तुझको तो किसी रेनडियर[30] या भेड़िये से शादी करनी पड़ेगी। क्योंकि उत्तर में तो कोई लड़की ही नहीं है।"

फिर भी सबसे छोटा बेटा जिसका नाम माइकल[31] था अपने पिता की इच्छा के अनुसार अपनी पत्नी ढूँढने के लिये उत्तर की तरफ चल दिया।

दोनों बड़े भाइयों ने अपने पिता का खेत छोड़ा और उस लड़की के पिता के लिये कुछ भेंटें लीं जिससे वे शादी करना चाहते थे और कुछ भेंटें अपनी होने वाली पत्नियों के लिये लीं ताकि वे उनको खुश कर सकें और अपनी अपनी दिशाओं में चल दिये।

माइकल जंगल में होता हुआ उत्तर की तरफ चल दिया। हालाँकि वह जानता था कि उसको तो कोई लड़की मिलने वाली थी नहीं जो उसकी पत्नी बन सके फिर भी वह उस जंगल में बहुत दूर

[30] Reindeer, also known as caribou in North America, is a species of deer native to arctic, sub-arctic, Tundra etc regions. See the picture.
[31] Michael (Mikael) – name of the youngest son

तक चलता ही चला गया। आगे जा कर वह एक झोंपड़ी के पास आ पहुँचा।

उस झोंपड़ी को देख कर उसका दिल तेज़ी से धड़कने लगा। उसको लगा कि शायद वह उत्तर में अपनी पत्नी पा सके। उसने झोंपड़ी का दरवाजा खटखटाया तो दरवाजा खुला। वह उसके अन्दर घुसा तो उसने देखा कि झोंपड़ी तो खाली थी।

वहाँ तो बस एक छोटी सी चुहिया एक मेज पर बैठी थी। माइकल अपने आपसे बोला — "अरे यहाँ तो कोई नहीं है।"

उस छोटी चुहिया ने कहा — "मैं यहाँ हूँ माइकल।" वह वहाँ मेज पर बैठी अपने छोटे पंजों से अपनी मूँछें सँवार रही थी।

"पर तुम तो एक छोटी सी चुहिया हो। मुझे तो आशा थी कि मुझे यहाँ एक सुन्दर सी लड़की मिलेगी जिसको मैं अपनी पत्नी बनाऊँगा।"

तब उसने उसको अपनी और अपने भाइयों की शादी के बारे में अपने पिता की इच्छा बतायी।

फिर वह बोला — "मुझे मालूम है कि वे लोग तो शादी कर ही लेंगे। पर मैं भी यह नहीं चाहता कि मेरे पिता मेरी तरफ से नाउम्मीद हों कि मैं अपनी पत्नी नहीं ढूँढ सका।"

छोटी चुहिया बोली — "तुम मुझसे अपनी पत्नी बनने के लिये क्यों नहीं कहते? यहाँ उत्तर में तो कोई लड़की रहती नहीं पर मैं तुम्हें प्यार करूँगी और तुम्हारे लिये वफादार भी रहूँगी।"

माइकल ने उस छोटी चुहिया को अपने हाथों में उठाया तो उसने माइकल के लिये अपनी मीठी आवाज में गाना शुरू कर दिया।

माइकल उसको और पास से देखने के लिये अपने चेहरे तक ले कर आया तो वह चुहिया उसकी उँगलियों पर चढ़ गयी और अपनी छोटी सी नाक उसके गालों पर मलने लगी।

माइकल उस छोटी सी चुहिया को पसन्द किये बिना नहीं रह सका। इसके अलावा वह अपने पिता को नाउम्मीद भी करना नहीं चाहता था।

वह बोला — "ठीक है ओ छोटी चुहिया। मैं अपने पिता से जा कर कह दूँगा कि मुझे अपनी पत्नी मिल गयी।"

यह सुन कर चुहिया बोली — "पर तुम्हारे लिये एक चुहिया से शादी करना बहुत मुश्किल होगा। ऐसा करते हैं कि मैं यहीं ठहरती हूँ तब तक तुम अपने पिता को इस खबर के लिये तैयार कर के आओ।"

माइकल की समझ में आ गया कि वह चुहिया ठीक कह रही थी सो वह चुहिया को वहीं छोड़ कर अकेला ही घर वापस लौट गया।

सबसे बड़े भाई ने कहा — "मेरी वाली की तो बहुत सुन्दर आँखें हैं।"

बीच वाले भाई ने कहा — “और मेरी वाली के तो बाल और मुस्कान दोनों ही बहुत सुन्दर है। तुमको शादी करने के लिये कोई लोमड़ी या भेड़िया मिला क्या?”

माइकल ने उनसे इतनी ज़ोर से कहा ताकि उसके पिता भी सुन लें — “तुम लोग मेरी चिन्ता मत करो। मुझे तो एक बहुत ही प्यारी और नाज़ुक सी चीज़ मिल गयी है। और वह मखमल के कपड़े पहनती है।”

“मखमल के कपड़े?” कह कर उसके दोनों बड़े भाई ज़ोर से हॅस पड़े। “तुमने तो लगता है कि उस उत्तरी जंगल और बर्फ में कोई राजकुमारी ढूँढ ली है।”

माइकल बोला — “हॉ मखमल के कपड़े। बिल्कुल राजकुमारियों की तरह से। और जब वह मेरे लिये गाती है तो उसकी मीठी आवाज तो मुझे बहुत ही अच्छी लगती है।”

यह सुन कर उसके दोनों बड़े भाई उससे जलने लगे।

कुछ दिन बाद पिता बोला — “मैं अभी भी यह तय नहीं कर पा रहा हूँ कि किसको सबसे अच्छी पत्नी मिली है। मैं चाहता हूँ कि

मेरी हर एक बहू मेरे लिये डबल रोटी बनाये ताकि मैं यह देख सकूँ कि वह तुमको ठीक से खाना खिला सकेगी भी या नहीं।”

सुनते ही दोनों बड़े भाई बोले — “मेरी वाली सबसे अच्छी डबल रोटी बनायेगी। और तुम्हारी राजकुमारी?”

माइकल बोला — “यह तो मुझे उससे पूछना पड़ेगा।”

असल में तो वह चिन्ता कर रहा था कि उसकी चुहिया डबल रोटी बनायेगी भी कैसे। फिर भी वे तीनों भाई एक साथ घर से निकल पड़े।

छोटी चुहिया ने जब माइकल को वापस आते देखा तो वह तो गाने नाचने लगी। और जब उसने आ कर उसे यह बताया कि उसको डबल रोटी बनानी है तो वह हॅस दी।

माइकल बोला — “मैं तो तुमसे यह कहते हुए डर रहा था कि तुम डबल रोटी बना दो।”

वह फिर हॅसी और एक छोटी सी घंटी बजा कर बोली — “तुमको तुम्हारी डबल रोटी जरूर मिलेगी माइकल।”

माइकल ने देखा कि छोटी चुहिया के घंटी बजाते ही दरवाजे से सैंकड़ों की तादाद में चूहे चले आ रहे हैं। छोटी चुहिया ने उनसे कहा — “तुम सब जाओ और गेहॅू के सबसे बढ़िया वाले दाने ले कर आओ।”

वे सब चूहे तुरन्त ही वहॉ से भाग गये और कुछ ही देर में गेहॅू के सबसे बढ़िया वाले दाने ले कर वहॉ आ गये। छोटी चुहिया ने उन गेहॅू के दानों से डबल रोटी बनानी शुरू कर दी।

माइकल बड़े आश्चर्य से उस छोटी चुहिया को उन गेहॅू के दानों से डबल रोटी बनाते देखता रहा।

अगले दिन तीनों भाई अपनी अपनी डबल रोटियाँ ले कर अपने पिता के पास पहुँचे। सबसे बड़ा भाई राई[32] की बनी डबल रोटी ले कर आया था। बीच वाला भाई जौ की बनी डबल रोटी ले कर आया था।

पिता ने उन दोनों की डबल रोटियाँ चखीं और कहा कि उनकी होने वाली पत्नियों ने बहुत अच्छी डबल रोटियाँ बनायी हैं। देहाती लड़कियों को जैसी डबल रोटी बनानी चाहिये उन्होंने वैसी ही डबल रोटियाँ बनायी है।

तब माइकल ने अपनी चुहिया की बनी हुई सफेद डबल रोटी अपने पिता को दी। पिता ने उसको भी देखा और चखा तो बोला — "अरे यह तो बहुत सुन्दर सफेद डबल रोटी है जरूर किसी अच्छे और मँहगे अनाज की होगी। लगता है कि तुम्हारी होने वाली पत्नी बहुत अमीर है।"

माइकल बोला — "उसने तो बस घंटी बजायी और उसके नौकर उसके लिये डबल रोटी बनाने का आटा ले कर आ गये। बस फिर उसने डबल रोटी बना दी।"

दोनों बड़े भाई बहुत खुश हुए जब उनके पिता ने कहा — "अब हम एक और इम्तिहान लेंगे। तुम सबकी होने वाली पत्नियों को एक काम और करना पड़ेगा। मैं देखना चाहता हूँ कि वे सिलाई

[32] Rye is a kind of grain

भी कर सकती हैं या नहीं। तुम लोग उनके हाथ के बुने हुए कपड़े का नमूना ले कर आओ"

यह सुन कर दोनों बड़े भाई तो खुश थे क्योंकि वे जानते थे कि उनकी होने वाली पत्नियाँ कपड़ा बुनना जानती थीं पर वे यह तो सोच भी नहीं सकते थे कि कोई राजकुमारी भी कपड़ा बुन सकती है तो उनके छोटे भाई का क्या होगा।

माइकल भी चिन्तित था। वह भी यही सोचता था कि कोई चुहिया भी कपड़ा बुन सकती है क्या। फिर भी वह सोच कर मुस्कुराया कि अगर वह चुहिया कपड़ा न भी बुन सकेगी तो भी कम से कम वह उस बोलने वाली चुहिया से फिर से मिल तो सकेगा।

जब माइकल चुहिया के पास पहुँचा तो चुहिया उसको देख कर फिर बहुत खुश हो गयी। वह तुरन्त ही माइकल के खुले हाथों पर चढ़ गयी और वहाँ नाचने लगी।

माइकल बोला — "मै तुमको देख कर बहुत खुश हूँ लेकिन. ."

"लेकिन क्या माइकल। क्या तुम्हारे पिता को कुछ और चाहिये?"

"वह तुम्हारे हाथ के बुने हुए कपड़े का नमूना देखना चाहते हैं। क्या तुम कपड़ा बुन सकती हो? मैंने तो कभी सुना नहीं कि कोई चुहिया भी कपड़ा बुन सकती है।"

यह सुन कर चुहिया फिर हँसी ओर एक बार फिर उसने अपनी छोटी घंटी बजायी और एक बार फिर उसी दरवाजे से सैंकड़ों की

तादाद में चूहे वहाँ आ गये। वे अपनी राजकुमारी के हुक्म के लिये उसकी तरफ देखने लगे।

चुहिया ने उनसे कहा — "जाओ और सबसे बढ़िया अलसी[33] की रुई ले कर आओ।"

जब वे अलसी की रुई ले आये तो उस चुहिया ने उस रुई का बहुत ही बढ़िया धागा कातना शुरू किया। धागा कातने के बाद उसने उसका एक बहुत ही बढ़िया रूमाल बुना। वह इतना बढ़िया बुना हुआ था कि उसने उसको बुनने के बाद गिरी के एक खोल में रख दिया।

फिर वह माइकल से बोली — "लो इस गिरी के खोल को तुम अपने पिता के पास ले जाओ। इससे उनको पता चल जायेगा कि मैं कपड़ा भी बुन सकती हूँ।"

जब तीनों भाई अपने पिता के पास पहुँचे तो दोनों बड़े भाई मुस्कुराये। उनको ऐसा लग रहा था कि जैसे उनके सबसे छोटे भाई के पास कोई बुना हुआ कपड़ा था ही नहीं।

इसका मतलब यह था कि उसकी होने वाली पत्नी उनके पिता को खुश नहीं कर पायेगी। जबकि माइकल ने गिरी का वह खोल जिसमें उसका बुना हुआ कपड़ा रखा था अपनी जेब में रखा हुआ था।

[33] Translated for the word "Flax"

पिता ने दोनों बड़े बेटों के लाये हुए कपड़े देखे। उसने कहा — "तुम लोगों की होने वाली पत्नियाँ तुम्हारे लिये अच्छा कपड़ा बनायेंगी और तुमको ठीक से कपड़े पहनायेंगी और गर्म रखेंगी। उनका काम सादा है पर समय के साथ साथ सुधरता जायेगा।"

फिर उसने माइकल से पूछा — "क्या तुम्हारी होने वाली पत्नी भी तुम्हारे लिये कोई कपड़ा बुन सकी?"

माइकल ने अपनी जेब से गिरी का एक खोल निकाला और अपने पिता को दे दिया।

उसके भाई तो उसको देखते ही हँस पड़े — "तो तुम्हारी राजकुमारी ने हमारे पिता को कपड़े की बजाय गिरी का एक खोल दे दिया है।"

तब उनके पिता ने गिरी के उस खोल को खोला तो देखा कि उसके अन्दर तो तह किया हुआ एक बहुत बढ़िया कपड़ा रखा था। उसने उसकी तह खोली तो देखा कि वह तो दुनियाँ का सबसे अच्छा कपड़ा था। उसने तो इतना अच्छा कपड़ा पहले कभी देखा ही नहीं था।

उसको देख कर तो उसके बड़े भाइयों की हँसी रुक गयी। पिता भी बोला — "यह तो बहुत सुन्दर काम है। तुम्हारी होने वाली पत्नी इतना सुन्दर और बढ़िया कपड़ा कैसे बुन पायी?"

माइकल बोला — “उसने अपनी छोटी सी घंटी बजायी और उसके नौकर उसके लिये अलसी की रुई ले आये। तब उसने उसका धागा बनाया और फिर यह रूमाल बुन दिया।”

पिता बोला — “यह सब तो बहुत अच्छा था अब मैं तुम लोगों की होने वाली पत्नियों से मिलना चाहूँगा ताकि फिर तुम लोगों की शादी की जा सके सो तुम उनको यहाँ ले कर आओ।”

यह सुन कर माइकल ने सोचा कि अगर मैं अपनी होने वाली पत्नी को यहाँ ले कर आऊँगा तो मेरे बड़े भाई मुझ पर हँसेंगे जब वे यह देखेंगे कि वह तो एक चुहिया है। और मेरे पिता भी मेरी उससे शादी करने पर राजी नहीं होंगे। पर मैं उस सबकी चिन्ता नहीं करता।

उसने मेरे लिये डबल रोटी बनायी। उसने मेरे लिये कपड़ा बुना। वह गाती है वह नाचती है वह बहुत दयालु भी है। मैं तो बस उसकी परवाह करता हूँ चाहे वह एक चुहिया ही सही।”

यही सोच कर वह फिर से चुहिया के घर की तरफ चल दिया ताकि वह उसको साथ ले कर अपने पिता से मिलवाने के लिये उनके पास आ सके।

वह फिर से उसी झोंपड़ी में जा पहुँचा। उसको देखते ही चुहिया फिर से उसके हाथों में चढ़ गयी।

माइकल ने उससे कहा कि उसके पिता उससे मिलना चाहते हैं।

छोटी चुहिया तो यह सुन कर खुशी से पागल सी हो गयी। उसने अपनी वह छोटी सी घंटी एक बार फिर बजायी तो पहले की तरह से फिर से वहाँ सैंकड़ों चूहे दरवाजे से अन्दर आ गये। उसने उनसे कहा कि वे उसकी गाड़ी तैयार करें।

जल्दी ही गिरी का एक खोल वहाँ आ गया। उस गिरी के खोल को दो चूहे खींच रहे थे। एक चूहा उस गाड़ी के कोचवान की जगह बैठ गया। दूसरा चूहा एक नौकर की तरह उस गाड़ी के पीछे एक बक्से पर बैठ गया। उस नौकर चूहे ने छोटी चुहिया को गाड़ी में बिठाया और गाड़ी वहाँ से चल दी।

माइकल भी मुस्कुराता हुआ अपनी होने वाली पत्नी की गाड़ी के साथ साथ अपने पिता के घर चल दिया।

वह चुहिया से कहता जा रहा था — "मेरे भाई मुझ पर हँस सकते हैं। यहाँ तक कि मेरे पिता भी शायद इस शादी से खुश नहीं होंगे पर मैं हमेशा तुम्हारी रक्षा करूँगा। और तुम और मैं हमेशा खुश रहेंगे। मैं तुमको उसी तरह से रखूँगा जैसे कोई अपनी असली पत्नी को रखता है।"

जब वे जा रहे थे तो उनको एक पुल पार करना था। यह पुल जंगल पार कर के एक नदी पर बना हुआ था।

जब माइकल यह सब कह रहा था तभी वे उस पुल पर पहुँचे तो वहाँ हवा इतने ज़ोर से चल रही थी कि गिरी के खोल की वह

गाड़ी, उस गाड़ी का कोचवान, उसके दो काले चूहे जो गाड़ी खींच रहे थे, चुहिया राजकुमारी और उसके दोनों नौकर सब उस हवा में उड़ गये और नदी में डूब गये।

और माइकल उनको गिरने से रोक भी न सका।

उसकी ऑखों में ऑसू आ गये। उसके मुँह से निकला — "ओह छोटी चुहिया मुझे तुम्हारे इस तरह पानी में गिरने का बहुत अफसोस है। तुम मेरे ऊपर कितनी मेहरबान थीं। मुझे तुम्हारे साथ बात करना और तुम्हारा गाना बहुत याद आयेगा।

और अब जब तुम चली गयी हो मुझे तब पता चल रहा है कि मैं तो तुमको अपनी असली पत्नी की तरह से चाहता था।"

जब वह ऐसा बोल रहा था तभी उसने देखा कि एक बहुत बड़ी सुनहरी गाड़ी जिसको दो बहुत सुन्दर घोड़े खींच रहे थे नदी के किनारे किनारे आ रही थी।

एक लम्बा सा नौकर उस गाड़ी के पीछे खड़ा हुआ था। एक बहुत सुन्दर लड़की उस गाड़ी में बैठी हुई थी। इतनी सुन्दर लड़की तो माइकल ने पहले कभी देखी नहीं थी।

वह खुद बर्फ जैसी सफेद थी। उसके होठ बैरीज़ जैसे लाल थे। उसने सफेद मखमल के कपड़े पहने हुए थे और अपने सुनहरे बालों में बहुत सारे जवाहरात पहने हुए थे।।

उसने माइकल को पुकार कर कहा — "क्या तुम मेरे साथ मेरी गाड़ी में बैठना पसन्द नहीं करोगे? मैं अपने होने वाले पति के पिता से मिलने जा रही हूँ।"

माइकल कुछ दुखी आवाज में बोला — "नहीं मैं नहीं बैठ सकता। मेरी अपनी होने वाली पत्नी यहाँ नदी में डूब गयी है।"

उस सुन्दर लड़की ने कहा — "तुमने मुझे नहीं खोया है माइकल। मैं ही तुम्हारी वह छोटी चुहिया हूँ। मैंने ही तुम्हारे पिता के लिये डबल रोटी बनायी थी मैंने ही तुम्हारे पिता के लिये कपडा बुना था।

मैं अब तक एक जादू के ज़ोर में थी जिसने मुझे एक चुहिया बना दिया था। जब तुमने कहा कि तुम मुझे प्यार करते हो बस तभी मेरा वह जादू टूट गया और मैं फिर से आदमी बन गयी। चलो अब हम तुम्हारे पिता के पास चलते हैं ताकि वह हमारी शादी की इजाज़त दे दें।"

फिर वे माइकल के पिता के घर पहुँचे। वहाँ जा कर वह उन लडकियों से मिला जो उसके भाइयों से शादी करने वाली थीं।

पिता ने सबको अपना आशीर्वाद दिया और सबकी उनकी लायी हुई लड़कियों से शादी कर दी।

माइकल के दोनों बड़े भाई अपने पिता के खेत पर अपनी अपनी पत्नियों के साथ आराम से रहे। माइकल अपनी चुहिया के

साथ उसके राज्य चला गया। वहाँ वे जब तक ज़िन्दा रहे खुशी खुशी रहे।

9 जादुई सूअर[34]

शाप की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के रोमेनिया देश की लोक कथाओं से ली है। इसमें एक राजकुमार को जादू से सूअर बना दिया जाता है और यह जादू तभी टूटता है जब उस सूअर से कोई लड़की शादी कर ले।

देखते हैं कि किसमें इतनी हिम्मत है कि वह सूअर से शादी करे और उसे शाप से आजाद करवाये।

एक बार की बात है कि एक राजा था जिसके तीन बेटियाँ थीं। एक बार ऐसा हुआ कि राजा को लड़ाई पर जाना पड़ा तो उसने अपनी तीनों बेटियों को बुला कर कहा — "बेटियों मुझे लड़ाई पर जाना पड़ रहा है। हमारा दुश्मन बहुत बड़ी सेना ले कर हमारे ऊपर हमला करने आ रहा है।

मुझे तुम लोगों को यहाँ अकेले छोड़ते हुए बड़ा दुख हो रहा है पर मेरे पास और कोई चारा नहीं है। मेरे जाने के बाद तुम लोग अपना ख्याल रखना और अच्छी बच्चियाँ बन कर रहना और घर की ठीक से देखभाल करना।

---

[34] The Enchanted Pig – a folktale from Romania, Europe. Taken from the Web Site : https://en.wikipedia.org/wiki/The_Enchanted_Pig
Andrew Lang has included it in his "Red Fairy Book", "The search for the lost husband". Others of this type include *The Black Bull of Norroway*, *The Brown Bear of Norway*, *The Daughter of the Skies*, *East of the Sun and West of the Moon*, *The King of Love*, *The Tale of the Hoodie*, *Master Semolina*, *The Sprig of Rosemary*, *The Enchanted Snake*, and *White-Bear-King-Valemon*.

तुम लोग बागीचे में घूम सकती हो और महल में कहीं भी आ जा सकती हो सिवाय एक कमरे के जो पीछे की तरफ दाँये हाथ को कोने में है। बस तुम लोग उसमें मत जाना क्योंकि उसमें जाने से तुमको नुकसान पहुँच सकता है।

यह सुन कर वे लड़कियाँ बोलीं — “पिता जी, आप शान्ति से जाइये। हमने आपके हुक्म को कभी नहीं टाला। आप विश्वास रखें कि हम इस बार भी आपका हुक्म नहीं टालेंगे। भगवान करे आप वहाँ से जीत कर लौटें।”

जब राजा के जाने की सारी तैयारी हो गयी तो राजा ने उनको महल के सारे कमरों की चाभियाँ थमाते हुए एक बार फिर से उनको याद दिलाया कि उसने उनसे क्या कहा था।

उसकी बेटियों ने आँखों में आँसू भर कर उसके हाथ चूमे और उसकी अमीर होने की शुभकामना की। उसने सब चाभियाँ अपनी बड़ी बेटी को दीं और लड़ाई पर चला गया।

अपने पिता के जाने के बाद लड़कियों को बहुत बुरा लगा और वे कुछ दुखी हो गयीं। उनको समझ ही नहीं आ रहा था कि वे क्या करें। सो समय बिताने के लिये उन्होंने कुछ देर काम करने की सोची। कुछ देर बागीचे में घूमने की सोची।

जब तक वे ये सब करती रहीं सब कुछ ठीक चलता रहा पर यह खुशी का समय बहुत दिनों तक नहीं चला। रोज उनकी

उत्सुकता बढ़ती ही गयी कि पिता जी ने उनको वह कमरा न खोलने के लिये क्यों कहा था।

और अब तुम देखोगे कि उसका नतीजा क्या निकला।

एक दिन सबसे बड़ी राजकुमारी ने कहा — "बहिनों, इतने दिनों तक हम लोग सिलाई करते रहे, कातते रहे, पढ़ते रहे। हम लोगों को अकेले रहते रहते भी कई दिन हो गये।

बागीचे का कोई कोना हमने नहीं छोड़ा जहाँ हम नहीं गये हों। महल का भी कोई कमरा हमने नहीं छोड़ा जो हमने न देखा हो। उनमें रखा हुआ हमने सारा सुन्दर और कीमती फर्नीचर भी देख लिया तो अब हम उस कमरे में क्यों न चलें जिसको पिता जी ने हमको देखने से मना किया है।

सबसे छोटी बहिन बोली — "मैं तो सोच भी नहीं सकती कि पिता जी का हुक्म तुम कैसे टाल सकती हो। जब उन्होंने हमसे उस कमरे में जाने से मना किया था तो वह जानते थे कि वह क्या कह रहे हैं। और उसको कहने की उनके पास कोई ठीक़ वजह भी होगी। हमको वहाँ नहीं जाना चाहये।"

दूसरी बहिन बोली — "मुझे यकीन है कि अगर हम उस कमरे में चले भी जायेंगे तो हमारे सिर पर कोई आसमान नहीं गिर

जायेगा। और मुझे यह भी यकीन है कि ड्रैगन[35] और दूसरी तरह के राक्षस जो हमको खा सकते हैं वे भी उस कमरे में नहीं होंगे। इसके अलावा हम उस कमरे में गये भी हैं यह पिता जी को कैसे पता चलेगा।"

जब वे सब इस तरह से बातें कर रही थीं और एक दूसरे को उस कमरे में जाने के लिये उकसा रही थीं तो उन्होंने देखा कि वे तो उस कमरे तक पहुँच ही गयी थीं। बड़ी बहिन ने दरवाजे में चाभी लगायी और दरवाजा खुल गया।

तीनों लड़कियाँ उस कमरे में घुसीं तो तुम क्या सोचते हो कि उन्होंने वहाँ क्या देखा होगा?

वह कमरा तो सारा करीब करीब खाली पड़ा था। उस कमरे में तो कोई सजावट भी नहीं थी। वहाँ बीच में केवल एक बड़ी सी मेज रखी थी जिसके ऊपर एक बहुत सुन्दर कपड़ा बिछा हुआ था और उस कपड़े पर एक किताब खुली पड़ी थी।

तीनों राजकुमारियाँ यह जानने के लिये बहुत उत्सुक थीं कि उस किताब में क्या लिखा था, खास कर के सबसे बड़ी वाली राजकुमारी। उसने उसमें पढ़ा कि सबसे बड़ी वाली राजकुमारी पूर्व दिशा के एक राजकुमार से शादी करेगी।

---

[35] A dragon is a legendary creature, typically with serpentine or reptilian traits, that features in the myths of many cultures. There are two distinct cultural traditions of dragons: the European dragon, derived from European folk traditions and ultimately related to Greek and Middle Eastern mythologies, and the Chinese dragon, with counterparts in Japan, namely the Japanese dragon, Korea and other East Asian countries. See one of its picture above.

उसके बाद दूसरी राजकुमारी आगे बढ़ी और उसने उस किताब का पन्ना पलटा तो उसने पढ़ा कि दूसरी राजकुमारी पश्चिम दिशा के एक राजकुमार से शादी करेगी।

यह पढ़ कर दोनों राजकुमारियाँ तो बहुत खुश हो गयीं और हँस हँस कर एक दूसरे को छेड़ने लगीं पर सबसे छोटी राजकुमारी उस किताब के पास नहीं जाना चाहती थी और न वह किताब ही आगे खोलना चाहती थी।

पर उसकी बड़ी बहिनों ने उसको चैन से नहीं बैठने दिया। चाहे उसकी इच्छा थी या नहीं उन्होंने उसको मजबूर किया कि वह उस किताब का अगला पन्ना पलटे। डर से काँपते हुए उसने उस किताब का पन्ना पलटा।

उसमें लिखा था "इस राजा की तीसरी लड़की उत्तर के एक सूअर से शादी करेगी।"

अगर इस समय उसके सिर पर बिजली भी गिर जाती तो शायद वह इतना न डरती जितना कि वह इस बात को पढ़ कर डर गयी कि वह एक सूअर से शादी करेगी।

वह तो बस यह सब सोच सोच कर ही मरने वाली हो रही थी कि उसकी शादी एक सूअर से होगी। अगर उसकी बहिनों ने उसे पकड़ न लिया होता तो वह तो शायद नीचे ही गिर पड़ती और उसका सिर फट गया होता।

जब वह कुछ होश में आयी तो वह तो वाकई डर के मारे गिर ही पड़ी। उसकी बहिनों ने उसे समझाया — "ऐसी बेकार की बातों पर तुम कैसे विश्वास कर सकती हो? क्या कभी ऐसा भी हुआ है कि किसी राजा की बेटी की शादी किसी सूअर से हुई हो?"

उसकी दूसरी बहिन ने कहा — "तुम कैसी बच्चों जैसी बात कर रही हो? अगर कोई सूअर तुमसे शादी करने की इच्छा भी प्रगट करे तो क्या हमारे पिता जी के पास इतने भी सिपाही नहीं हैं कि वह तुम्हारी उस सूअर से रक्षा कर सकें?"

सबसे छोटी राजकुमारी को अपनी बहिनों के शब्दों से कुछ तसल्ली मिली और उसने उनके कहने पर विश्वास तो कर लिया पर फिर भी उसका दिल भारी ही रहा।

वह अब केवल उस किताब के बारे में ही सोचती रहती जिसमें उसकी बहिनों के लिये तो अच्छी किस्मत लिखी थी पर उसके लिये एक ऐसी चीज़ लिखी थी जिसे कभी किसी ने सुना भी नहीं था।

इसके अलावा उसके मन पर एक बोझ यह भी था कि उसने अपने पिता का कहा नहीं माना था।

इसके बाद से ही वह कुछ बीमार सी रहने लगी और कुछ ही दिन में वह इतनी बीमार हो गयी कि उसको पहचानना मुश्किल हो गया।

पहले उसकी रंगत गुलाबी हुआ करती थी, वह खुश रहा करती थी पर अब वह पीली पड़ गयी थी और कोई चीज़ उसको खुश नहीं कर पाती थी।

अब वह बागीचे में अपनी बहिनों के साथ खेलने भी नहीं जाती थी, वहाँ अब वह अपने बालों में लगाने के लिये फूल चुनने भी नहीं जाती थी और जब उसकी बहिनें कातने और सिलाई के लिये बैठती थीं तो वह उनके साथ गाती भी नहीं थी।

इस बीच लड़ाई खत्म हो गयी और राजा जीत कर लड़ाई से वापस आ गया। वहाँ वह अपनी बेटियों के बारे में ही सोचता रहता था।

जब वह घर वापस आया तो सारे लोग मंजीरे और ढोल ले ले कर उसकी अगवानी के लिये गये और उसकी जीत की खुशी मनायी।

घर आ कर उसने सबसे पहला काम यह किया कि उसने भगवान को धन्यवाद दिया कि उसने उसको उसके उस दुश्मन पर जीतने का मौका दिया जिसने उसके खिलाफ सिर उठाया था।

उसके बाद ही वह महल में घुसा तो उसकी तीनों बेटियाँ उससे मिलने आयीं। वह उन तीनों को ठीक ठाक देख कर बहुत खुश हुआ क्योंकि उसकी सबसे छोटी बेटी ने अपनी भरसक कोशिश की थी कि वह उसके सामने दुखी दिखायी न दे।

पर बहुत जल्दी ही उसने अपनी सबसे छोटी बेटी को दुखी और कमजोर देखा तो उसे लगा कि कोई गर्म लोहा उसकी आत्मा को छू गया है। उसको पता चल गया कि उसके पीछे उन लोगों ने उसका कहा नहीं माना।

उसको पूरा विश्वास था कि वह ठीक सोच रहा था पर फिर भी पक्का करने के लिये कि वह ठीक सोच रहा था उसने अपनी बेटियों को बुलाया और उनसे कुछ सवाल पूछे और उनसे सच बताने के लिये कहा।

उन्होंने उसको बाकी सब तो सच सच बता दिया पर यह नहीं बताया कि उन दोनों को किस चीज़ ने वह कमरा खोलने के लिये उकसाया था। राजा तो यह सब सुन कर बहुत दुखी हुआ। उसकी बेटियॉ भी बेचारी डर के मारे मरी जैसी हो रही थीं।

जब वह अपने दुख से थोड़ा सा निकला तो उसने अपनी बेटियों को तसल्ली तो दी पर उसने विचार किया कि जो कुछ होना था वह तो हो चुका और उसके हजारों शब्द भी उस दशा को बाल बराबर भी नहीं बदल सकते थे।

इसलिये बाद में उसने सोचा कि वह उनके हालात को जितनी अच्छी तरह से सिलटा सकेगा उतनी अच्छी तरह से सिलटायेगा। कुछ दिन बाद सभी यह घटना भूल गये।

अब जैसा उस किताब में लिखा हुआ था वैसा ही हुआ। एक दिन पूर्व दिशा के राज्य से एक राजकुमार आया और उसने राजा से

उसकी सबसे बड़ी बेटी का हाथ माँगा। राजा ने खुशी खुशी अपनी सबसे बड़ी बेटी की शादी उस राजकुमार से कर दी।

शादी की बहुत ही शानदार दावत हुई और तीन दिन तक खुशियाँ मनाने के बाद दोनों रीति रिवाज के साथ राजकुमार के देश चले गये।

ऐसा ही राजा की दूसरी बेटी के साथ हुआ। एक दिन पश्चिम दिशा से एक राजकुमार आया और राजा की दूसरी बेटी से शादी कर के उसको अपने देश ले गया।

सबसे छोटी राजकुमारी ने देखा कि यह तो ठीक वैसा ही हो रहा था जैसा कि उस किताब में लिखा था। यह देख कर वह बहुत दुखी हुई। उसका खाना पीना छूट गया। अब उसका अच्छे कपड़े पहनने को मन नहीं करता था। वह अब बाहर घूमने भी नहीं जाती थी।

उसने कह दिया कि बजाय इसके कि उसके ऊपर सारी दुनियाँ हँसे वह मर जाना पसन्द करेगी। पर राजा उसको यह सब पागलपन नहीं करने दे रहा था। वह हमेशा ही उसको कई तरह से तसल्ली देता रहता था।

समय बीतता रहा और लो एक दिन उत्तर दिशा से एक सूअर राजा के पास आया और सीधा राजा के पास जा कर बोला — "राजा की जय हो। भगवान आपको बहुत धनवान बनाये और सूरज की तरह आपका यश बढ़ाये।"

राजा बोला — "आओ मेरे दोस्त तुम्हारा स्वागत है पर तुम यहाँ किसलिये आये हो?"

सूअर बोला — "मैं आपकी बेटी से शादी करने के इरादे से आया हूँ।"

राजा एक सूअर को इतना अच्छा बोलते सुन कर आश्चर्य में पड़ गया। उसको तुरन्त ही यह अहसास हुआ कि इस सूअर में जरूर कुछ अजीब बात है। यह कोई साधारण सूअर नहीं है।

वह सूअर के विचारों को आसानी से दूसरी तरफ मोड़ सकता था क्योंकि वह एक सूअर से अपनी बेटी की शादी करना नहीं चाहता था पर जब उसने सुना कि उसके शहर की सारी गलियाँ सूअरों से भरी हुई थीं तो उसके लिये अब इसके सिवा कोई और चारा नहीं बचा था कि वह उसको अपनी बेटी दे देता।

वह सूअर भी केवल वायदों से मानने वाला नहीं था। उसने जिद की कि उसकी शादी एक हफ्ते के अन्दर अन्दर हो जानी चाहिये। वह वहाँ से तब तक नहीं जायेगा जब तक राजा अपना शाही वायदा पूरा नहीं करेगा।

यह देख कर राजा ने अपनी बेटी को बुलाया और उसको सलाह दी कि उसको अपनी किस्मत को स्वीकार कर लेना चाहिये। क्योंकि इस हालत में अब कुछ और नहीं किया जा सकता था।

वह बोला — "मेरी बच्ची, इस सूअर की बोली और सारा बर्ताव दूसरे सूअरों से बिल्कुल अलग लगता है। मुझे लगता है कि

यह हमेशा से ही सूअर नहीं था बल्कि ऐसा लगता है कि इसके ऊपर किसी का शाप या जादू काम कर रहा है सो इसकी बात मान लो और जैसा यह कहे वैसा ही करो। भगवान जल्दी ही तुम्हें इससे छुटकारा दिलायेगा।

राजकुमारी बोली — "पिता जी अगर आप ऐसा ही चाहते हैं तो ऐसा ही होगा।"

शादी का दिन पास आ रहा था। उन दोनों की शादी हो गयी और वे एक शाही गाड़ी में बैठ कर सूअर के देश चले गये।

रास्ते में एक बहुत बड़ी दलदल पड़ी तो सूअर ने गाड़ी रोकने के लिये कहा। गाड़ी रुकने पर वह गाड़ी से उतरा और उस कीचड़ में जा कर इतना लोटा कि वह सिर से ले कर पैर तक उसमें सन गया।

यह कर के वह गाड़ी में लौट आया और अपनी पत्नी से बोला कि वह उसको चूमे। अब वह लड़की बेचारी क्या करती। उसको अपने पिता के शब्द याद आये तो उनको सोचते हुए उसने अपना रूमाल निकाला, सूअर की थूथनी को धीरे से पोंछा और उसे चूम लिया।

सूअर के रहने की जगह एक घने जंगल में थी। जब तक वे लोग वहाँ पहुँचे अँधेरा हो गया था। क्योंकि चलते चलते वे बहुत थक गये थे सो कुछ देर के लिये वे बैठ गये। फिर उन्होंने रात का खाना खाया और आराम करने के लिये लेट गये।

बीच रात में राजकुमारी ने देखा कि वह सूअर तो एक आदमी बन गया था। यह देख कर उसको अपने पिता की बात याद आयी।

उसको याद कर के उसको बिल्कुल भी आश्चर्य नहीं हुआ बल्कि उसकी हिम्मत और बढ़ गयी। उसने निश्चय कर लिया कि वह इन्तजार करेगी और देखेगी कि आगे क्या होता है।

उसने देखा कि वह सूअर तो हर रात आदमी बन जाता था और हर सुबह उसके जागने से पहले पहले ही फिर से सूअर में बदल जाता था। ऐसा हर रात होता रहा।

राजकुमारी की समझ में तो कुछ नहीं आ रहा था। पर इतना उसको साफ साफ लगा कि उसका पति वाकई किसी शाप या जादू के असर में था। वह उससे इतना अच्छा बर्ताव करता था कि उसने उसका दिल जीत लिया था। अब वह भी उसको प्यार करने लगी।

एक दिन वह अकेली बैठी हुई थी कि एक बूढ़ी जादूगरनी[36] उसके पास से गुजरी। उसको देख कर वह बहुत खुश हो गयी क्योंकि बहुत दिनों बाद उसने कोई आदमी देखा था। उसने उसको पुकारा और उससे कुछ बात करने को कहा।

और बहुत सारी बात करने के बीच में उसने राजकुमारी को बताया कि वह जादू की बहुत सारी कलाऐं जानती थी।

[36] Translated for the word “Witch”.

इसके अलावा वह भविष्य भी बता सकती थी और उसको दवाऐं और पत्तियों आदि से इलाज के इस्तेमाल भी आते थे।

राजकुमारी बोली कि वह ज़िन्दगी भर उसकी कृतज्ञ रहेगी अगर वह उसको यह बता देगी उसके पति को क्या हुआ है। वह क्यों तो रात में आदमी बन जाता है और क्यों दिन में सूअर बन जाता है।

जादूगरनी बोली — "मैं तुमसे यह कहने ही वाली थी कि मैं कितनी अच्छी किस्मत बताने वाली हूँ। तुम्हारा पति किसी के जादू के असर में है। अगर तुम चाहो तो मैं तुमको इस जादू को तोड़ने वाली एक दवा दे सकती हूँ।"

राजकुमारी बोली — "अगर तुम मुझे वह दवा दे दोगी तो जो तुम चाहोगी मैं वह तुमको दे दूंगी।"

तब उस जादूगरनी ने उसको एक धागा देते हुए कहा — "मेरी बच्ची लो यह धागा लो पर यह बात तुम उसको बताना नहीं क्योंकि अगर उसे इसका पता चल गया तो इसका असर खत्म हो जायेगा।

रात को जब वह सो जाये तो तुम बिल्कुल बिना आवाज किये उठना और यह धागा उसके बॉये पैर में जितनी कस कर बॉध सको बॉध देना। तुम सुबह को देखोगी कि वह फिर सूअर में नहीं बदल पायेगा और आदमी ही बना रहेगा।

और हॉ इसके लिये मुझे तुमसे कुछ नहीं चाहिये। मुझे यह जान कर ही मेरा इनाम मिल जायेगा कि तुम खुश हो। तुम यह सब जो

सह रही हो यह जान कर मेरा दिल रोता है। अगर यह सब मैं पहले जान पाती तो मैं तुम्हारी सहायता के लिये पहले ही आ जाती।"

इतना कह कर वह बूढ़ी जादूगरनी वहाँ से चली गयी।

जादूगरनी के जाने के बाद राजकुमारी ने उस धागे को सँभाल कर छिपा कर रख लिया।

रात को राजकुमारी चुपचाप धीरे से उठी और उसने वह धागा अपने पति के बाँये पैर में कस कर बाँध दिया। पर जब वह धागे की गाँठ कस रही थी तो खट से वह धागा टूट गया क्योंकि वह धागा सड़ा हुआ था और कमजोर था।

इतने में उसका पति जाग गया और बोला — "ओ नाखुश लड़की यह तूने क्या किया? तीन दिन के बाद तो मेरा यह जादू अपने आप ही खत्म हो गया होता। और अब मुझे पता नहीं कि मैं इस बदनसीब शक्ल में कब तक रहूँगा।

अब मुझे तुझे छोड़ना पड़ेगा और अब तू मुझको तब तक नहीं देख पायेगी जब तक तू तीन जोड़ी लोहे के जूते न तोड़ लेगी और एक लोहे के डंडे की नोक को चौरस न कर लेगी।" यह कह कर वह वहाँ से गायब हो गया।

जब राजकुमारी वहाँ अकेली रह गयी तो वह रोने लगी। वह इतना रोयी कि उसको देख कर दया आती थी। पर उसको लगा कि उसके रोने से तो कुछ बनता बिगड़ता नहीं था सो उसने अपनी

किस्मत की बात मानने का ही फैसला किया। अब वह उसको जहॉ ले जाये।

वह उठी और एक शहर की तरफ चल दी। तुरन्त ही उसने तीन लोहे के जूतों को बनाने का हुक्म दिया। जैसे ही वे जूते बन गये उसने वे जूते लिये और एक लोहे का डंडा लिया और उनको ले कर अपने पति को ढूँढने चल दी।

वह चलती रही और चलती रही। उसने नौ सागर और नौ द्वीप पार किये। जंगल पार किये जिनमें बहुत मोटे मोटे पेड़ लगे हुए थे। कई बार वह पेड़ों की शाखों में अटक कर गिरी।

पेड़ों की डालियॉ उसके चेहरे पर आ आ कर लग रही थीं। झाड़ियों से उसके हाथ छिले जा रहे थे पर वह पीछे मुड़ कर देखे बिना बस चलती रही और चलती ही रही।

आखिर चलते चलते वह थक गयी और दुखी सी वह एक मकान के पास आ पहुँची। तुम क्या सोचते हो कि यह मकान किसका था और कौन रहता था यहॉ?

यह मकान चॉद रानी का था और यहॉ चॉद रानी रहती थी। उसने इस मकान का दरवाजा खटखटाया तो चॉद रानी की मॉ ने दरवाजा खोला।

उसने उससे उसमें अन्दर आने की प्रार्थना की ताकि वह कुछ देर के लिये वहॉ आराम कर सके।

चॉद रानी की मॉ ने उसकी बुरी हालत देखी तो उसको उसके ऊपर दया आ गयी। वह उसको अन्दर ले गयी और उसकी सेवा कर के उसको ठीक किया।

जब राजकुमारी चॉद रानी के घर में रह रही थी तो उसने एक बच्चे को जन्म दिया।

एक दिन चॉद रानी की मॉ ने राजकुमारी से पूछा — "ओ दुनियॉ की जीव, तुम यहॉ चॉद के घर में कैसे आ पायीं?"

तब उस राजकुमारी ने उसको अपनी सारी कहानी बतायी और कहा कि वह हमेशा ही भगवान की कृतज्ञ रहेगी कि वह उसको यहॉ ले कर आया और वह उसकी यानी चॉद रानी की मॉ की भी कृतज्ञ रहेगी कि उसने उसके और उसके बच्चे पर दया दिखायी। उसने उनको मरने के लिये नहीं छोड़ दिया।

वह फिर बोली — "अब मैं आपसे एक आखिरी सहायता और मॉगती हूँ। क्या आपकी बेटी चॉद रानी मुझे यह बता सकती है कि मेरा पति कहॉ है?"

चॉद रानी की मॉ ने कहा — "बेटी, मेरी बेटी चॉद तुमको यह तो नहीं बता सकती कि तुम्हारा पति कहॉ है पर हॉ तुम यहॉ से और आगे सूरज के घर तक जा सकती हो। शायद सूरज तुमको यह बता सके कि तुम्हारा पति कहॉ है।"

फिर उसने उसको खाने के लिये एक भुना हुआ मुर्गा दिया और कहा कि मुर्गा खाने के बाद वह उसकी सारी हड्डियॉ सॅभाल कर

रखे उसकी कोई हड्डी खोये नहीं क्योंकि वे हड्डियाँ उसके काम आ सकती हैं।

राजकुमारी ने उसको उसकी मेहमानदारी और उसकी सहायता के लिये उसको एक बार फिर से धन्यवाद दिया, वहाँ अपने एक जोड़ी लोहे के जूते फेंके जो टूट गये थे, दूसरे जोड़ी जूते पहने, मुर्गा खा कर उसकी हड्डियों को एक पोटली में बाँधा और वहाँ से आगे चल दी।

सूने रेतीले रेगिस्तानों से गुजरती हुई वह आगे चलती चली जा रही थी। वहाँ की सड़कें ऐसी थीं कि अगर वह दो कदम आगे चलती थी तो एक कदम पीछे की तरफ गिर जाती थी। पर फिर भी उसने किसी तरह से वे रेगिस्तान पार किये।

फिर उसने पत्थरों से भरे एक पहाड़ से दूसरे पहाड़ पर और एक चोटी से दूसरी चोटी पर कूद कूद कर पहाड़ी रास्ता पार किया। कभी कभी वह वहाँ पर आराम भी कर लेती थी पर वह फिर आगे चल देती थी।

इससे उसके घुटने कोहनियाँ और पैर सभी बहुत घायल से हो गये थे और उनसे खून बहने लगा था। उसको दलदल भी पार करनी पड़ीं। कहीं कहीं वह कूद नहीं सकती थी तो उसको घुटनों के बल चल कर आगे जाना पड़ता था। इसमें उसको अपने डंडे का भी सहारा लेना पड़ता था।

किसी तरह चलते चलते वह सूरज के घर आयी। वहाँ भी उसने सूरज के घर का दरवाजा खटखटाया और आराम के लिये जगह माँगी।

सूरज की माँ ने उसके लिये दरवाजा खोला तो दुनियाँ के उस छोर से आये हुए एक आदमी को देख कर वह भी बहुत आश्चर्यचकित रह गयी। और जब उसने उसकी कहानी सुनी और उसकी हालत देखी तो वह दया से रो पड़ी।

उसने उससे वायदा किया कि वह अपने बेटे से जरूर पूछेगी कि वह उसके पति का पता जानता है कि नहीं।

उसने उसको अन्दर बुलाया और उसको घर के नीचे वाले कमरे[37] में छिपा दिया है ताकि सूरज जब भी घर वापस आये तो उसको कुछ पता न चले कि वहाँ कोई अजनबी था क्योंकि जब भी सूरज घर वापस लौटता है तो वह बहुत बुरे मूड में होता है।

अगले दिन राजकुमारी को कुछ ऐसा लगा कि जैसे उसके साथ कुछ खराब होने वाला है क्योंकि सूरज को पता चल गया था कि कोई दूसरी दुनियाँ से आ कर उसके घर में ठहरा हुआ है। पर उसकी माँ ने उसको मीठे मीठे शब्दों से यह कह कर शान्त कर दिया था कि ऐसा कुछ नहीं था।

जिस तरीके से राजकुमारी को वहाँ रखा गया उससे राजकुमारी को कुछ तसल्ली मिली। फिर भी उसने सूरज की माँ से पूछा —

[37] Translated for the word "Cellar"

“मॉ जी ऐसा कैसे हो सकता है कि सूरज किसी से गुस्सा हो सके। वह तो कितना सुन्दर है और दुनियॉ में रहने वालों के लिये कितना दयावान है।

सूरज की मॉ ने जवाब दिया — “बेटी ऐसा इसलिये होता है कि सुबह को जब वह स्वर्ग के दरवाजे पर खड़ा होता है तो बहुत खुश होता है और दुनियॉ को देख कर मुस्कुराता है।

पर सारे दिन दुनियॉ को देखते देखते वह कुछ नाराज सा हो जाता है क्योंकि वह सारे दिन लोगों को बुरे बुरे काम करते हुए देखता है जिससे उसका दिल कचोट उठता है।

इससे शाम को जब वह वापस लौटता है तो बहुत दुखी और नाराज होता है क्योंकि उस समय वह मौत के दरवाजे पर खड़ा होता है। यही उसका रोज का रास्ता है। वहॉ से फिर वह घर आ जाता है।

तभी उसने राजकुमारी को बताया कि उसने अपने बेटे से उसके पति के बारे में पूछा था पर उसको उसके पति के बारे में कुछ नहीं पता। सो अब उसकी एक ही उम्मीद थी कि वह हवा के घर जाये और वहॉ जा कर उससे अपने पति का पता पूछे।

इससे पहले कि वह हवा के पास जाती सूरज की मॉ ने भी उसको खाने के लिये एक भुना हुआ मुर्गा दिया और उससे कहा कि उसको खाने के बाद वह उसकी हड्डियॉ बहुत सॅभाल कर रखे। वह उसके काम आ सकती थीं।

राजकुमारी ने मुर्गा खा लिया और उसकी हड्डियाँ सँभाल कर एक पोटली में बाँध लीं।

यहाँ उसने अपने दूसरे जोड़ी जूते फेंके जो काफी फट गये थे, तीसरे जोड़ी जूते पहने, अपने बच्चे को अपनी बाँहों में उठाया, अपना डंडा उठाया और मुर्गे की हड्डियों वाली दोनों पोटलियाँ ले कर हवा के घर की तरफ चल दी।

इस रास्ते में उसको पहले रास्तों के मुकाबले में और ज़्यादा मुश्किलों का सामना करना पड़ा।

क्योंकि चलते चलते वह एक ऐसे पहाड़ पर आयी जिस पर नुकीले पत्थर पड़े थे और उसमें से आग की लपटें निकल रही थी। इसके अलावा उसने एक ऐसा जंगल भी पार किया जहाँ से पहले कभी कोई आदमी कभी नहीं गुजरा था।

इस रास्ते पर उसको बर्फ से ढके हुए मैदान और बर्फ के पहाड़ भी पार करने पड़े। वह तो बेचारी इन सब मुश्किलों से मर सी गयी थी।

पर वह बहादुरी से चलती रही और आखिर एक पहाड़ के एक तरफ बनी एक बहुत बड़ी गुफा में आ गयी। हवा इसी गुफा में रहता था। यहाँ आ कर राजकुमारी ने हवा की गुफा का दरवाजा खटखटाया और रहने के लिये जगह माँगी।

यहाँ भी हवा की माँ ने उसके लिये दरवाजा खोला और उस पर दया कर के उसको अन्दर बुलाया ताकि वह कुछ देर आराम कर

सके। यहाँ भी उसको छिपा कर रखा गया ताकि हवा को उसके वहाँ होने का पता न चल सके।

राजकुमारी ने उसको भी अपनी कहानी सुनायी तो हवा की माँ को हवा से पता चला कि उसका पति एक घने जंगल में रहता है। और वह जंगल इतना घना था कि उसे कुल्हाड़ी से काटना नामुमकिन था।

यहाँ हवा ने पेड़ों के तने काट कर और उनको आपस में बेलों से बाँध कर एक तरह का घर बना रखा था और वह यहाँ आदमियों से दूर उसी घर में अकेला रहता था।

यहाँ भी हवा की माँ ने खाने के लिये उसको एक भुना मुर्गा दिया और यह कह कर उसको आकाश गंगा की तरफ आगे भेज दिया कि वह उस मुर्गे को खाने के बाद उसकी हर हड्डी को सँभाल कर रखे क्योंकि वे उसके काम आ सकती हैं।

आकाश गंगा के उस पार ही उसकी वह जगह थी जहाँ उसका पति रहता था।

आँखों में आँसू भर कर उसने हवा की माँ को उसकी मेहमानदारी और उस अच्छी खबर के लिये धन्यवाद दिया। उसकी अपने पति से मिलने की इच्छा इतनी ज़्यादा थी कि वह वहाँ से बिना कहीं रुके आगे अपनी यात्रा पर चल दी।

आगे चल कर उसके तीसरे जोड़ी जूते भी टूट गये थे। उसने उनको फेंक दिया और अब वह नंगे पैर ही आकाशगंगा की तरफ चल दी।

अब उसको न तो दलदल परेशान कर रही थी और न कॉटे ही उसके पैरों को घायल कर रहे थे। न पत्थर ही उसके पैरों में चुभ रहे थे।

आखीर में वह एक जंगल के किनारे हरे घास के मैदान में आ पहुँची। वहॉ उसने हरी मुलायम घास और बहुत सारे फूल खिले देखे तो उनको देख कर उसकी तबियत खुश हो गयी।

वह वहॉ थोड़ी देर के लिये सुस्ताने के लिये बैठ गयी। वहॉ बहुत सारी चिड़ियॉ आपस में बात कर रही थीं। उनको आपस में बात करते देख कर उसको अपने पति की याद आने लगी।

सो उसने फिर से अपने बच्चे को अपनी बॉहों में उठाया और हड्डियों की पोटलियॉ अपने कन्धे पर डालीं और जंगल की तरफ चल दी।

वह तीन दिन तीन रात उस जंगल में चलती रही पर वहॉ उसको कुछ नहीं मिला। अब उसका डंडा भी उसके लिये बेकार हो गया था। क्योंकि अब तक इस्तेमाल होते होते वह बिल्कुल ही चौरस हो गया था।

वह नाउम्मीद हो कर अपनी कोशिशें छोड़ने ही वाली थी कि उसने एक आखिरी कोशिश और की और उसको एक घनी सी

जगह में एक घर दिखायी दिया। हवा की माँ ने इसी घर का जिक्र उससे किया था।

इस घर में कोई खिड़की नहीं थी और इसका दरवाजा भी इसकी छत में था। सीढ़ियों की खोज में उसने उस घर के चारों तरफ चक्कर काटा पर उसको कहीं कोई सीढ़ी दिखायी नहीं दी।

अब वह क्या करे? वह उस घर के अन्दर कैसे जाये?

वह सोचती रही सोचती रही। उसने दरवाजे तक चढ़ने की कोशिश भी की पर सब बेकार। वह वहाँ तक पहुँच ही नहीं सकी। तभी अचानक उसे उन मुर्गों की हड्डियों का ख्याल आया जिनको वह रास्ते भर ढोती चली आ रही थी।

उसने सोचा कि अगर उनका कोई ठीक इस्तेमाल नहीं होता तो चाँद सूरज और हवा की माँऐं उसको उनको सँभाल कर रखने के लिये क्यों कहतीं। हो सकता है कि वे यहाँ मेरे किसी काम आ जायें।

सो उसने उन हड्डियों को पोटली में से निकाला और उनको एक के बराबर एक रख कर जोड़ना शुरू किया। उसको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वे तो एक दूसरे से बहुत मजबूती से चिपक गयीं। वह उनको इसी तरह से जोड़ती रही जब तक कि घर की ऊँचाई के नाप के दो डंडे नहीं बन गये।

उसने इन दोनों डंडों को एक एक गज की दूरी पर खड़ा कर दिया और फिर सीढ़ी बनाने के लिये उसमें और हड्डियाँ लगानी शुरू कीं। वे भी सब मजबूती से चिपकती चली जा रही थीं।

जैसे ही एक सीढ़ी बन जाती वह उस पर चढ़ जाती फिर वह दूसरी सीढ़ी बनाती। फिर उस पर चढ़ कर वह तीसरी सीढ़ी बनाती।

ऐसा करते करते वह ऊपर तक पहुँच गयी पर सबसे ऊपर की सीढ़ी बनाने के लिये उसके पास अब कोई हड्डी नहीं बची थी। और बिना उस आखिरी सीढ़ी के वह उस घर पर चढ़ नहीं सकती थी। इसलिये बिना उस आखिरी डंडे के वह सीढ़ी बेकार थी। उसको लगा कि शायद कोई हड्डी उससे कहीं खो गयी थी।

कि अचानक उसके दिमाग में एक विचार आया। उसने अपने हाथ की छोटी उँगली काट कर उस आखिरी एक हड्डी की जगह लगा दी। लो वह उंगली तो वहाँ वैसे ही चिपक गयी जैसे वे हड्डियाँ चिपक गयी थीं।

अब सीढ़ी पूरी हो गयी थी सो वह बच्चे को अपनी गोद में लिये हुए उस घर में घुसी। उसने देखा कि उस घर में सब सामान बड़े सलीके से रखा हुआ था।

उसने पहले खाना खाया फिर बच्चे को एक पालने में सुलाया जो वही फर्श पर रखा हुआ था फिर वह भी कुछ देर के लिये आराम करने के लिये वहीं बैठ गयी।

जब उसका सूअर पति घर वापस आया तो जो कुछ उसने देखा उसको देख कर तो वह चौंक गया। पहले तो उसको अपनी ऑखों पर विश्वास नहीं हुआ और वह उस हड्डी की सीढ़ी की तरफ और उसके ऊपर की तरफ लगी उंगली की तरफ ही देखता रहा।

फिर उसको लगा कि कहीं उसके ऊपर कोई नया जादू न डाल रहा हो। इससे वह डर गया और इस डर की वजह से वह घर से बाहर भाग जाने ही वाला था कि...

कि तभी उसको एक और विचार आया और वह एक फाख्ता में बदल गया ताकि उसके ऊपर कोई और जादू काम न कर सके। फाख्ता बन कर वह सीढ़ी को बिना छुए ही अपने कमरे में उड़ गया।

वहॉ उसने देखा कि एक स्त्री एक बच्चे को झुला रही थी। वह उसको पहचान गया। वह तो उसकी पत्नी थी।

उसको देख कर और उसने जो कुछ भी उसके लिये सहा था उसको सोच कर उसका दिल पिघल गया और उसको उसके ऊपर दया आ गयी। वह अचानक आदमी बन गया।

राजकुमारी ने जब उसको देखा तो वह उठ खड़ी हुई और डर के मारे उसके दिल की धड़कन बढ़ गयी क्योंकि वह तो उसको जानती नहीं थी कि वह कौन था।

पर जब उसने उसको बताया कि वह कौन था तो ख़ुशी के मारे वह अपनी सारी थकान भूल गयी। अब उसका पति एक बहुत सुन्दर नौजवान था जो फ़र के पेड़ की तरह सीधा था।

वे दोनों वहीं बैठ गये और राजकुमारी ने उसको अपनी यात्रा का सारा हाल बताया। उसकी कहानी सुन कर वह रो पड़ा। और तब उसने राजकुमारी को अपनी कहानी सुनायी।

उसने बताया — "मैं एक राजा का बेटा हूँ। एक बार मेरे पिता कुछ ड्रैगनों से लड़ रहे थे क्योंकि वे हमारे देश में बहुत अशान्ति फैला रहे थे।

उस लड़ाई में मैंने सबसे छोटे ड्रैगन को मार दिया। उसकी माँ एक जादूगरनी[38] थी सो उसने मेरे ऊपर जादू कर दिया और मुझे एक सूअर में बदल दिया।

यह वही जादूगरनी थी जो तुमको मेरे पैर में बाँधने के लिये धागा दे गयी थी ताकि तीन दिन की बजाय मैं बहुत दिनों तक उसी शक्ल में रहूँ। इस तरह में तीन साल और सूअर के रूप में रहने पर मजबूर किया गया।

पर अब तो हम दोनों ने एक दूसरे के लिये कितना कुछ सहा है और फिर एक दूसरे को पा भी लिया है सो अब हमें पुरानी बातों को भूल जाना चाहिये।"

---

[38] Translated for the word "Witch"

अगले दिन राजकुमारी और राजकुमार अपने देश के लिये वापस चल दिये। उसके देश में उन दोनों को देख कर बहुत खुशियॉ मनायी गयीं। तीन दिन और तीन रात तक दावत चलती रही।

उसके बाद वे दोनों राजकुमारी के पिता से मिलने के लिये उसके देश गये। राजकुमारी का पिता तो अपनी बेटी को फिर से देख कर खुशी के मारे बिल्कुल पागल सा ही हो गया।

और जब उसने अपने पिता को अपनी कहानी बतायी तो राजा बोला — "मैंने तुमसे कहा था न कि वह जीव जो सूअर के रूप में तुमसे शादी करना चाहता था वह सूअर के रूप में पैदा ही नहीं हुआ था। देखो तुमने मेरी बात मान कर कितनी अक्लमन्दी का काम किया।"

और क्योंकि उस राजा के कोई बेटा नहीं था उसने अपने सबसे छोटे दामाद को अपने देश का राजा बना दिया। फिर बहुत सालों तक उन्होंने वहॉ राज किया और अगर वे अभी मरे नहीं हैं तो वे अभी भी वहॉ जरूर ही राज कर रहे होंगे।

10 सूरज के पूर्व में और चॉद के पश्चिम में[39]

यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के नौर्स देशों की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक जगह एक बहुत ही गरीब चरवाहा रहता था। उसके कई बच्चे थे जिनको वह न तो पेट भर खाना ही खिला पाता था और न ही उनको ठीक तरह से कपड़े ही पहना पाता था।

हालाँकि उसके सारे बच्चे बहुत प्यारे थे पर सबसे प्यारी उसकी सबसे छोटी बेटी थी। वह सबमें इतनी सुन्दर थी कि बस उसके बराबर का और कोई उतना सुन्दर नहीं था।

साल का पतझड़ का मौसम आ गया था तो एक दिन बृहस्पतिवार की शाम को मौसम बहुत ही खराब और तूफानी हो गया।

चारों तरफ अँधेरा छा गया हवा बहुत तेज़ चलने लगी और बारिश पड़ने लगी। उसके मकान की दीवारें तक हिलने लगीं। वे सब आग के चारों तरफ बैठ गये और कुछ कुछ करने लगे।

पर तभी अचानक किसी ने खिड़की के शीशे पर तीन बार दस्तक दी। पिता उठ कर बाहर यह देखने के लिये गया कि क्या

---

[39] East o' the Sun and the West o' the Moon – a folktale from Norse Countries, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/neu/ptn/ptn14.htm
Taken from "Popular Tales from the Norse". By George Webbe Dasent. 1904.

मामला था और जब वह दरवाजे के बाहर निकला तो उसने क्या देखा कि वहाँ तो एक बहुत बड़ा सफेद भालू खड़ा था।

सफेद भालू बोला — “गुड ईवनिंग[40] जनाब।”

आदमी बोला — “आपको भी।”

सफेद भालू बोला — “क्या आप अपनी सबसे छाटी बेटी मुझे देंगे? अगर आप मुझे उसे दे देंगे तो मैं आपको उतना ही अमीर बना दूँगा जितने कि आप अभी गरीब हैं।”

अब वह आदमी अमीर तो होना चाहता था पर फिर भी उसने सोचा कि इस बारे में पहले वह अपनी बेटी से बात कर ले। सो वह अन्दर गया और सबको बताया कि बाहर एक सफेद भालू खड़ा है जो यह वायदा करता है कि उनको बहुत अमीर बना देगा अगर वह उसको अपनी सबसे छोटी बेटी दे दे तो।

लड़की तुरन्त बोली “नहीं।” वह कुछ भी कहे पर वह उसके पास नहीं जायेगी। सो वह आदमी बाहर गया और उस सफेद भालू से कहा कि वह अगले बृहस्पतिवार को फिर आये तभी वह उसकी बात का जवाब देगा।

इस बीच उसने अपनी बेटी से बात की और उससे बार बार यही कहता रहा कि इसके बाद वे लोग भी बहुत अमीर हो जायेंगे और वह खुद भी बहुत अच्छे से रहेगी इसलिये उसको सफेद भालू की बात मान लेनी चाहिये। आखिर वह मान गयी।

---

[40] Normal greeting in English language in the evening time.

उसने अपने फटे कपड़ों को धोया और उनकी मरम्मत की। अपने आपको भी ठीक से सजाया सॅवारा और चलने के लिये तैयार हो गयी। उसके पास कुछ ज़्यादा सामान ही नहीं था सो उसको वहॉ से जाने में कोई खास मुश्किल नहीं पड़ी।

अगले बृहस्पतिवार की शाम को वह सफेद भालू उसको लेने के लिये आया। वह अपनी पोटली ले कर उसकी पीठ पर चढ़ गयी और भालू उसको ले कर वहॉ से चल दिया।

कुछ देर चलने के बाद सफेद भालू ने पूछा — "क्या तुम डर रही हो?"

"नहीं। मैं नहीं डर रही।"

भालू फिर बोला — "खैर तुम मेरा यह लम्बे बालों वाला कोट कस कर पकड़ लो और बस फिर तुमको डरने की कोई जरूरत नहीं है।"

उसके बाद वे बहुत दूर तक चलते रहे। आखिर वे एक पहाड़ी के पास आ गये। उस पहाड़ी की दीवार पर सफेद भालू ने एक दस्तक दी और एक दरवाजा खुल गया।

वे उस दरवाजे के अन्दर घुस गये तो वे एक किले में आ गये। उस किले में बहुत सारे कमरे थे जिनमें सबमें रोशनी हो रही थी। सब कमरे सोने चॉदी की तरह से चमक रहे थे।

एक कमरे में एक जितनी शानदार खाने की मेज हो सकती थी उतनी शानदार खाने की मेज तैयार लगी रखी थी।

सफेद भालू ने लड़की को एक चॉदी की घंटी दी और कहा कि जब भी उसको किसी चीज़ की जरूरत हो तो वह उसको बजा दे। वह चीज़ उसको तुरन्त ही मिल जायेगी।

उसने पेट भर खाना खाया। शाम के कपड़े पहिने। अपनी इस लम्बी यात्रा के बाद वह थक गयी थी सो उसको नींद आने लगी। उसको लगा कि वह सो जाये सो उसने घंटी बजायी।

उसने वह घंटी बस मुश्किल से पकड़ी ही होगी कि वह एक कमरे में आ गयी जहॉ एक सफेद बिस्तर लगा हुआ था। उस पर सफेद रेशमी तकिये रखे थे और कमरे में सुनहरी झालर वाले सफेद परदे लगे हुए थे। उस कमरे को देख कर उसका मन करने लगा कि वह वहॉ सो जाये।

उस कमरे में जो कुछ भी रखा हुआ था या तो वह सोने का था या फिर चॉदी का। पर जब वह बिस्तर पर लेट गयी और उसने रोशनी बुझा दी तो उसके कमरे में एक आदमी आया और उसके बराबर में आ कर लेट गया।

यह सफेद भालू था जो रात को अपना जंगली रूप निकाल देता था और दिन में फिर से भालू बन जाता था। पर उस लड़की ने उसे कभी नहीं देखा क्योंकि वह तभी वहॉ आता था जब वह लड़की अपनी रोशनी बुझा देती थी।

और इससे पहले कि दिन निकले वह वहॉ से चला जाता था।

इस तरह कुछ दिन तक सब कुछ ख़ुशी ख़ुशी चलता रहा पर कुछ समय बाद वह लड़की कुछ चुप चुप और दुखी सी रहने लगी क्योंकि वह वहाँ सारा दिन अकेली रहती। उसकी इच्छा करती कि वह अपने माता पिता और बहिन और भाइयों को देखे।

सो एक दिन जब सफेद भालू ने उससे पूछा कि क्या उसको वहाँ किसी चीज़ की कमी महसूस होती थी तो वह बोली कि वहाँ वह बहुत अकेला महसूस करती थी।

उसकी इच्छा थी कि वह अपने माता पिता और बहिन और भाइयों को देखे। इसी लिये वह अपने आपको बहुत अकेला और दुखी महसूस करती थी।

भालू बोला — "यह कोई बहुत बड़ी बात नहीं है। मैं तुमको उनसे मिलवा लाता हूँ। पर तुम मुझसे एक वायदा करो कि तुम अपनी माँ से कभी अकेले में बात नहीं करोगी। तुम उनसे केवल तभी बात करोगी जब और भी लोग वहाँ सुनने के लिये होंगे।

क्योंकि नहीं तो वह तुम्हारा हाथ पकड़ कर तुमसे बात करने के लिये तुमको एक अकेले कमरे में ले जायेगी। पर तुमको ख्याल रखना है कि वह ऐसा न करे नहीं तो हमारे और तुम्हारे दोनों के ऊपर कुछ न कुछ बुरा होगा।"

सो एक रविवार को सफेद भालू आया और लड़की से बोला कि वे उस दिन उसके माता पिता से मिलने जा सकते थे। सो वह

लड़की उसकी पीठ पर बैठ गयी और वे दोनों चल दिये। वे बहुत देर तक और बहुत दूर तक चलते रहे।

आखिर वे एक बहुत ही शानदार घर पर आये जहाँ घर के बाहर उसके भाई बहिन इधर उधर भाग रहे थे और खेल रहे थे। सब कुछ देखने में बहुत सुन्दर लग रहा था। लड़की वह सब देख कर बहुत खुश हो गयी।

भालू बोला — "अब तुम्हारे माता पिता यहाँ रहते हैं। पर जो मैंने तुमसे कहा है उसे भूलना नहीं नहीं तो तुम हम दोनों को बदकिस्मत बना दोगी।"

भगवान उसकी रक्षा करे वह नहीं भूलेगी। जब वह घर पहुँच गयी तो सफेद भालू पीछे मुड़ा और उसको वहीं छोड़ कर चला गया।

जब वह अपने माता पिता से मिली तो सब लोग उससे मिल कर बहुत खुश हुए। उस समय किसी के दिमाग में यह ही नहीं आया कि उसने उनको यह सुख देने के लिये कितना क्या कुछ किया है तो उसके लिये वे उसको धन्यवाद भी दे दें।

अब उनके पास वह सब कुछ था जो वह चाहते थे। और जितना अच्छा चाहते थे उतना अच्छा था। वे सब अब यह जानना चाहते थे कि वह जहाँ रहती थी वहाँ वह कैसे रहती थी।

लड़की ने कहा कि वह जहाँ भी रहती थी वहाँ वह बड़े आराम से रहती थी। वहाँ उसको वे सब चीज़ें मिली हुई थीं जिनकी उसको

जरूरत थी और इच्छा थी। इसके अलावा उसने उनसे क्या बात की यह तो पता नहीं पर वे उससे ज़्यादा और कुछ नहीं जान सके।

शाम को खाना खाने के बाद जैसा कि सफेद भालू ने उससे कहा था वैसा ही हुआ।

उसकी माँ उसको अपने सोने वाले कमरे में ले जा कर उससे अकेले में बात करना चाह रही थी। पर उसको सफेद भालू की बात याद थी सो वह उसके साथ उसके सोने वाले कमरे में ऊपर नहीं गयी।

उसने कहा "अब हमें और क्या बात करनी है माँ।" और यह कह कर उसको वहाँ से हटा दिया। पर किसी तरह से उसकी माँ ने उसको ऊपर जाने के लिये पटा ही लिया और उसको भी अपनी माँ को सारी कहानी बतानी ही पड़ी।

उसने माँ को बताया कि कैसे हर रात जब वह बिस्तर पर सोने के लिये चली जाती थी और रोशनी बुझा देती थी तो एक आदमी आता था और उसके पास आ कर लेट जाता था।

इस तरह से उसने कभी उसको देखा ही नहीं क्योंकि वह सुबह होने से पहले ही उठ जाता था और वहाँ से चला जाता था।

उसके जाने के बाद वह दुखी हो जाती थी क्योंकि वह यकीनन उसको देखना चाहती थी। बस फिर वह सारा दिन वहाँ अकेली ही रहती थी।

उसकी माँ बोली — "मेरी बच्ची तू जिसके साथ सो रही है वह एक ट्रौल[41] भी हो सकता है। पर अब मैं तुझे बताती हूँ कि उस पर नजर कैसे रखनी है।

मैं तुझे टैलो[42] का एक टुकड़ा दूँगी। उसे तू छिपा कर अपने घर ले जाना। वह जब सोया रहे तो उसे जलाना तब तू उसको देख पायेगी पर ध्यान रहे कि उसका गर्म टैलो उसके ऊपर न गिरे।

सो उसकी माँ ने उसको टैलो का एक टुकड़ा दिया और वह उसने छिपा कर रख लिया। जब रात हुई तो सफेद भालू वहाँ आया और उसको उसके घर से ले गया।

थोड़ी ही दूर पहुँचने के बाद सफेद भालू ने उससे पूछा कि क्या वह सब हुआ था जो उसने उससे कहा था। वह झूठ नहीं बोल सकी कि वैसा नहीं हुआ था। उसने कहा कि "हाँ हुआ था।"

सफेद भालू आगे बोला — "ध्यान रखना कि अगर तुमने अपनी माँ की सलाह सुनी है तो इसका मतलब है कि तुम हम दोनों पर बदकिस्मती ले कर आयी हो। और जो कुछ भी हम दोनों के बीच अब तक हुआ है वह सब बेकार हो गया।"

वह बोली कि उसने अपनी माँ की सलाह नहीं सुनी।

---

41 A troll is a supernatural being in Norse mythology and Scandinavian folklore. In origin, troll may have been a negative being in Norse mythology. Beings described as trolls dwell in isolated rocks, mountains, or caves, live together in small family units, and are rarely helpful to human beings.

42 Tallow is animal fat which does not perish for long time if it is stored airtight. It stays solid at room temperature. So maybe her mother gave her this to burn and warned her not to fell even a drop on the man.

जब वह घर पहुँची तो वह सोने चली गयी और फिर वही पुरानी कहानी शुरू हो गयी। उसके रोशनी बुझाने के बाद एक आदमी आया और उसके पास आ कर लेट गया।

जब काफी रात बीत गयी और उसको लगा कि वह आदमी सो गया है तो वह उठी और उसने वह टैलो जलाया।

टैलो की रोशनी उस आदमी के चेहरे पर पड़ी तो उसने देखा कि वह तो इतना सुन्दर राजकुमार था जितना उसने पहले कभी देखा नहीं था। उसको उससे तुरन्त ही प्यार हो गया।

उसको लगा कि वह उसको चूमे बिना नहीं रह सकेगी और उसने उसको चूम लिया। पर जैसे ही उसने उसको चूमा तो गर्म गर्म टैलो की तीन बूँदें उसकी कमीज पर गिर पड़ीं और उसकी ऑख खुल गयी।

जागते ही वह चिल्लाया — "यह तुमने क्या किया। तुमने हम दोनों को बदकिस्मत बना दिया। क्योंकि अगर हमने इसी तरह से एक साल पूरा कर लिया होता तो मैं इस शाप से छूट जाता।

मेरी एक सौतेली मॉ है जिसने मुझ पर जादू डाल रखा है जिसकी वजह से मैं दिन में भालू बना रहता हॅू और रात में आदमी बन जाता हॅू। पर अब हमारे बीच के सारे बन्धन खत्म हो गये। अब मुझे तुम्हारे पास से उसके पास चले जाना चाहिये।

वह एक किले में रहती है जो सूरज के पूर्व में है और चाँद के पश्चिम में है। वहाँ एक राजकुमारी भी है जिसकी नाक तीन ऐल[43] लम्बी है। अब मुझे उसी से शादी करनी पड़ेगी।"

यह सुन कर लड़की को बहुत बुरा लगा और वह रो पड़ी पर इसका और कोई इलाज नहीं था। सफेद भालू को तो जाना ही था। उसने उससे पूछा कि क्या वह उसके साथ जा सकती थी।

सफेद भालू बोला — "नहीं तुम मेरे साथ नहीं जा सकतीं।"

लड़की फिर बोली — "तब फिर तुम मुझे वह तरकीब बताओ जिससे मैं तुम्हें ढूँढ सकूँ। कम से कम यह तो मैं कर सकती हूँ।

भालू बोला — "हाँ यह तुम कर सकती हो पर उस जगह तक जाने का कोई रास्ता नहीं है। क्योंकि वह सूरज के पूर्व में और चाँद के पश्चिम में है और तुम वहाँ का रास्ता कभी नहीं खोज पाओगी।"

अगले दिन जब वह उठी तो राजकुमार और उसका महल दोनों गायब हो चुके थे। वह एक घने जंगल में घास पर लेटी हुई थी। उसके बराबर में उसकी वही फटे पुराने कपड़ों की पोटली रखी हुई थी जो वह अपने पुराने घर से अपने साथ ले कर आयी थी।

उसने जागने के लिये अपनी आँखें मलीं और फिर रो पड़ी। वह तब तक रोती रही जब तक वह रोते रोते थक नहीं गयी। फिर वह उठी और चल दी। वह बहुत दिनों तक चलती रही।

[43] Ell is a former measure of length used mainly for textiles, locally variable but typically about 45".

चलते चलते वह एक पहाड़ी के पास आ गयी। वहॉ एक बूढ़ी जादूगरनी[44] बैठी हुई थी और वह एक सोने के सेब को उछाल उछाल कर खेल रही थी।

उसने उससे पूछा कि क्या वह उस राजकुमार का पता जानती थी जो अपनी सौतेली मॉ के साथ एक ऐसे महल में रहता था जो सूरज के पूर्व में था और चॉद के पश्चिम में था। और जिसकी शादी एक ऐसी राजकुमारी से होने वाली थी जिसकी नाक तीन ऐल लम्बी थी।

बूढ़ी जादूगरनी ने पूछा — "लेकिन तुम उसको कैसे जानती हो? हॉ यह हो सकता है कि शायद तुम वही लड़की हो जिससे उसको शादी करनी हो।"

"हॉ मैं वही लड़की हूॅ।"

वह बूढ़ी जादूगरनी बोली — "अच्छा तो वह लड़की तुम हो। मैं उसके बारे में केवल इतना ही जानती हूॅ कि वह एक ऐसे महल में रहता है जो सूरज के पूर्व में है और चॉद के पश्चिम में है और ज़्यादा कुछ नहीं। पर वहॉ तक तुम शायद कभी नहीं पहुॅच पाओ।

पर फिर भी तुम मेरा यह घोड़ा उधार ले सकती हो। इस पर सवार हो कर तुम मेरी पड़ोसन के घर चली जाओ। जब तुम वहॉ पहुॅच जाओगी तब वह तुम्हें शायद उसके बारे में कुछ बता सके।

---

[44] Translated for the words "Old Hag". See the picture above.

जब तुम वहाँ पहुँच जाओ तो बस इसके बाँये कान के नीचे एक चाबुक मार देना और यह अपने आप ही वापस घर लौट आयेगा। और हाँ यह सोने का सेब लेती जाओ शायद यह तुम्हारे कभी काम आ जाये।"

लड़की ने उससे सोने का सेब लिया और घोड़े पर सवार हो कर चल दी। वह बहुत देर तक चलती रही कि वह एक दूसरी बूढ़ी जादूगरनी के पास आ पहुँची।

इस जादूगरनी के हाथ में एक सुनहरी कंघी[45] लगी हुई थी। उसने उससे भी यही पूछा कि क्या वह उस राजकुमार का पता जानती थी जो अपनी सौतेली माँ के साथ एक ऐसे महल में रहता था जो सूरज के पूर्व में था और चाँद के पश्चिम में था। और जिसकी शादी एक ऐसी राजकुमारी से होने वाली थी जिसकी नाक तीन ऐल लम्बी थी।

उस जादूगरनी ने भी पहली जादूगरनी की तरह ही जवाब दिया कि वह किसी ऐसे राजकुमार को नहीं जानती थी सिवाय इसके कि वह एक ऐसे महल में रहता था जो सूरज के पूर्व में था और चाँद के पश्चिम में था।

[45] Translated for the words "Carding comb". Combing, sometimes known as carding, is a sometimes-fatal form of torture in which iron combs designed to prepare wool and other fibres for woolen spinning are used to scrape, tear, and flay the victim's flesh.

तुम वहाँ पहुँचोगी। या तो देर से या फिर कभी नहीं। पर हाँ तुम मेरा घोड़ा उधार ले जाओ और मेरी पड़ोसन के पास चली जाओ शायद वह तुम्हें उसके बारे में कुछ बता दे।

जब तुम वहाँ पहुँच जाओ तो बस इसके बाँये कान के नीचे एक चाबुक मार देना और यह अपने आप ही वापस घर लौट आयेगा।"

यह कह कर उसने उसको अपना घोड़ा दिया और सुनहरी कंघी दी कि शायद वह उसके कुछ काम आ जाये। लड़की ने उससे कंघी ली और उसके घोड़े पर बैठ कर और आगे चल दी।

वह फिर काफी देर तक चलती रही। वह बहुत थक गयी थी। अब वह फिर से एक पहाड़ी के नीचे आ पहुँची थी। वहाँ एक तीसरी जादूगरनी बैठी हुई थी। उसके पास एक सोने का चरखा रखा हुआ था।

उसने उससे भी वही पूछा कि क्या वह उस राजकुमार का पता जानती थी जो अपनी सौतेली माँ के साथ एक ऐसे महल में रहता था जो सूरज के पूर्व में था और चाँद के पश्चिम में था। और जिसकी शादी एक ऐसी राजकुमारी से होने वाली थी जिसकी नाक तीन ऐल लम्बी थी।

वह जादूगरनी बोली — "ऐसा लगता है कि उसकी शादी तुमसे ही होनी है।"

"जी हाँ। मैं ही हूँ वह।"

पर इसको भी इससे पहले वाली दोनों जादूगरनियों से ज़्यादा कुछ नहीं मालूम था। वह भी केवल इतना ही जानती थी कि वह एक ऐसे महल में रहता था जो सूरज के पूर्व में था और चॉद के पश्चिम में था।

"और वहॉ तुम पहुॅचोगी। देर से या फिर कभी नहीं। पर हॉ मैं तुमको अपना घोड़ा उधार दे सकती हूॅ उस पर चढ़ कर तुम पूर्वी हवा के पास चली जाओ। शायद वह उस हिस्से को जानता हो और तुमको उड़ा कर वहॉ ले जाये।

पर जब तुम वहॉ पहुॅच जाओ तो बस इसके बॉये कान के नीचे एक चाबुक मार देना और यह अपने आप ही वापस घर लौट आयेगा।"

कह कर उसने भी उसको अपना सुनहरा चरखा दिया कि शायद वह उसके कभी काम आ जाये।

वह फिर उस घोड़े पर चढ़ कर बहुत दिनों तक चलती रही। पर पूर्वी हवा के घर तक आते आते वह बहुत थक गयी थी। उसके घर पहुॅचने पर उसने उससे भी वही पूछा।

क्या वह उस राजकुमार का पता जानता था जो अपनी सौतेली मॉ के साथ एक ऐसे महल में रहता था जो सूरज के पूर्व में था और चॉद के पश्चिम में था। और जिसकी शादी एक ऐसी राजकुमारी से होने वाली थी जिसकी नाक तीन ऐल लम्बी थी।

पूर्वी हवा बोला — "हॉ मैं उसे जानता तो हूॅ क्योंकि मैं उसके बारे में अक्सर बात करता रहता हूॅ पर मैं उसके महल का रास्ता नहीं जानता क्योंकि मैं उतनी दूर कभी गया नहीं।

पर अगर तुम मेरे साथ चलो तो मैं तुम्हें अपने भाई पश्चिमी हवा के पास ले चलता हूॅ। हो सकता है कि वह जानता हो। बस तुम मेरी पीठ पर बैठ जाओ और मैं तुम्हें उसके पास ले चलता हूॅ।"

सो वह लड़की उसकी पीठ पर बैठ गयी और वे दोनों बहुत जल्दी ही पश्चिमी हवा के घर पहुॅच गये।

वहॉ जा कर पूर्वी हवा ने उससे कहा कि वह एक ऐसी लड़की को ले कर आया है जिसको उस राजकुमार से मिलना ही है जो अपनी सौतेली मॉ के साथ एक ऐसे महल में रहता था जो सूरज के पूर्व में था और चॉद के पश्चिम में था। उसको बहुत ख़ुशी होगी अगर उसको वह उसको उस महल तक का रास्ता बता देगा।"

पर पश्चिमी हवा ने भी वही कहा — "मैं उसका रास्ता नहीं जानता क्योंकि मैं उतनी दूर तक कभी नहीं बहा पर हॉ मैं तुम्हारे साथ अपने दूसरे भाई दक्षिणी हवा के पास जा सकता हूॅ क्योंकि वह हम दोनों से कहीं ज़्यादा ताकतवर है। तुम मेरी पीठ पर बैठ जाओ और मैं तुमको वहॉ ले चलूॅगा।"

ऐसा कह कर उसने अपने पंख बहुत दूर तक फैला दिये। वह लड़की उसकी पीठ पर बैठ गयी और वह पश्चिमी हवा उसको ले कर उड़ चला।

जब वे दक्षिणी हवा के घर पहुँचे तो पश्चिमी हवा ने उससे पूछा कि क्या वह उस राजकुमार के महल का रास्ता जानता था जो सूरज के पूर्व में था और चाँद के पश्चिम में था क्योंकि उस लड़की को वहाँ पहुँचना ही है।"

दक्षिणी हवा बोला — "तुमको बताने की जरूरत नहीं है। यह वही है।

मैं अपने समय में बहुत जगह गया हूँ पर इतनी दूर मैं कभी नहीं गया। पर अगर तुम चाहो तो मैं तुमको अपने भाई उत्तरी हवा के पास ले चलता हूँ। वह हम सबमें सबसे बड़ा है और हम सबमें सबसे ज़्यादा ताकतवर भी है।

अगर उसको उस महल का रास्ता नहीं मालूम है तो फिर दुनियाँ में उस महल का रास्ता तुम्हें दुनियाँ में कोई नहीं बता सकता। तुम मेरी पीठ पर बैठ जाओ और मैं तुम्हें उसके घर ले चलता हूँ।"

सो वह लड़की उसकी पीठ पर बैठ गयी और वे दोनों बहुत जल्दी ही उसके घर पहुँच गये। जब वे उत्तरी हवा के घर पहुँचे तो वह तो बहुत तेज़ी से इधर उधर बह रहा था। उसकी ठंडक बहुत दूर से ही आ रही थी।

वह उनको देखते ही दूर से चिल्लाया — "चले जाओ यहाँ से। तुम लोग यहाँ क्यों आये हो।" इससे वे लोग उसकी बर्फीली ठंड से काँप गये।

दक्षिणी हवा बोला — "तुमको इतना बुरा बुरा नहीं बोलना चाहिये क्योंकि मैं तुम्हारा भाई दक्षिणी हवा यहाँ हूँ। और यह लड़की है जिसको वह राजकुमार चाहिये ही चाहिये जो एक ऐसे महल में रहता था जो सूरज के पूर्व में था और चाँद के पश्चिम में था।

अब बस यह तुमसे यह जानना चाहती है कि क्या तुम कभी उसके घर गये हो और क्या तुम उसके घर का रास्ता जानते हो। वह उसको पा कर बहुत खुश होगी।"

"ओह वह तो मुझे मालूम है कि वह कहाँ है। एक बार मैंने अपनी ज़िन्दगी में एक ऐस्पैन का पत्ता उधर उड़ाया था पर उसके बाद मैं इतना थक गया था कि उसको उड़ाने के बाद मैं फिर कई दिनों तक बह ही नहीं सका।

पर अगर तुम वाकई उधर जाना चाहते हो और मेरे साथ आने में डरते नहीं हो तो मेरी पीठ पर बैठ जाओ और मैं देखता हूँ कि मैं तुमको उधर तक ले जा सकता हूँ या नहीं।"

दक्षिणी हवा बोला — "अगर किसी तरह भी मुमकिन है तो इसको उधर जाना ही चाहिये और जहाँ तक डरने का सवाल है तुम कितनी भी तेज़ जाओ वह डरेगी नहीं।"

उत्तरी हवा बोला — "तब ठीक है। पर तुमको आज की रात यहाँ सोना पड़ेगा क्योंकि अगर हम वहाँ जायेंगे तो हमको वहाँ सारा दिन लग जायेगा।"

अगली सुबह सवेरे ही उत्तरी हवा ने लड़की को जगाया अपने अन्दर हवा भरी, अपने आपको ताकतवर बनाया कि वह भयानक सा लगने लगा। लड़की उसके ऊपर बैठ गयी और वे दोनों हवा में उड़ कर ऊपर उठ गये।

उनके उड़ने के ढंग से ऐसा लग रहा था जैसे कि वे जब तक अपनी जगह पहुँच नहीं जायेंगे रुकेंगे नहीं। उनके उड़ने से उनके नीचे बड़ा भारी तूफान आया हुआ था कि उससे बहुत सारी लकड़ियाँ और मकान टूट गये थे। जब वे समुद्र के ऊपर से उड़े तो सैंकड़ों जहाज़ समुद्र में डूब गये।

इस तरह से वे अपने नीचे की सब जगहों को बरबाद करते हुए चले जा रहे थे। किसी को यकीन ही नहीं था कि वे इतनी दूर जा रहे थे। बहुत देर तक तो वे समुद्र के ऊपर ही उड़ते रहे।

उत्तरी हवा को इतनी थकान होती जा रही थी कि वह अब मुश्किल से बेचारा मुँह से हवा फेंक पा रहा था और मुश्किल से ही अपने पंख चला पा रहा था।

आखिर वह नीचे गिरने लगा और समुद्र की ऊँची ऊँची लहरें उसके पैर छूने लगीं।

उत्तरी हवा ने लड़की से पूछा — "क्या तुम्हें डर लग रहा है?"

लड़की बोली — "नहीं मुझे बिल्कुल भी डर नहीं लग रहा।"

पर अब वे उस जगह से बहुत दूर नहीं थे जहाँ उनको जाना था और उत्तरी हवा में अभी इतनी ताकत तो थी ही कि वह उस लड़की

को समुद्र के किनारे बने हुए उस महल की खिड़की के नीचे फेंक सकता जो सूरज के पूर्व में था और चॉद के पश्चिम में था।

पर उसके बाद तो वह इतना थक गया था कि घर लौटने से पहले उसको वहॉ कई दिन तक आराम करना पड़ा।

अगले दिन वह लड़की उस महल की एक खिड़की के नीचे बैठ गयी और अपने सुनहरी सेब से खेलने लगी। सबसे पहला आदमी जो उसने देखा वह थी वह लम्बी नाक वाली राजकुमारी जिसकी राजकुमार से शादी होने वाली थी।

उस राजकुमारी ने खिड़की खोली और उससे पूछा — "ओ लड़की तुम क्या लोगी इस सेब का?"

लड़की बोली — "मैम यह बेचने के लिये नहीं है, न तो पैसों के लिये और न सोने के लिये।"

राजकुमारी बोली — "अगर यह पैसों या सोने के लिये बेचने के लिये नहीं है तो फिर तुम इसके लिये क्या लोगी? तुम इसके लिये अपनी कीमत तो बताओ।"

लड़की ने जवाब दिया — "अगर मैं उस राजकुमार के पास पहुॅच जाऊॅ जो यहॉ रहता है और उसके साथ सारी रात गुजार लूॅ तब आप इसको ऐसे ही ले सकती हैं।"

राजकुमारी ने सोचा कि यह तो मुमकिन है। सो उसने उससे वह सुनहरा सेब ले लिया और जब वह लड़की राजकुमार के सोने के कमरे तक आयी तब तक तो राजकुमार गहरी नींद सो चुका था।

उसने उसको हिलाया, जगाया, इस बीच वह रोती भी रही पर वह जो कुछ कर सकती थी करती रही पर वह उसको जगा नहीं सकी। इतने में सुबह हो गयी तो लम्बी नाक वाली राजकुमारी ने उसको राजकुमार के कमरे से बाहर निकाल दिया।

अगले दिन वह लड़की फिर से उसी खिड़की के नीचे बैठ गयी और अपनी सुनहरी कंघी से कंघी करती रही तो फिर वही हुआ जो पहले दिन हुआ था।

लम्बी नाक वाली राजकुमारी ने उसको उस सुनहरी कंघी से कंघी करते देखा तो उससे पूछा कि वह वह कंघी उसको कितने की देगी।

उसने भी उसको पहले वाला जवाब दिया — "यह कंघी बेचने के लिये नहीं है। न तो सोने के लिये ओर न पैसे के लिये।"

लम्बी नाक वाली राजकुमारी ने उससे फिर पूछा — "अगर यह पैसों या सोने के लिये बेचने के लिये नहीं है तो फिर तुम इसके लिये क्या लोगी? तुम इसके लिये अपनी कीमत तो बताओ।"

लड़की ने जवाब दिया — "अगर मैं उस राजकुमार के पास पहुँच जाऊँ जो यहाँ रहता है और उसके साथ सारी रात गुजार लूँ तब आप इसको ले सकती हैं।"

राजकुमारी ने सोचा कि यह तो मुमकिन है। सो उसने उससे वह सुनहरी कंघी ले ली और उसको रात को आने के लिये कहा। पर

जब तक वह लड़की राजकुमार के सोने के कमरे तक आयी तब तक तो राजकुमार पिछले दिन की तरह से गहरी नींद सो चुका था।

उसने उसको हिलाया, जगाया, इस बीच वह रोती भी रही पर वह जो कुछ कर सकती थी करती रही पर वह उसको जगा नहीं सकी। इतने में सुबह हो गयी। सुबह की पौ फटते ही लम्बी नाक वाली राजकुमारी ने उसको राजकुमार के कमरे से बाहर निकाल दिया।

अगले दिन वह लड़की फिर से उसी खिड़की के नीचे बैठ गयी और अपने सोने के चरखे से रुई कातने लगी। लम्बी नाक वाली राजकुमारी को वह सोने का चरखा बहुत पसन्द आया तो उसने उस लड़की से फिर वही पूछा — "ओ लड़की तुम क्या लोगी इस चरखे को बेचने का?"

लड़की बोली — "मैम यह बेचने के लिये नहीं है। न तो पैसों के लिये और न सोने के लिये।"

राजकुमारी बोली — "अगर यह पैसों या सोने के लिये बेचने के लिये नहीं है तो फिर तुम इसके लिये क्या लोगी? तुम इसके लिये अपनी कीमत तो बताओ।"

लड़की ने जवाब दिया — "अगर मैं उस राजकुमार के पास पहुँच जाऊँ जो यहाँ रहता है और उसके साथ सारी रात गुजार लूँ तब आप इसको ले सकती हैं।"

राजकुमारी ने सोचा कि यह तो मुमकिन है। सो उसने उससे वह सुनहरा चरखा ले लिया और उस लड़की को रात को आने के लिये कहा।

इस बीच कुछ ईसाई लोग जो वहाँ बन्दी थे इधर से उधर ले जाये जाते थे। उनको ले जा कर राजकुमार के कमरे के बराबर वाले कमरे में बिठा दिया जाता था।

सो जब वे वहाँ बैठे हुए थे उनको लगा कि कोई लड़की उनके बराबर वाले कमरे में थी। वह रो रही थी और भगवान से प्रार्थना कर रही थी। और यह वह दो दिन से कर रही थी। उन्होंने यह बात राजकुमार से कही।

पर राजकुमार ने उनसे कहा कि उसको तो कुछ सुनायी ही नहीं दिया। वह तो रात भर गहरी नींद सोता रहा।

सो उस शाम जब वह लम्बी नाक वाली राजकुमारी राजकुमार को सुलाने वाला पेय ले कर आयी और उसे राजकुमार को पीने के लिये दिया तो राजकुमार ने उसे पीने का बहाना तो किया पर पिया नहीं। वह पेय उसने अपने पीछे की तरफ फेंक दिया क्योंकि उसको लगा कि वह पेय उसको सुला देता था।

सो इस बार जब वह लड़की उसके कमरे में आयी तब वह जागा हुआ था। उस लड़की ने आ कर उसको अपनी सारी कहानी बतायी कि वह कैसे कैसे वहाँ तक पहुँची।

राजकुमार बोला — "ओह तो तुम तो बहुत ठीक समय से आ गयीं क्योंकि कल ही हमारी शादी होने वाली है। और क्योंकि अब तुम आ गयी हो इसलिये मुझे अब इस लम्बी नाक वाली राजकुमारी से शादी करने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

तुम्हीं एक ऐसी लड़की थीं जो मुझे इस शाप से आजाद करा सकती थीं। अब मैं यह कह सकता हूँ कि यही मेरी पत्नी होने के लायक है।

कल मैं उससे कहूँगा कि वह मेरी कमीज पर लगे टैलो के तीन धब्बे साफ कर दे। वह कहेगी कि "हॉ मैं करूँगी।" क्योंकि उसको पता ही नहीं कि वे धब्बे तुमने वहॉ डाले हैं। पर यह काम तो ईसाई लोगों के लिये है न कि ट्रौल लोगों के लिये।

इसलिये मैं कहूँगा कि मैं किसी और लड़की से शादी ही नहीं करूँगा सिवाय उस लड़की के जो मेरी कमीज के वे धब्बे साफ कर दे और फिर मैं तुमसे उन्हें साफ करने के लिये कहूँगा।"

उसके बाद दोनों ने वह रात खुशी खुशी बितायी। अगले दिन जब शादी होने वाली थी राजकुमार बोला — "पहले मैं यह देखना चाहूँगा कि मेरी दुलहिन मेरे लिये ठीक भी है या नहीं।"

उसकी सौतेली मॉ तुरन्त बोली — "हॉ यह तो ठीक है।"

तब राजकुमार बोला — "मेरे पास एक बहुत ही बढ़िया कमीज है जिसे मैं अपनी शादी पर पहनना चाहूँगा। पर किसी तरह से उस

पर टैलो के तीन धब्बे लग गये है।उसे पहनने से पहले उनको साफ करना जरूरी है।

मैंने यह कसम ले ली है कि मैं केवल उसी लड़की से शादी करूँगा जो उस कमीज से वे धब्बे साफ करेगी। अगर वह यह काम नहीं कर सकती तो वह मेरी दुलहिन बनने के लायक नहीं है।"

अब यह तो उसने कोई बड़ी बात नहीं कही थी सो वे सब इस बात पर राजी हो गये। लम्बी नाक वाली राजकुमारी वह कमीज ले गयी और उसके धब्बे साफ करने लगी।

जैसे जैसे वह उनको मल मल कर साफ करने लगी तो वे धब्बे तो बजाय साफ होने के और बड़े होते गये। यह देख कर उसकी माँ बूढ़ी जादूगरनी बोली — "अरे तुझसे यह नहीं होने का। तू इसे मुझे दे मैं करती हूँ।"

पर उसके हाथ में जाते ही वह कमीज तो और ज़्यादा खराब हो गयी। जितना वह उन धब्बों को मलती और उस कमीज को धो कर निचोड़ती तो वे तो और बड़े और काले होते जाते। इससे वह कमीज और भद्दी हो गयी।

इसके बाद वहाँ मौजूद सब ट्रौल ने उसको साफ करने की कोशिश की पर जितनी उसको साफ करने में देर होती गयी वह कमीज और काली और भद्दी होती गयी। उसके बाद तो वह चिमनी जैसी हो गयी।

यह देख कर राजकुमार बोला — "तुम लोग तो किसी काम के नहीं। तुम लोग सब एक कमीज नहीं धो सकते। जबकि इस महल के बाहर एक भिखारिन बैठती है मैं शर्त लगाता हूँ कि वह मेरी यह कमीज जरूर ही तुम लोगों से ज़्यादा साफ कर देगी।"

वह चिल्लाया — "ओ लड़की अन्दर आओ।"

वह लड़की अन्दर आयी तो राजकुमार ने उसको वह कमीज दिखा कर पूछा — "ओ लड़की क्या तुम यह कमीज साफ कर सकती हो?"

"पता नहीं। पर शायद मैं कर सकती हूँ।"

और जैसे ही उसने राजकुमार के हाथों से उसकी कमीज ले कर पानी में डुबोई तो वह तो बर्फ की तरह से सफेद हो गयी।

"हाँ तुम्हीं मेरे लिये ठीक दुलहिन हो।"

यह देख कर वह बूढ़ी जादूगरनी गुस्से में भर कर उठी और वहाँ से पैर पटकती हुई चली गयी। उसके पीछे पीछे उसकी बेटी लम्बी नाक वाली राजकुमारी और दूसरे ट्रौल भी सब वहाँ से चले गये।

कम से कम हमने फिर कभी उनके बारे में नहीं सुना।

राजकुमार और उस लड़की ने उन सब ईसाई लोगों को आजाद कर दिया जो उस राजकुमार के सोने वाले कमरे के बराबर वाले कमरे में बन्द कर दिये गये थे।

वे जब वहॉ से गये तो अपने साथ सोना और चॉदी भी लेते गये और फिर उस महल से जो सूरज के पूर्व में और चॉद के पश्चिम में था बहुत दूर चले गये।

List of Stories in “Curses in Folktales-1”

1. Pome and Peel
2. The Queen of The Three Golden Mountains
3. The Thieving Dove
4. The Little Shepherd
5. The Apple Girl
6. The Man Who Came Out Only at Night
7. The Prince Who Married a Frog
8. The three Dogs
9. Serpent King
10. Pippina the Serpent
11. The Mouse With the Long Tail
12. The Crab Prince

List of Stories in “Curses in Folktales-2”

1. Beauty and the Beast
2. The White Cat
3. Raven
4. The Frog Prince-1
5. The Frog Prince-2
6. Baker's Idle Son
7. The Three Golden Oranges
8. The Mouse Princess
9. The Enchanted Pig
10. East o' the Sun and the West o' the Moon

List of Stories in “Curses in Folktales-3”

1. The Calabash Child
2. The Guardian of the Pool
3. The Seven Headed Snake
4. The Hare and the Spirit
5. The Snake Chief
6. The Frog Princess
7. Fenist the Falcon
8. The Most Beautiful Princess

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।
पूरे सूचीपत्र के लिये इस पते पर लिखें ः hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" कम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022